थैला भर शंकर

थला बर शंकर

शंकर

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

दो शब्द

इतने दिनों से केवल बडो के लिए ही कलम घिसता आया हूँ—छोटे बडे सबके लिए एक ही साथ लिखने का दुस्साहस नही हुआ। जिनके जाल म पडकर मेरा यह अध पतन या पदोत्कर्ष हुआ, उनका नाम है श्री नीरेन्द्रनाथ चक्रवर्ती। बँगला साहित्य मे इस प्राणवान कवि और प्रख्यात मासिक पत्र आनन्द मेला' के सम्पादक के प्रति आभार मैं पहले ही मे स्वीकार किये लेता हूँ।

१ वशाख, १३८४ ब०

शकर

थैले में–

बदमाशो के जाल मे

पिकलू की दादीमा की इस सुवह-सवेरे ही दादा भवनाथ सेन से लडाई हो गयी । कारण, जाहिर है, पिकलू ही है ।

कुछ देर पहले भी दादीमाँ एक बार पिकलू के दादा के पास गयी थीं। भवनाथ तव एकाग्र होकर अखबार पढ रहे थे । पत्नी को देखकर घरवार की कोई जरूरी बात किये विना वे वोले, "चौकानेवाली चोरी ! रायटर ने समाचार दिया है कि इण्टर-नेशनल रिसच इस्टीट्यूट से जुकाम के वाइरस चोरी हो गये हैं ।"

पिकलू की दादीमा को जोरो का गुस्सा चढ आया। भवनाथ ने चोरी का समाचार इस तरह शुरु किया था, कि वे समझी थी विदेश के किसी राजमहल से वडे मूल्यवान हीरे-जवाहरात वगैरह गायव हो गये है ।

अपनी चिढ जताते हुए मुँह विचकाकर पिकलू की दादीमा वोली, "अखवारवालो को कोई और खवर नही मिली छापने के लिए ?"

तव तक भवनाथ वडी गम्भीर दिलचस्पी के साथ पूरी खवर पढने लगे, "सुनो, सुनो—वडी सनसनीखेज वात है। अन्तर्राष्ट्रीय जुकाम इस्टीट्यूट के डायरेक्टर ने आज स्वीकार किया कि वे लोग जुकाम के वाइरस के एक पात्र का हिसाव नही मिला पा रहे हैं । उन्होने दुख प्रकट करते हुए कहा है, अनुसधान केन्द्र के लम्बे इतिहास मे पहली वार ऐसा हुआ है कि जुकाम का हिसाव नही मिल रहा है ।"

घिन के मारे पिकलू की दादीमा को उवकाई आने लगी ।

उन्हें इन गन्दे विषयो पर बात करना पसन्द नही है। भवनाथ को उसी समाचार मे डूबा देखकर गुस्से के मारे वे रसोईघर मे चली आयी।

अँगीठी मे आँच अब तेज हो आयी थी। पिकलू का नाश्ता तैयार करने के लिए दादीमा ने कडाही उस पर चढा दी।

तला हुआ चिवडा और चाय लेकर पिकलू के कमरे मे घुसते ही दादी ने देखा, उनका लाडला पोता मद्रास से भेजे गये पिक्चर पोस्टकाड को एकचित्त होकर देखे जा रहा है।

शतरूपा ने भेजी थी वह तस्वीर। एक तरफ बगाल की खाडी का रगीन चित्र और दूसरी तरफ शतरूपा की अपनी लिखावट, "भैया, हम लोग आज वेलोर जा रहे है। वहा से तुझे और पत्र लिखूगी।"

दादी को पता है, कल भी पिकलू ने यह पत्र सात-आठ बार पढा है। आज भी यही देखकर उन्होंने लाड से पिकलू के सिर पर हाथ फेरकर कहा, "राजा बेटे मेरे, बिल्कुल चिन्ता मत करो—सब ठीक हो जायेगा।"

शतरूपा की कोई बडी बीमारी हो गयी है—इसीलिए पिकलू के मा पिताजी उसे लेकर वेलोर गये है। दादीमाँ ने तसल्ली दी, "वहा बडा भारी अस्पताल है, बडे बडे डॉक्टर है—शतरूपा चटपट अच्छी होकर घर लौट आयेगी।"

इसके बाद ही दादीमाँ को दादा के ऊपर गुस्सा आ गया। चाल की स्पीड दुगुनी करके झुझलाती हुई वे बैठकखाने मे आ हाजिर हुई। दादा भवनाथ सेन उस समय बाये हाथ मे हुक्के की लाल रबर की निगाली थामे, दाहिने हाथ से एक पत्र का लिफाफा खोलने की चेष्टा कर रहे थे। साहित्यकार भवनाथ के भक्त किसी पाठक ने लिखा था वह पत्र "आपके लेखन की मिसाल नही। आप हमारे देश के गौरव है।"

"तुम क्या निकम्मे ही बने रहोगे ? घर के किसी काम नही आओगे ?" दादीमाँ उफन उठी। दादीमाँ को गुस्सा आसानी से नही आता, पर मिजाज अगर एक बार गरम हो गया तो फिर उनका दिमाग ठिकाने नही रहता।

दादा ने तब तक हुक्के का एक और कश लगाकर चिट्ठियो के ढेर से एक पोस्टकार्ड खीच निकाला। बनारस से एक पाठिका ने लिखा है "आपकी रचनाएँ पढते पढते दीन दुनिया की सुध भुलाकर न जाने कहा खो जाती हूँ।"

पत्र दादीमाँ की ओर बढाकर भवनाथ ने कहा, "देखो, क्या लिखा है।"

"दीन-दुनिया की सुध भुलाने से मेरा काम तो नही चलेगा", झमककर बोली दादीमाँ। "मेरी घर-गिरस्ती है—पिकलू की चिन्ता है।"

"पिकलू तो बहुत ही अच्छा लडका है—मुझे तो उसके बारे मे कोई चिन्ता नही होती।" बडे शान्त भाव से भवनाथ फिर से निगाली मुह मे लगाकर हुक्का गुडगुडाने लगे।

दादीमा कुछ देर तक भवनाथ की तरफ देखती रही। पर उधर से कोई हलचल न पाकर आवाज को टॉप वॉल्यूम पर चढाकर उन्होने पूछा, "मैं कहूँ, तुम क्या इसी कलकत्ता शहर मे हो ? या बोलिविया वहामा चल दिये हो ?"

अपने कमरे से दादी की ये बाते सुनकर पिकलू फस्स से हँस पडा। दादा के पिछले किशोर-उपन्यास की पटभूमि बोलिविया थी। जोरदार था उपन्यास।

वह उपन्यास पढा था, इसी से तो क्विज कण्टेस्ट मे पिकलू ने क्लास मे सबको हरा दिया था। मास्टर जी ने अचानक पूछा, "बोलिविया कहाँ है ?" क्लास के लडके कुछ भी नही बता सके। एक लडके ने तुक्का लगाया, "मध्यप्रदेश मे—बैलाडीला के

पास।" "नो-नो—बिल्कुल गलत।" मास्टर जी ने गम्भीर होकर जानना चाहा, "और कोई ? एनीवन एल्स ?" पिकलू ने तत्काल खडे होकर बता दिया, "दक्षिण अमरीका मे।"

"बोलिविया की राजधानी ?" मास्टर जी ने सोचा कि अब पिकलू हार जायेगा।

पर उसने साथ साथ उत्तर दे डाला, "ला पाज।" ये बाते पिकलू ने दादा की किताब से ही जान ली थी।

पिकलू समझता था, दादा खुद दक्षिण अमरीका की उन जगहो पर गये है—बहुत दिन रहे है। नही तो ला पाज शहर का ऐसा वर्णन कैसे किया ?

पर कलक्त्ता आकर दादीमा से पूछने पर उन्होने बात को एक फूक मे उडा दिया। "बोलिविया ! मैया री ! यह कहा है ? पिछली बार तो किताब लिखने के पहले कुछ दिन बाली जाकर रहे थे, हरिमय देवरजी के साथ।"

"बाली ! बालीद्वीप ! वह भी तो बहुत दूर है। बहुत सुन्दर जगह है।" वहा के कुछ रगीन चित्र पिकलू ने देखे है। वहा की लडकिया कितने सुन्दर फल लगाती है बालो मे !

दादी ने कहा, "अरे हट ! बालो मे तो कोई लडकी बालो मे फूल नही लगाती। मेरा पीहर भी तो बाली मे ही है—बाली उत्तरपाडा मे। यहाँ से कुछेक मील दूर है। तुझे ले जाऊँगी किसी दिन।"

बालिविया की बात सुनकर दादा ने सिर उठाकर देखा। पिकलू की दादीमा से पूछा, "कुछ कह रही थी ?"

"कह ही तो रही हूँ। कहने के लिए ही तो आयी हूँ। पर तुम्हारे कानो मे कोई बात ही नही घुसती।" दादीमा जमकर झगडने पर ही तुल गयी थी।

पर साहित्यकार दादा इसी बीच किसी और गम्भीर विचार

मे लीन हो गये थे। उन्होंने आँखे बन्द कर ली थी, बीच-बीच मे सिर्फ हुक्के की दबी दबी आवाज आ रही थी, गुड ुक-गुड ुक।

अब दादीमाँ का गुस्सा बढ चला। वे बोली, "ठीक है, तुम्हे जब कुछ भी नही करना है, तो मैं लालबाजार ही कहला भेजती हूँ।"

इसी नाटकीय क्षण मे एक सज्जन घर के अन्दर घुस आये।

बाहर का दरवाजा बन्द नही था। ये सज्जन कहते जा रहे थे, "घर का दरवाजा कभी भी खुला न छोडा करे। क्या पता—कब कौन सी मुसीबत आ पडे! बदमाशो की तो भरमार हो रही है देश मे।"

ठीक इसी समय दादीमाँ के मुह से 'लालबाजार' की बात सुनकर वे घबरा उठे।

"एँ! सुबह-सवेरे लालबाजार की बात क्यो? जो डर था, वही है भाभीजी "

साफ समझ मे आ रहा था कि ये सज्जन इस घर के शुभ-चिन्तक है, और सबको बहुत चाहते है।

पिकलू ने देखा, सज्जन ने जामुनी रग की खादी का आधी बाह का कुर्ता पहन रखा है। बुढाया हुआ दुबला चेहरा। लगता है दादी की उमर के ही होगे। सिर बिल्कुल गजा—बस एक-डेढ इच लम्बी घने काले बालो की पट्टी जरूर थी। लगता था, गजी खोपडी के नीचे की तरफ मोटा-सा काला रिबन लपेट रखा है।

दादा ने हँसकर उस सज्जन को तसल्ली दी, "चोरी-डकैती की बात नही है। ये एक बार समधीजी से बात करना चाहती हैं।"

यह सुनकर सज्जन और भी चिन्तित हो उठे, "गजब हो गया! किया क्या था उन्होने? लालबाजार की पुलिस-हवालात

तो वडी खराब जगह है। अंग्रेजो के जमाने मे मैं उस हाजत मे एक रात विता आया हूँ।"

सज्जन की वाते सुनकर दादा को वडा मजा आ रहा था। हुक्का गुडगुडाना वन्द करके उन्होने कहा, "हवालात नही। मुन्ने के ससुरजी का अव वही ट्रासफर हो गया है। लालवाजार मे वडे वडे क्वार्टर भी हैं। मेरी गृहिणी तो कुछ दिन वहा रह भी आयी है।"

दादा के गजे दोस्त ने अव गजी खोपडी सहलायी। वोले, "भाभीजी! तव आप ही वह राइट पर्सन हैं जिसे मैं खोज रहा था।"

"क्या सेवा करूँ, कहिए?" दादीमाँ ने लडाई बन्द करते हुए पूछा।

आवाज कुछ नीची करके गजे सज्जन ने पूछा, "एक क्वेश्चन का आन्सर जानने की वहुत इच्छा है। अपने समधीजी से पूछ सकेंगी? विना लाइसेस के किस साइज तक का रामपुरिया साथ रखा जा सकता है?"

"कैसी पुडिया?" दादी ठीक से समझ नही सकी, "मुन्ने के ससुर तो डी० सी० हैं, डॉक्टर नही—पुडिया-वुडिया उन्हे कहा मिलेगी?"

गजे सज्जन अब वच्चो की तरह हँस पडे, "इतने वडे राइटर की पत्नी है आप! थर्टी एट इयर्स से वगला किताबो की लाइन मे हैं—और इतनी मामूली सी बात का आपको पता नही! साप्ताहिक 'सिहरन' पत्रिका के पिछले अक मे भाईसाहब की जो कहानी छपी है, उसी मे रामपुरिया का रेफरेस है। क्या खूब लिखा है 'रामपुरिया न राम है, न पुरिया—सिर्फ एक तरह का छुरा है, स्प्रिग दबाते ही करैत साप की तरह लपककर डस लेता है।' हालाकि वैसे देखने पर छुरा लगता ही नही।"

यह कहानी पिकलू नही पढ पाया है। पर माँ ने पढी थी और पिकलू ने सुना था कि इस रामपुरिया की बदौलत ही नायक शशधर बाबू भयकर डाकू भोजराज के हाथ से बच निकले थे।

तब से ही शायद ये सज्जन सोच रहे हैं कि राह-घाट मे अपनी सुरक्षा के लिए एक रामपुरिया साथ रखेगे।

"साथ रखने को कोई और चीज पसन्द नही कर सके!" दादा ने डाट बतायी। पिकलू को पता है, दादा को छुरा-छुरी, रिवॉल्वर वगैरह कुछ साथ रखना पसन्द नही है।

सज्जन अब बोले, "बोलकर आपकी तो छुट्टी हो गयी, पर अखबार मे श्रीभृगु हर हफ्ते मेरे साप्ताहिक भविष्य मे लिखते हैं, सावधान, शत्रु निकट ही है। किसी भी प्रकार की क्षति हो सकती है।"

दादा कहने जा रहे थे, 'इस राशिफल वगैरह मे तुम विश्वास करते हो!' तभी उन्हे रोककर दादीमा बोली, "आप चिन्ता मत कीजिए। रामपुरिया के नाप के बारे मे जानकारी मैं आपको दे दूगी।"

दादीमा ने अब बाहरी आदमी के आगे दादा की पोल खोली, "जो हालत है, मुझे और पिकलू को यह घर छोडकर लालबाजार जाकर ही रहना होगा। इनका तो किसी ओर भी ध्यान ही नही है—दिन रात सिर्फ प्लॉट ही-प्लॉट। कहानी के प्लॉट ढूढना छोडकर आपके भाईसाहब को और कुछ अच्छा ही नही लगता।"

गजे सज्जन अब धमसकट मे पड गये। किस पक्ष को सपोर्ट करें, कुछ समझ नही पा रहे थे।

बाहरी आदमी के सामने अपमानित दादा कुछ बिगडकर बोले, "जब लेखक की पत्नी बनी हो तो प्लॉट, चरित्र, सवाद

सब सहन करने ही होंगे।"

"लेखक होने का पता होता तो व्याह ही नही करती," दादीमाँ ने तुर्की व तुर्की जवाव दिया, "शादी के पहले तो तुम केवल कविताएँ लिखते थे। छोटी छोटी चीजें होती थी, कोई झमेला नही था। फिर वच्चो की इस लाइन मे आकर न जाने क्या कुवुद्धि आयी तुम्हे। कभी भी कोई वात करने का मौका नही मिलता—हर समय प्लॉट मे ही डूबे रहते हो।"

गजे सज्जन ने अव दादा की वकालत करने की कोशिश की। वोले, "भाईसाहव के प्लॉट भी तो स्पेशल होते हैं। थोडी ज्यादा मेहनत करनी ही पडती है—शिशुसाहित्यसम्राट् की उपाधि क्या उन्हे यो ही मिल गयी है!"

"अव रहने भी दीजिए!" कहकर दादीमा पिकलू के कमरे मे चली आयी।

"भाभीजी का मिजाज आज इतना गरम क्यो है?" सज्जन अभी भी समझ नहीं पाये थे।

भवनाथ सेन हुक्के का हल्का सा कश लेकर वोले, "तुम्हारी भाभी का दोष नही है। कोई हफ्ते भर से पिकलू आया हुआ है, पर अभी तक उसे कलकत्ता शहर का कुछ भी नहीं दिखाया गया।"

"भूलू का वेटा! वम्वई से आया है?" गजे सज्जन वेहद खुश हो उठे। दादा से वात करना वन्द करके वे सटाक् से अन्दर के कमरे मे चले आये।

दादीमाँ ने पिकलू से परिचय कराया, "तुम्हारे दद्दू के दोस्त हैं—हरिमय चौधरी।"

हुँकारी भरते हुए हरिमय वावू वोले, "तुम लोगो के साथ दूर की रिश्तेदारी भी है। पर उसका मैं जिक्र इसलिए नही करता कि दुर्जन लोग कहेगे, साहित्यकार भवनाथ सेन सिर्फ भाई-

भतीजावाद चलाते है।"

दादीमाँ ने कहा, "आप तो समझ ही गये होगे, भूलू का वेटा—पिकलू।"

"एकदऽऽम समझ गया—व-हो-त छुटपन मे जव आये थे तव रिक्शा पर चढकर हम खू-अ व घूमे थे।"

पिकलू को याद नही है कि तव रिक्शा की खूव सैर की थी। दादीमाँ ने कहा, "रिक्शा पर चढने के आगे तुझे कुछ भी अच्छा नही लगता था। तेरे रोने धोने पर ये दद्दू ही सँभालते थे।"

दादीमाँ अव मेहमान के लिए चाय का पानी चढाने चली गयी। हरिमय वावू वडे खुश-खुश एक बेत का स्टूल खीचकर पिकलू के पास आ वैठे। पूछा, "तुम्हारा अच्छावाला नाम जाने क्या तो था?"

"पुण्यश्लोक सेन।"

पिकलू का उत्तर सुनते ही हरिमय वावू गजी खोपडी सहलाते हुए सोचने लगे। "हा हा। याद तो आ रहा है—तुम्हारे दादा न वडे शौक से रखा था यह नाम। मुझसे कसल्ट भी किया था और सच बात कहूँ, मैंने ज़ोरो से आपत्ति की थी। पर तुम्हारे दादा के दिमाग मे कोई वात घुस जाये तो करके ही छोडते हैं।"

इतना सुन्दर नाम है, वम्वई मे कई मराठी सज्जनो ने इस नाम की प्रशसा की थी। पर हरिमय बावू को आपत्ति क्यो है? पिकलू की समझ मे नही आया।

हरिमय वावू ने कहा, "मेरी आपत्ति का कारण टेक्निकल है। पौत्रनाम दादाक्रम। जिसके दादा इतने वडे लेखक हैं, वह भी जरूर लेखक वनेगा!"

पिकलू चुप ही है। हरिमय वावू गम्भीर भाव से वोले, "हाथ कगन को आरसी क्या। चार्ल्स डिकेंस इतने वडे नावलिस्ट थे—उनकी पोती मोनिका डिकेंस भी प्रसिद्ध लेखिका हुई हैं। उपेन्द्र

किशोर राय, उनके पोते सत्यजित राय—दोनो एक से एक बढ़-कर। अब भवनाथ सेन के पोते के भी एंट्री पर्सेण्ट चास है लेखक बनने के। पर इस 'पुण्यश्लोक' नाम का उच्चारण करने मे तो नन्हे नन्हे बच्चे-बच्चियो के दात हिल जायेंगे।"

हरिमय बाबू की बात सुनकर पिकलू को हसी आ गयी। लेखक बनने की कोई इच्छा नही है पिकलू की। वह वैज्ञानिक बनना चाहता है, अन्तरिक्ष वैज्ञानिक। छोटी बहन शतरूपा मे उसने कह रखा है, फ्री पास पर वह बहन को एक बार सारे अन्तरिक्ष की सैर करा लायेगा।

हरिमय बाबू बोले, "मुझे तुम शायद ठीक से पहचान नही पा रहे हो। मैं 'चमचम' पत्रिका का मैनेजिंग एडीटर हूँ।'

पिकलू 'चमचम' का नियमित पाठक है। पहले पृष्ठ की हेडिंग से लेकर अन्तिम लाइन तक वह पढ डालता है, पर उमे तो याद नही कि उसमे हरिमय बाबू का नाम एक बार भी दिखायी दिया हो।

'विश्वास नही हो रहा है शायद ?" जब हरिमय बाबू ने अपनी गजी चाद पर हाथ रखा। पूछा, "इसे क्या कहते हैं ?"

ठी ठी करके हँस पडा पिकलू। कहा, "यह कौन नही जानता ? चाद।" हरिमय बाबू ने गम्भीरता से कहा, "चाद का एक सीरियस सस्कृत नाम है।"

अब पिकलू को याद आया 'चमचम' मे सम्पादक का नाम छपता है इन्द्रलुप्त चौधरी। तो इन्द्रलुप्त का मतलब है गजी चाद।

दबे स्वर मे हरिमय बाबू ने जानना चाहा "कैसा है तखल्लुस ? तुम्हारे दादा ने तो पहली बार सुनते ही मुझे काग्रे-चुलेट किया था। बस मेरे भतीजे को तसल्ली नही हुई। इलु चौधरी के नाम का कोई पत्र देखते ही वह भडक उठता था।"

हरिमय बाबू ने अब मस्त होकर पिकलू के साथ 'चमचम' पत्रिका की चर्चा शुरू कर दी। हरिमय बाबू का यही स्वभाव है—छोट बच्चो को देखते ही उनके साथ एकदम घुलमिल जाते है और अपनी प्राणो से प्यारी 'चमचम' पत्रिका के बारे मे उनकी राय जानना चाहते है।

हरिमय बाबू ने पूछा, "'चमचम' नाम तुम्हे मीठा नही लगता ?"

"मीठा भी ऐसा-वैसा !" पिकलू ने जवाब दिया।

"पर मेरे नौकर, और सहसम्पादक विजय की धारणा है कि यह नाम बिल्कुल भी अच्छा नही है।" दुखी होकर बोले हरिमय बाबू। बोले, "पत्र का नाम बहोऽऽत मुश्किल से रक्खा है। जो भी नाम जँचता, देखता उसी नाम से कोई पत्रिका पहले से ही चल रही है। नही तो मेरी फस्ट प्रेफरेंस थी 'सन्देश'। खाने मे भी बढिया, पढने मे भी। पर उस नाम का पत्र तो है। तब सोचा, नेक्स्ट टू सन्देश इज 'चमचम'। किसी पत्रिका का नाम 'बुंदिया' या 'मिट्टीदाना' तो रक्खा नही जा सकता। मेरे दोस्त की इच्छा थी 'जलेबी' नाम रखने की। मेरा जनम बनारस मे हुआ था। रबडी और जलेबी पर मेरा मोह तो रहेगा ही। पर जलेबी के चक्करो मे मैं बच्चो को घुसाना नही चाहता था। और फिर जलेबी गरम ही अच्छी लगती है। चमचम गरम भी खाने मे बढिया लगती है, और बासी होने पर भी ग्रेट ! 'चमचम' के पुराने अक भी कोई पढकर देखेगा तो उसे लगेगा आधा घण्टा पहले ही छपी है।"

हरिमय बाबू की बातो से ही लग रहा था कि उन्हे खाने-पीने का शौक है। उन्होने पिकलू से कहा, "बहोऽऽत अच्छा हुआ कि तुमसे मुलाकात हो गयी। अपनी दो एक योजनाओ के बारे मे तुमसे गुप्त परामर्श किये लेता हूँ।"

इसी बीच चाय का कप लिये दादीमाँ कमरे मे आ गयी थी। हँसकर उन्होने पूछा, "इत्ते-से बच्चे के साथ भला कैसा गुप्त परामश ?"

हरिमय बाबू ने गोल गोल आखे फाडकर जवाब दिया, "हमारी 'चमचम' पत्रिका की नीति ही है, बच्चो की सलाह के अनुसार चलना। देखती नही हैं, हर अक के पहले पृष्ठ पर बडे-बडे अक्षरो मे लिखा रहता है—बडे अगर तुम होना चाहो तो छोटे हो पहले।"

दादी फिर मुह दबाकर हँस दी। बोली, "आपकी उमर नही चढी—बच्चो के अखबार का सम्पादन करने मे आप खुद भी बच्चे ही रह गये।"

चाय की चुस्की लेकर हरिमय बाबू ने पिकलू को सावधान कर दिया, "ध्यान रहे, तुमसे जो बाते होगी, सब टॉप सीक्रेट है।"

पिकलू के जवाब की राह देखे बिना ही हरिमय बाबू ने पूछा, "टॉप सीक्रेट का मतलब समझते हो ना ? जिसे कहते हैं ना, बहोऽऽत ही गोपनीय, किसी को भी नही बतायी जाये। मिलिट्री पुलिस, सरकार सबके पास काले काले सन्दूका मे ये सब टॉप सीक्रेट कागज पत्तर रहते हैं—ऐसी बातें होती ह, जो सिफ आखो के लिए हो, मुँह के लिए नही। वे खबरें देखने को मिले तो आखे चमचम हो जाये।"

पिकलू अगले साल एन० सी० सी० मे दाखिल होगा। मिलिट्री से उसे डर नही लगता। वह बोला "आप कहिए, कोई नही जान पायेगा।"

हरिमय बाबू बोले, "मेरे सहसम्पादक विजय तक को बात मालूम नही है। उस पर मुझे ठीक भरोसा नही हो रहा है—कभी कभी सन्देह होता है कि हमारी सारी गुप्त बात मासिक

'शिशुबन्धु' पत्रिका तक पहुँच जाती है ।"

इसके बाद पिकलू और हरिमय बाबू की गुप्त बाते शुरू हुई। पाठको का मन जीतने के लिए 'चमचम' के सम्पादक के दिमाग मे एक नयी योजना आयी है। हरिमय बाबू को इस विषय मे कोई सन्देह नही है कि खाने की चीजें ही मनुष्य को सबसे ज्यादा आकर्षित करती है। इसलिए वे कटलेट अक निकालेगे।

"तुम्हे क्या लगता है ? घोषणा करते ही धूम नही मच जायेगी ?"

पिकलू ठीक समझ नही पा रहा था। "'चमचम' पत्रिका का कटलेट अक ?" उसने कुछ सन्देह से कहा।

पर हरिमय बाबू ने गम्भीरता से पूछा, "हर्ज क्या है ? क्या कोई मिठाई के साथ नमकीन नही खाता ?"

इसी समय दादीमा फिर कमरे मे आयी। हरिमय बाबू फिर चाद सहलाने लगे। दादी ने पूछा, "पोता कैसा लगा ?"

"जिसे कहते है, टॉप क्लास," तुरन्त फैसला दिया हरिमय बाबू ने। "बिल्कुल गरमागरम कविराजी चिकन कटलेट जैसा—कुरकुरा होते हुए भी मीठा।"

दादी ने भी लाडले पोते की तारीफ की, "सच्ची, अच्छा लडका है। बम्बई मे क्विजमास्टर बना है। सामान्य ज्ञान मे कोई इसका मुकाबला नही कर सकता।"

सुनकर हरिमय बाबू और भी उत्साहित हो उठे, "अयँ ! पहले कहना चाहिए था ना। इतनी बडी खबर मुझसे दबा गयी। मेरा बडा फायदा हो गया। दो क्वेश्चन मेरी जेब मे ही है, पाठको ने भेजे है। सोचा था, इसी अक मे उत्तर दूगा। पर नकुलबाबू मिल ही नही रहे हैं।"

"नकुल कौन ?" दादीमा ने पूछा।
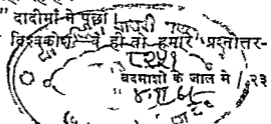
"चलता फिरता विश्वकोश—वे ही तो हमारे प्रश्नोत्तर-

विभाग क कठिन से-कठिन प्रश्नो के उत्तर देते हैं। पर कुछ दिन से वे मिल ही नही रहे है—जाने कहाँ गायब हो गये।"

पिकलू दोनो प्रश्न सुनने को उत्सुक हो रहा था। हरिमय बाबू ने जेब से कागज और साथ ही पढने का चश्मा निकाला। चश्मा नाक पर अटकाते हुए बोले, "आजकल के बच्चो का क्या जबदस्त जनरल नॉलेज है। ऐसे ऐसे क्वेश्चन भेजते है कि सम्पादको का सिर चक्कर खा जाता है। उत्तर सोचते-सोचते पसीना आ जाता है—इस खोपडी पर बाल आये भी तो कैसे ? सारे समय तो इजिन गरम रहता है।"

अब हरिमय बाबू ने प्रश्न उछाले, "किस देश के राजा ने दाढी पर टैक्स लगाया था ? बाप रे ! क्या सवाल है ! सिर चकरा जाता है। इन्कम टक्स, सेल्स टैक्स के बडे-बडे अफसरो से पूछा, कभी उन्होंने दाढी-मूछ पर भी टैक्स लगाया है क्या ! पर कोई कुछ नही बता पाया।"

पिकलू बोल उठा, "बहुत आसान सवाल है। रूस के राजा पीटर द ग्रेट ने।"

विस्मय से अवाक् रह गये हरिमय बाबू। अब उन्होने दूसरा सवाल उछाला, "किस देश की रानी नकली दाढी लगाती थी ?"

इस बार भी पिकलू खरा उतरा। बोला, "हमारी क्लास के सब लडके जानते है, मिस्र की रानियो को नकली दाढियाँ लगाना पसन्द था।"

हाथ के पास ही एक पखी थी—उसे उठाकर तेजी से हवा करने लगे हरिमय बाबू। चीखकर बोले, "भाभीजी, मेरा सर चक्रा रहा है आपके पोते के ज्ञान की छटा देखकर।"

पोते की तारीफ से खुश होकर दादीमा बोली, "इत्ते से बच्चे को कितनी बात पता हैं ? मैं तो हैरान रह जाती हूँ।'

दादी ने अब कहा, ' अब देखिए, इतने दिन के बाद कलकत्ता

आया है, अभी तक इसे कलकत्ता का कुछ भी दिखाने का इन्त-ज़ाम नही कर सकी। पर पिकलू ने मुझे धडाधड बता दिया कि मॉनुमेण्ट की ऊँचाई कितनी है। कहता है, विक्टोरिया मेमोरियल की इमारत भी ज़मीन मे कुछ इच धँस गयी है।"

"अरे, बडी मजेदार बात है!" खुशी से लहक उठे हरिमय बाबू। "धँसते धँसते किसी दिन विक्टोरिया मेमोरियल गायब ही हो जायेगा! सफेद पत्थर के गजे गुम्बज पर घास उगेगी!"

शायद दादी को फिर दादा से लडाई की बात याद आ गयी।

दीवानखाने मे दादा एकाग्रचित्त होकर हुक्का गुडगुडा रहे थे—बीच-बीच मे कश छोडकर चुप बैठ जाते।

दादा के कान के पास मुह ले जाकर दादीमाँ ऊँची आवाज मे बोली, "मैंने कहा, सुनते हो?"

दादा जैसे किसी दूसरी ही दुनिया मे चले गये थे। धीरे से बोले, "कुछ कह रही हो?"

दादी "मैंने कहा, क्या कर रहे हो?"

दादा बोले, "सोच रहा हूँ, पर सोचते-सोचते कोई कूल-किनारा नही मिल रहा है।"

इस कमरे मे बैठे हरिमय बाबू फुसफुसाकर पिकलू से बोले, "तुम्हारे दादा कहानी का प्लॉट सोच रहे हैं—'चमचम' के कट-लेट अक के लिए स्पेशल उपन्यास।"

अब हरिमय बाबू दादी को धर-पकडकर पिकलू के कमरे मे वापस ले आये। हाथ जोडकर प्राथना करने लगे, "भाभीजी, इस समय भाई साहब को जरा डिस्टर्ब मत कीजिए। भवनाथ सेन का मूड खतम हो जायेगा तो देश का नुकसान होगा।"

दादीमा ने गुस्से से जवाब दिया, "हजार बार करूँगी डिस्टर्ब। पाँच नही, दस नही—एक का एक पाता है, इतने दिन बाद यहा आया है, मन मारे घर मे बैठा है। उसे लेकर एक

बार भी घूमने नही निकले—कैसे दादा हैं !"

पर हरिमय बाबू भवनाथ की हालत का अन्दाज लगा पा रहे थे। पास जाकर खडे होते ही भवनाथ बोले, "हरिमय, तुम आये हो। तुम्हे देखते ही डर लगता है—मन मे आता है कि कही भाग जाऊँ।"

"डर की क्या बात है ? मैं कोई तगादा करने थोडे ही आया हूँ।' हरिमय बाबू ने भवनाथ को तसल्ली दी।

भवनाथ बोले, "जाने क्या हुआ है—कहानी अटकती ही जा रही है।"

"अटकते अटकते ही अचानक खुल जायेगी। पिछली बार भी तो शुरू शुरु मे कहानी अटकी थी। फिर जब निकली, तो पाठको मे धूम मच गयी।"

भवनाथ बोले, "अन्त भला तो सब भला। मैं तो कहानी का अन्त सोचे बिना पहली लाइन भी नहीं लिखता। खुद शरतचन्द्र चटर्जी महाशय ने मुझे चुपचाप सलाह दी थी—लास्ट लाइन सूझे बिना कभी भी फस्ट लाइन मत लिखना।"

हरिमय बाबू बोले, "आप अपनी साधना जारी रखिए। और किसी झझट मे पडिए ही मत।"

इसके बाद हरिमय बाबू पिकलू के कमरे मे लौट आये। जरूरत पडी तो वे खुद ही पिकलू को घुमाने ले जायेगे—अगर खुद उसे आपत्ति न हो।

हरिमय बाबू पिकलू की दादीमा के आगे यह प्रस्ताव रखने की सोच ही रहे थे कि इसी समय दरवाजे की बिजली की घण्टी तीखी आवाज म बज उठी।

उफ् ! लगता है, कान फट ही जायेगे। बजानेवाला या तो कोई पहलवान लगता है, या उसने अपनी जिन्दगी मे कभी घण्टी बजायी ही नहीं है। घर मे एक लेखक गम्भीर चिन्तन म मग्न

हो, ऐसे समय क्या इस तरह से घण्टी बजानी चाहिए ? भवनाथ को चाहिए कि ऐसे समय साहित्यकार नगेन पाल की तरह बाहर दरवाजे पर लिख दे "कृपया तग न करे। प्लीज डोण्ट डिस्टर्ब।"

खुद हरिमय बाबू ने ही दरवाजा खोला और कुछ घबरा गये। साढे छ फुटा एक चलता फिरता पहाड हडहडाता हुआ भीतर घुस आया। उस आदमी के सिर के बाल खूब छोट छोट छँट हुए थे, पर शरीर के अनुपात मे ही थी इम्पीरियल मूछ। शायद पहले हरिमय बाबू नही बता पाते कि ये मूछें इम्पीरियल हैं। पर पिकलू के दादा ने अपने पिछले उपन्यास मे तरह-तरह की मूछो का विस्तार से वर्णन किया है। दो-दो बार प्रूफ देखने मे हरिमय बाबू को वह सब याद हो गया है। ये इम्पीरियल दाढो-मूछे सबसे पहले रखी थी फ्रास के सम्राट नेपोलियन तृतीय ने।

इम्पीरियल मूछो के मालिक को हरिमय बाबू ने एक नजर म सिर से पैर तक देख डाला। उस आदमी ने धोती कुर्ते के साथ काले रग के भारी बूट पहन रखे थे।

अन्दर घुसते ही उसने दादा को सलाम ठोका और बताया, उसका नाम हुकुमसिह है—लालबाजार से आ रहा है।

लालबाजार का नाम सुनते ही हरिमय बाबू कुछ क्षणा के लिए भौचक्के रह गये। दादीमाँ बोली, "चिन्ता की कोई बात नही है—हुकुमसिह बडा सीधा सादा आदमी है, पिकलू के पुलिस नाना के पास ही इसकी ड्यूटी लगी है।"

हरिमय बाबू की हालत देखकर हुकुमसिह को भी मजा आया। बोला, "हम तो सिविल डरेस मे हैं। अभी कौनो फिकर की बात नही।"

अलसेशियन कुत्ते और पुलिसवाले किसी भी ड्रेस मे रहे, हरिमय बाबू को घबराहट होती ही ह। नगेन पाल इतने बडे साहित्यकार हैं, उनकी रचनाएँ लेना हरिमय बाबू ने बन्द कर दिया,

सिफ उस कुत्ते के डर के मारे। जिस घर पर वछडे की साइज का कुत्ता हो, वहा से रचनाएँ लाने कौन जायेगा ? कोई-कोई कुत्ते भी तो इतने बदतमीज होते हैं! मालिक के सिवा और किसी को इन्सान ही नही समझते।

हुकुमसिह के साथ वात करके दादीमा खुलकर हँस पडी। पिकलू के पुलिस नाना ने पिकलू को घुमा लाने के लिए उसे भेजा है।

"खुद पुलिस के साथ हवाखोरी!" प्रस्ताव सुनकर हरिमय वाबू खूब उत्साहित हो उठे।

भवनाथ ने अनुरोध किया, "हरिमय, तुम भी इन लोगो के साथ थोडा घूम आओ ना। जहाँ चाहो, जितनी देर चाहो, घूम सकोगे। पुलिसवाला साथ रहेगा तो हम लोगो को भी कोई चिन्ता नही रहेगी।'

हरिमय वाबू कुछ तय नही कर पा रहे थे। भवनाथ बाबू ने कहा, "मेरा पोता बहुत इण्टेलिजेण्ट है। वाहर निकलते ही ढेरो प्रश्न करने लगता है। तुम रहोगे तो जवाव दे सकोगे।"

घूमने की वात उठने पर हरिमय वाबू कभी भी पीछे नही हटते—चाहे वह दूरदेश की यात्रा हो, या कलकत्ता की। इस वार तो स्पेशल सुविधा भी है—पुलिसवाला साथ है।

हुकुमसिह के साथ सडक पर चलने मे हरिमय वावू को वेहद खुशी हो रही थी। उनकी खुशी तो मानो पिकलू से भी वढकर थी।

जेव से चिकलेट निकालकर हरिमय वावू ने एक पिकलू को दी और एक स्वय मुह मे डाल ली। फिर फुसफुसाकर पिकलू से पूछा, "हुकुमसिह को भी एक चिकलेट दू क्या ? पुलिसवाले चिक्लेट खाते ह ?"

हुकुमसिंह से पूछते ही उसने मूँछे हिलाकर हुकार भरी, "राम ! राम ! हम कभी चिकन नही खाते ?"

हरिमय बाबू और पिकलू, दोनो ही हँसते-हँसते लोटपोट हो गये। हरिमय बाबू ने अपनी खास शली मे समझाया, "अरे बाबा, चिकन नही—चिकलेट। बहुत अच्छा चुइग गम है। मुह के अन्दर रखकर पान के माफिक चबाने से बहुत मजा आता है।"

पर हुकुमसिंह कोई अनजानी चीज मुँह मे डालकर अपनी जात खोने को तैयार नही था।

हरिमय बाबू बोले, "पहले पता होता तो मै खद्दर की टोपी साथ लाता।"

पिकलू समझा, हरिमय बाबू अपनी चाद ढकने के लिए बेचैन हैं। पर हरिमय बाबू बोले, "हरगिज नही। गज रहती है तो लोग इज्जत करते है। मोदी लोग उधार दे देते है—सोचते है, जरूर रुपये हैं।"

"तो फिर ?" पिकलू ने पूछा।

दरअसल हरिमय बाबू अपने को बडा वी-आइ-पी जैसा महसूस कर रहे थे। "वी-आइ-पी का मतलब तो जानते हो ना ?"

"बहुत बडे-बडे आदमी।" पिकलू ने तत्काल उत्तर दिया।

हुकुमसिंह न सुन पाये, ऐसी दबी आवाज से हरिमय बाबू बोले, "दो तरह के लोगो के साथ पुलिस रहती है, या तो चोर डाकू, या वी-आइ-पी।"

अब पिकलू ने हुकुमसिंह से पूछा, "पण्डितजी, कलकत्ता का सब आप पहचानते हैं ?"

इम्पीरियल मूछे हिलाकर हुकुमसिंह ने जवाब दिया, "जरूर ! क्या नही पहचानते हम ! कलकत्ता के सऽऽब चोर-बदमाश-जेबकतरो को हम पहचानते हैं, ऊ लोग भी हमको पहचानते हैं।"

हरिमय बाबू के लिए ये बडी तसल्ली की बात थी। कल ही नीबूतल्ला के मोड पर किसी जेबकतरे ने उनका बटुआ निकाल लिया था। अहा ! तब अगर हुकुमसिंह साथ रहता तो बात ही क्या थी—बटुआ जेब मे ही रहता, ऊपर से पॉकेटमार भी पकडा जाता।

हरिमय बाबू की जेब कटने के समाचार से पिकलू को दुख होना चाहिए था, पर मानो किसी ने उसे गुदगुदाकर हँसा दिया। पिकलू ने सोचा था, यह हँसी देखकर हरिमय बाबू बुरा मानेंगे। पर वे भी हँसने लगे। बोले, "पॉकेटमार पर मुझे दया भी आती है। मनीबैग गया, पर मनी नही। रुपये पैसे मैं रखता हूँ, 'चम-चम' पत्रिका के एक पुराने लिफाफे मे। मनीबैग तो फॉल्स है। बस-ट्राम मे सफर करूँ और पास मनीबग न हो तो प्रेस्टिज नही रहती। प्रेस्टिज समझते हो ना ?" हरिमय बाबू ने प्रश्न किया।

"प्रेशर कुकर—खूब जल्दी खाना पक जाता है।" झट से उत्तर दिया पिकलू ने और यह सुनकर हरिमय बाबू ने फिर इन्द्रलुप्त पर हाथ फेरा।

"मिस्टर पिकलू, प्रेस्टिज दो तरह की होती है। औरतों की प्रेस्टिज जो है, उसका नाम है प्रेशर कुकर, और मर्दों की प्रेस्टिज का नाम इज्जत।"

पिकलू और हरिमय बाबू, दोनो देर तक खूब हँसते रहे और हुकुमसिंह ने सोचा, जरूर कोई सीरियस गडबडी है, इसी-लिए डी० सी० साहब का बम्बइया नाती कलकत्ता की सडक पर निकलकर हँस रहा है।

एक झल्लीवाला फुटपाथ के एक किनारे पाव फैलाये आराम कर रहा था। हुकुमसिंह ने जाकर उसकी गदन पकड ली। वह बेचारा भौचक्का रह गया। अपनी इच्छा से थोडा सो रहा था, इसम गलती क्या हुई ? हुकुमसिंह ने भारी आवाज मे उससे जो

कुछ कहा, उसका अर्थ था "सड़क चलने की जगह है, सोने की नही। ज्यादा बहस करेगा तो थाने ले जाया जायेगा, वहा से अदालत और अदालत से जेल।"

हरिमय बाबू चौंक उठे। "कभी मुझे ध्यान ही नही आया। फुटपाथ तो केवल फुट के लिए है! सोने की परमिशन होती, तो नाम होता—फुट एण्ड हेड पाथ!"

पिकलू ने पूछा, "कलकत्ता की सब जगह जानते है?"

हुकुम ने कहा, "ज-रू-र!" फिर धड़ल्ले से मानो रटी हुई चीजें उगलने लगा अलीपुर, अमहर्स्ट स्ट्रीट, बालीगज, बेलियाघाटा, बेनियापूकूर, भवानीपुर, बिरजूतला से शुरू करके टैंगरा, टॉलीगज, तिलजला, उल्टाडागा और बाटगज तक।

नाम पिकलू को अच्छे लग रहे थे। तो हुकुमचाचा सचमुच ही बहुत-कुछ जानते हैं। इनमे से कहाँ जाने पर ज्यादा मजा आयेगा? पिकलू ने हरिमय बाबू से जानना चाहा।

एक और चिकनेट मुंह मे डालकर हरिमय बाबू पिकलू की बात मे आतंकित हो उठे। "उन सब जगहो पर कोई अपनी मर्जी से नही जाता! उसे पकड़कर ले जाया जाता है। हुकुमसिंह तो कलकत्ता के सैंतालीस थानो और चौकियो के नाम रटकर बोल गया है।"

हुकुमसिह खुलकर हँसा। बोला, "जो थाना मे मरजी हो, चलिए।" हर जगह चाय पानी पिलाने का वादा कर रहा है हुकुमसिंह।

पर हरिमय बाबू खासे घबरा गये। पिकलू से बोले, "इन सब जगहो पर मैं हरगिज नही जाने का। बेल कौन देगा?"

पिकलू भी थाने जाने के पक्ष मे नही था। पर बेल की बात से उसकी उत्सुकता बढ गयी। वहा जाने पर शायद शिवमन्दिर की तरह बेल से पूजा करनी पडती है। "सादा बेल? या कठ-

बेल ?" पिकलू ने पूछा।

हरिमय बाबू और नरवस हो गये, "ऑडिनरी बेलफल नही, स्पेशल बेल।"

पिकलू बोला, "ओ, समझा। बेल माने घण्टी। हमने बिल्ली के गले मे घण्टी के बारे मे पढा है हू विल बेल द कैट ? बिल्ली क्या थाने गयी थी ?"

हरिमय बाबू बोले, "केस और भी खराब है ! एक बार घुसने पर निकलना बहुत मुश्किल है !"

पिकलू ने सोचा, थाने मे जाने पर पुलिसवाले भी बहुत खातिर करते है, छोडना नही चाहते। जैसे दोस्तो के घर आने पर पापा कहते है, "अरे बैठो, बैठो। अभी से क्या जाना !"

हरिमय बाबू ने सुना दिया, "जब तक कोई आकर बेल नही देता, तब तक छुट्टी नही मिलती। और मेरी मुश्किल यह है कि मेरी जान-पहचानवालो मे किसी के पास बँगला बाटी* नही है। थाली गिलास से काम नही चलेगा—सिफ बाटी चाहिए।"

"बाटी के साथ बेल का क्या लेना-देना ?" पिकलू अब जरा नाराज हो आया। उसे शक हो रहा था, हरिमय बाबू उसे छोटा जानकर बना रहे है।

पर हरिमय बाबू बोले, "सच मानो, जिनकी अपनी बाटी नही होती, वे बेल नही दे सकते। रुपये पैसे-मकानवालो को छोडकर और किसी पर विश्वास नही किया जाता। बेल का मतलब है जमानत और जमानत मिलने पर ही अदालत छोडती है।"

थानो की सैर करने का प्रस्ताव तभी अस्वीकृत हो गया।

---

* बगला-बाटी—घर द्वार। बाटी का अर्थ मकान भी होता है और 'कटोरी' भी।

काफी देर ऐसे ही घूमने-फिरने के बाद सडक पर चलते हुए पिकलू ने कहा, वह यहाँ ऐसा कुछ देखना चाहता है, जो बम्बई मे न हो।

हुकुमसिंह और हरिमय बाबू, दोनो ही चिन्तित हो उठे। जो कुछ कलकत्ता मे नही मिलता, वही सब देखने को तो लडके लुक छिपकर बम्बई भाग जाते हैं। जो भी कुछ बडा, अच्छा या मीठा होता है, उसी के साथ तो बम्बई का नाम जुड जाता है—जसे बम्बइया आम, बम्बइया चादर, बम्बइया मिठाई। कलकतिया जामुन या कलकतिया कटहल जैसी तो कोई चीज है ही नही।

हुकुमसिंह की खोपडी मे तो कुछ आ ही नही रहा था—वह हरिमय बाबू के मुह की ओर ही ताक रहा था।

हरिमय बाबू गम्भीरता से विचार कर रहे थे। पर जो भी कुछ स्पेशल है, सभी तो बम्बइया। कोई पहाड या समुद्र भी नही है कलकत्ता शहर मे। परिस्थिति पर सोच-विचार करने के लिए हरिमय बाबू ने आँखे मूँद ली। पिकलू को डर लगा, इस भीड-भरी सडक पर हरिमय बाबू कही गाडी के नीचे न आ जायें।

पर हरिमय बाबू को यह फिक्र नही थी। बोले, "यह बात तुम्हारे दादा से सीखी है। जब कभी आइडिया की कमी पड जाती है, तुरत आखे बन्द करके दिमाग को डार्करूम बना लेता हूँ। फिर फटाफट बात सूझ जाती है।"

हरिमय बाबू ने अचानक आखें खोली। बोले, "लग गया निशाना। मैं कहूँ, इतना बडा यह कलकत्ता शहर है, जो बम्बई मे न हो ऐसी कोई इस्पेशल चीज़ भला होगी क्यो नही ?"

हुकुमसिंह बोला, "बताइए—अभी छोटे साब को दिखा दें।"

हरिमय बाबू ने सगर्व घोषणा की, "ट्राम! बम्बई मे यह

चीज नही है।"

एक चलती ट्राम को हाथ के इशारे से रोककर तीनों उसमे सवार हो गये। हडबडी मे वे पीछेवाले डब्बे में चढ गये। पिकलू को खूब मजा आ रहा था। कैसे ढक ढक करती गाडी रुक रुक कर आगे बढ रही थी।

हरिमय बाबू ट्राम पर ज्यादा नही चढते। उनकी धारणा है, जेबकतरों की ट्राम पर ही कुछ ज्यादा कृपादृष्टि रहती है। हरिमय बाबू की पसन्द है रिक्शा।

इस पसन्दगी की बात सुनकर पिकलू हँस पडा। हरिमय बाबू बोले, "हँस क्या रहे हो ? बेस्ट गाडी है यही रिक्शा। खुद तुम्हारे दादा ने भी एक किताब मे लिखा है—ऐसा दिन आ रहा है जब पृथ्वी पर रिक्शा के सिवा और कोई सवारी ही नही रहेगी।"

कही ट्राम के और लोग न सुन ले, इसलिए पिकलू के कान के एकदम पास मुह लाकर हरिमय बाबू बोले, "रिक्शे मे न पेट्रोल लगता है, न बिजली, न बैल। रिक्शा विषैला धुआ भी नही छोडता, आमने सामने टक्कर का भी डर नही है—बरसात का पानी भरने पर यह ठप्प नही हो जाता—ट्रैफिक जाम तक रिक्शा पर रोक नही लगा सकते।"

ट्राम मे बेहद भीड थी। ढेरो लोग चढे हुए थे। भीड के मारे दरवाजा तक नही दिखायी दे रहा था। कण्डक्टर को आते देखकर हरिमय बाबू टिकट लेने के लिए जेब की तरफ हाथ बढा ही रहे थे कि कण्डक्टर की नजर हुकुमसिंह से मिल गयी। हुकुमसिंह ने पहले तो कुर्ते की ऊपरी जेब, और फिर हरिमय बाबू और पिकलू की तरफ इशारा किया। कण्डक्टर इसके बाद पास ही नही आया।

हरिमय बाबू बोले, "वाह ! अब तो मैं, सम्भव हुआ तो,

रोज हुकुमसिंह के साथ ही बाहर निकलूगा। इन लोगो का कही टिकट नही लगता।"

एक ग्रामीण वुढिया लेडीज़ सीट पर बैठी थी। अब लगता था कि उसे उतरना है। पर सीट छोडकर कुछ धक्कामुक्की करके वह अचानक डर गयी और चिल्लाने लगी, "ओ दुकानी! दुकानदार कहा गया?"

उसकी कातर पुकार सुनकर कई लोग तत्पर हो उठे। हरिमय बाबू ने आगे बढकर कहा, "किस दूकानदार को ढूँढ रही है? यहा तो कोई दूकानदार नही है।"

सुनते ही बुढिया हाउँ-हाउँ कर रोने लगी, "ओ दइया! क्या बोला रे। दुकानी है ई नई! अब मैं क्या करूँ रे!"

बुढिया को हिम्मत बँधाने के लिए पिकलू बोला, "क्या बात है? किस बात से घबरा रही है आप?"

पिकलू का हाथ पकडकर बुढिया बोली, "ये मिनस क्या कैरा है! इत्ती बडी दुकान मे कोई दुकानदार ई नई है रे!"

पिकलू ने अब जरा ऊँचे स्वर मे कण्डक्टर को आवाज़ दी। खाकी यूनिफॉम पहने कण्डक्टर ने भीड को धकियाते हुए आकर बुढिया से पूछा, "क्या हुआ है?"

बुढिया को मानो आकाश का चाद मिल गया हो। "ओ जी दुकानी, का खो गये थे? मुझे तो निकलने का दरवाजा ई नई मिलता। ऊपर से वो आदमी बोले कि दुकानदार बी नई है।"

अब सबकी समझ मे आया कि भीड मे दरवाजा न मिलने पर ही गाँव की बुढिया घबरा गयी थी। डब्बे के कई लोग हँस पडे। किसी ने कहा, "दुकानदार नही—कण्डक्टर।"

ट्राम से उतरते-उतरते बुढिया फुफकार उठी, "अरे हट मुए! इत्ते दिन से कालीघाट आ रई हूँ, मुझे सिखाने चला है।"

ट्राम की यात्रा पिकलू को बडी रोमाचकारी लग रही थी।

लग रहा था डेढ हज़ार लोग मानो एक साथ उस पर टूट पडे हैं—पर वह अकेला लडे जा रहा है।

बुढिया के डर से भीड की धारा में बहते-बहते हरिमय बाबू काफी दूर खिसक गये थे। अब बडे रोब से पिकलू के पास चले आये। बोले, "एक और आइटम याद आया है, जो बम्बई मे नही, पर कलकत्ता मे है। कालीघाट—कालीमाई का मन्दिर। कालीघाट से ही तो कलकत्ता बना है।"

कालीघाट पर उतरने के पहले ही एक अजीब बात हुई। कण्डक्टर के बार-बार टिकट माँगने पर छोटे छोटे कटे हुए बालो-वाले एक बन्दरनुमा आदमी ने अपने ढीले-ढाले पैण्ट की जेब से बटुआ निकाला। पैसे देने की उसे मानो जरा भी इच्छा नही थी।

बटुए की ओर देखते ही चौक पडे हरिमय बाबू। उनकी आखे बिल्कुल चमचम के आकार की हो गयी। फिर वे बोले, "यूरेका!"

"हुकुमसिह होशियार!" कहकर हरिमय बाबू पलक झप-कते बटुए और आदमी पर झपट पडे।

शोर मच गया। उस आदमी की कमीज का कॉलर पकड-कर हुकुमसिह हडहडाता हुआ उसे ट्राम के बाहर ले आया। लोगो ने भी नही रोका। कलकत्ता मे सादे कपडोवाले पुलिस-वालो की सूरत ही और होती है। सबने हुकुमसिह को पहचान लिया था।

"मेरा बटुआ—लॉस्ट एटलाण्टा, लॉस्ट एटलाण्टा!" खुशी के मारे हरिमय बाबू बेसुध हुए जा रहे थे।

आदमी के हाथ से बटुआ छीनकर हरिमय बाबू बोले, "यही है मेरा बटुआ। बटनवाली जेब मे देवी माँ की पूजा का जवा-फूल रखा है—देखिए। ज़रा देखू तो " किसी कोने से 'चम-चम' पत्रिका का विज़िटिंग कार्ड भी निकल आया।

मुसीवत सर पर देखकर वह आदमी बोला, "सच मानिए साहब, बटुए मे कुछ भी नही था। कुल मिलाकर सत्तासी पैसे मिले थे।"

कालीघाट की काली देखने का प्रोग्राम गया ताक पर। मालसहित चोर को लेकर हुकुमसिंह थाने जाना चाहता था।

पिकलू हैरान था। हरिमय बाबू अपना खोया धन, यह बटुआ कैसे पहचान सके?

हरिमय बाबू ने गर्व से उत्तर दिया, "बडी आसानी से। मेरा बटुआ तो 'चमचम' के लिए स्पेशल तैयार किया गया है। ये देखो—बटुए के दोनो तरफ वडे बडे अक्षरो मे लिखा है 'चम-चम'! जब यह बटुआ स्पेशल तैयार कराया गया था, तब उद्देश्य था प्रचार का। दिन मे कितनी ही बार कितनी ही जगहो पर बटुआ निकालकर लेन-देन होता है। दूसरो के बटुओ पर सभी की नजर रहती है। सो 'चमचम' नाम हर दिशा मे फैल जायेगा।"

हरिमय बाबू ने हुकुमसिंह से चोर को छोड देने का बहुत अनुरोध किया, पर वह कहा छोडनेवाला था। मन ही-मन हिसाब लगाकर हरिमय बाबू ने कहा, "सत्तासी पैसे के लिए जेल जाना तो ठीक नही।"

वह आदमी भी खूब चालाक था। अच्छा मौका देखकर हरिमय बाबू से बोला, "मुझे हाजत मे दगे तो वह बटुआ मिलने मे छ महीने लग जायेगे हुजूर! कोट-कचहरी मे जायेगा वह बटुआ।"

अब बहुत ही मुश्किल से हुकुमसिंह के हाथो से उस आदमी को छुडाया गया। उत्तेजना से हरिमय बाबू की चाँद पर पसीना आ गया था। बोले, "पाकेटमार को पकडने मे जितनी तकलीफ हुई, उससे कही ज्यादा उसे छुडाने मे हुई।"

कालीघाट देखकर पिकलू का जी नहीं भरा। वह कलकत्ता में और भी बहुत-कुछ देखना चाहता था।

हुकुमसिंह ने मुन्ना बाबू को अब घर लौटा ले जाने का प्रस्ताव किया। पर मुन्ना बाबू की इच्छा थी आज सारे दिन मस्ती में घूमने की।

अब हरिमय बाबू और हुकुमसिंह दोनों ही बार बार घड़ी देख रहे थे।

हुकुमसिंह की तो, लगता है, आफिस में ड्यूटी है। वह तो साहब के नाती का एक बार देखने झट से चला आया था।

एक दूकान पर जाकर उसने आफिस को फोन कर दिया। अगर ज्यादा देर हुई, तो वह आज की छुट्टी ले लेगा, आफिस जायेगा ही नहीं।

एक मिनी बस पिकलू को लगभग छूती हुई निकल गयी। उस पर लिखा था विवादि बाग—टॉलीगंज। पिकलू तो जो देखेगा, उसी के बारे में प्रश्न पूछेगा। हुकुमसिंह से वह पूछ बैठा, "ये विवादि कैसा नाम है?"

बदमाश चोर-डाकुओं को पकड़ने में हुकुमसिंह का सानी नहीं है। पर साधारण ज्ञान के प्रश्न करते ही वह मुश्किल में पड़ जाता है। सिर खुजाते हुए वह बोला "कोरट में दो किसिम का आदमी जाते हैं—जो पार्टी मोकद्दमा करती है, उसका नाम बादी अर दूसरे का नाम विवादी। तो इसी से विवादी बाग का नाम पड़ा है।"

हरिमय बाबू एक फोन करने का इरादा कर रहे थे। हुकुमसिंह साथ रहेगा तो टेलिफोन का मालिक वाजिब से ज्यादा पैसे नहीं लेगा। हुकुमसिंह की व्याख्या सुनकर वे बोले, "हाँ भी सकता

हैं। कोई रहस्यमय शब्द मिलते ही मैं उसकी जड तक चला जाता हूँ। विवादि—लगता है—विवाद से बना है—जिसका अथ है, झगडा। मुकदमा भी एक तरह का झगडा ही है। इसलिए जो विवाद करता है, वही हुआ विवादी। जहाँ पर इन विवादियो पर वागें (लगाम) डाल दी जाती हैं—जैसे कोट, कचहरी, सरकारी आफिसो मे, वही हुए विवादी वाग।"

स्टैण्ड के पास ही कोट-पतलून से सुसज्जित एक सज्जन बस पकडने के लिए खडे थे। वे अब बरदाश्त नही कर सके। मुँह से सिगरेट निकालकर बोले, "छोटे बच्चे को यह सब क्या समझा रहे हैं? विबादि वाग का अथ है—विनय बादल-दिनेश वाग। तीनो महान क्रान्तिकारी थे—अंग्रेजो के जमाने मे उन्होंने राइटर्स विल्डिंग पर हमला किया था। और वाग का मतलब है, बगीचा।"

खुलकर हँस पडा हुकुमसिंह। "हाँ, हाँ—अब याद आ रहा है। बिबादी का मतलब है डलहौजी स्क्वायर।"

पिकलू ने यह बात अपनी नोटबुक मे उतार ली। जेब मे एक छोटी नोटबुक वह हमेशा रखता है—पता नही कब क्या लिखना पड जाये।

अब पिकलू ने टालीगज का मतलब पूछा। उसका ध्यान बँटाने के लिए हरिमय बाबू बोले, "मतलब जानकर क्या होगा? बल्कि लो, ये मूगफलियाँ खाओ।"

पिकलू ने मूगफलिया भी ले ली और साथ ही मतलब भी पूछने लगा।

हरिमय बाबू बोले, "पहले से इन सब प्रश्नो का पता होता तो मैं और हुकुमसिंह, दोनो पट-पढाकर निकलते। फटाफट सब प्रश्नो के उत्तर दे देते—लालदिघि लाल क्यों नही है, गोलदिघि चौकोर क्यो है, बहू बाजार मे बहू क्यो नहीं मिलती! पर खैर,

टालीगजवाला प्रश्न बहोऽत आसान है। कॉमनसेंस से ही इसका जवाब दिया जा सकता है।"

हिम्मत पाकर हुकुमसिंह बोल उठा, "ई तो हमे भी पता है। उहा टालिया (खपरैले) बनती थी।"

हरिमय बाबू ठठाकर हँस पडे, "बिल्कुल गलत। मिट्टी को पकाकर बनायी गयी टालियो के साथ टॉलीगज का कुछ भी लेना-देना नही है। वहा कनल टॉली नाम के एक बडे भारी साहब रहते थे। तुम्हारे दादा के पिछने मे पिछले बरसवाले उपन्यास मे उनके बारे मे लिखा हुआ है।"

हुकुमसिंह मामला समझ गया। मुन्ना बाबू के साथ अकेले घूमने का उसे उत्साह नही रहा। वह चाहता है कि हरिमय बाबू भी साथ रहे।

हरिमय बाबू बोले, "तो फिर एक बार झटपट 'चमचम' आफिस का चक्कर लगा लिया जाये। मुझे इतनी देर तक गायब पाकर सहसम्पादक विजय को जरूर चिन्ता हो रही होगी। और फिर कोई अर्जेण्ट बात हुई, तो वह भी पता लग जायेगी। तुम लोग भी तब तक घर लौटकर पूरे दिन के प्रोग्राम के लिए रेडी हो जाओ।"

तय हुआ, घर पर खबर देकर पिकलू और हुकुमसिंह तुरन्त सीधे 'चमचम' के ऑफिस मे आ जायेगे।

पिकलू के दादा बहुत देर से ईजीचेयर पर पत्थर की तरह स्थिर बैठे थे। यह कुर्सी मन्त्रपूत सिंहासन जसी है। यहाँ बठे बिना उनके दिमाग मे कहानी का प्लॉट आता ही नही। पिछले बीस बरसो मे उन्होने कितने ही प्रसिद्ध कहानी उपन्यास लिखे हैं, सब आरम्भ से अन्त तक इसी आरामकुर्सी पर।

पिछले सात दिनो से इस कुर्सी पर बैठे वे एक उपन्यास के प्लॉट का ताना-बाना बुनने की कोशिश कर रहे थे। कितने ही विचित्र रग-बिरगे चरित्र मानो परियो की तरह पख पसारकर उनके विचारो की दुनिया मे आ उतरे थे। पर अन्त तक वे कुछ भी ढँग से नही बैठा पा रहे थे। रग बिरगे पात्र होने से ही तो काम नही चलता—कहानी का आधार भी तो बँधना चाहिए। कहानी का एक मनचाहा अन्त भी होना चाहिए।

पिछले कुछ एक सालो से भवनाथ सेन ने जो भी लिखा है, उसके अन्त मे दुख का सकेत रहता है।

इस बार भी एक दुखद कहानी पर ही वे सोच विचार कर रहे थे। ऐसे ही समय पिकलू कलकत्ता चला आया। पोती शतरूपा सख्त बीमार थी। उसे लेकर उसके माता-पिता वेलोर चले गये थे और पिकलू को एक दोस्त के साथ बम्बई से भेज दिया था भवनाथ के पास।

भवनाथ ने भी अपने बेटे को लिख दिया था "अब हम लोग हैं ही, तो पिकलू जितने दिन चाहे हम लोगो के पास रहे। और फिर अभी स्कूल की छुट्टी भी है, तो उसकी पढाई-लिखाई की भी कोई चिन्ता नही है।"

आते ही पिकलू ने दादा के साथ खूब गप्पे लडायी। पिकलू ने कुछ-कुछ सुना है कि हजारो लोग दादा की कहानिया पढने को बेचैन रहते है। पर उसने दादी को बता ही दिया, "दद्दू की कहानियाँ मुझे अच्छी नही लगती। दद्दू से तो बहुत अच्छी कहानियाँ अधर भैया जानते हैं।" अधर भैया है उनके घरेलू नौकर।

पोते के इस मन्तव्य पर उस दिन घर मे खासी हलचल रही। लेखक के पोते ने कह दिया है—पद्मश्री भवनाथ सेन से अधर की कहानिया ज्यादा अच्छी है। सभी चुपके-चुपके हँस रहे थे।

आखिर दादीमाँ ने पूछा, "अरे हा रे, तूने ऐसी बात क्यो कही ?"

पिकलू का उत्तर बडा सीधा था। दादा की कहानियो मे बडा दुख रहता है। शुरु-शुरु मे तो खूब रौनक रहती है, लोग-बाग रहते हैं, बडा आनन्द आता है। फिर कुछ पन्ने आगे बढते ही जाने क्या होता है कि सभी गम्भीर हो जाते हैं। और फिर आखिर मे तो दुख ही दुख ! आसू आ जाते है।

और रोना पिकलू को बिल्कुल पसन्द नही है। बहुत बुरा लगता है। अधर भैया कहानी सुनाते ह तो ठीक उल्टा होता है। शुरु मे थोडा-थोडा दुख रहता है। पर उसकी पिकलू परवाह नही करता—उसे पता ही है, जब अधर भैया है, तो थोडी देर मे ही सब ठीक हो जायेगा। सचमुच होता भी यही है। और आखिर मे कितनी हँसी-खुशी, कितना मजा ! बन्दिनी राजकुमारी के साथ अनजाने देश के राजकुमार का व्याह हो जाता है, जलनखोर रानी की दुष्टता जाहिर हो जाती है, दुहागिन रानी का दुख समाप्त हो जाता है, लोभी राक्षस को सजा मिल जाती है, गुप्तधन की तलाश मे निकले बच्चे निराश होकर नही लौटते, कचे की साइज के मुट्ठी की मुट्ठी हीरो से उनके निकरो की जेबे ठँसी रहती है।

पिकलू की बातो ने भवनाथ को सोचने पर मजबूर कर दिया। सोच-विचारकर उन्होने देखा कि अपने अनजाने ही वे एक के बाद एक दुखान्त कहानी लिखते गये हैं। ऐसे लोग भी हैं जो नीम के पत्ते चबाना, करेला खाना और दुखान्त कहानिया पढना पसन्द करते हैं। उन्ही लोगो ने मुग्ध होकर भवनाथ को लम्बे-लम्बे पत्र लिखे हैं और उन्ह गलत रास्ते पर चला दिया है। पर इस बार भवनाथ सोच रहे है, जैसे भी हो, पिकलू के चेहरे पर हँसी लाकर ही रहेगे वे।

पर यही तक आकर वे अटक गये। पिछले सप्ताह-भर से कल्पना की सरस्वती का कितने ही प्रकार से उन्होने आह्वान किया—पर शुद्ध आनन्द की कहानी कलम से ही नही निकलती। शुरू-शुरू मे कहानी के पात्र उनकी कल्पना के लोक मे बेहद खुश और मस्त रहते है—पर फिर अचानक जाने क्या हो जाता है, दुखो के घने काले बादल उनके मन के आकाश पर छा जाते है। भवनाथ अब समझ पाये, दुख की कहानिया लिखना सबसे आसान है। पर इस बार वे आनन्द के अलावा और कुछ भी नही लिखेगे। भोर के उजाले जैसा हँसता हुआ झलमलाता आनन्द चाहिए उन्हे।

फलस्वरूप एक सप्ताह ऐसे ही कट गया। भवनाथ कुछ भी नही कर पाये। 'चमचम' पत्रिका के सम्पादक हरिमय बाबू ने कुछ दिन पहले आकर अगले उपन्यास का विषय जानने का आग्रह किया था। उन्हे विश्वास ही नही होता था कि भवनाथ सेन जैसे लेखक के दिमाग मे कहानियो का सोता सूख गया है। हरिमय बाबू की धारणा है कि भवनाथ तो एक सेब के वृक्ष हैं—डाली-डाली पर असख्य कहानियो के रगीन सेब लटक रहे है। एक तोडकर सम्पादक को पकडा देने से ही काम चल जायेगा।

आखिर मजबूर होकर भवनाथ ने कागज़ की चिट पर एक नाम लिखकर हरिमय का पकडा दिया। शायद हरिमय बाबू का इरादा उपन्यास के नाम का अगाऊ प्रचार करने का है।

कागज की उस चिट को पढकर तो आनन्द और विस्मय के मारे हरिमय बाबू के मुह से बोल भी नही फूट पाये। बोले, "गजब है! सोचा भी नही जा सकता! समझ गया म, कुछ अजब-अनोखा होनेवाला है।"

"क्या होनेवाला है, यह तो खुद मुझे ही पता नही है हरिमय!" भवनाथ सेन ने करुण भाव से कहा था।

पर 'चमचम' के सम्पादक ने इस बात पर विश्वास नही किया। बोले, " 'बदमाशो के जाल मे'—इस नाम मे ही आपने बच्चो से बूढो तक सबको बाध लिया है। मुझे तो पता है, 'चमचम' की सारी प्रतियाँ छपने मे पहले ही बिक जायेगी।"

ऐसी बातें भला किस लेखक को अच्छी नही लगती ? पर भवनाथ सेन को जरा भी शान्ति महसूस नही हो रही है—कहानी की छाया तक मन मे नही आ रही है।

आमतौर पर भवनाथ सेन के दिमाग मे कहानिया बडे अनोखे ढग स आ जाती है। इस कुर्सी पर बठकर वे कुछ मिनट एकचित्त होकर हुक्का गुडगुडाते रहते ह। आस-पास हल्के धुएँ की एक मसहरी तैयार हो जाती है। सब कुछ जरा धुँधला-सा हो जाता है।

ऐसी स्थिति मे भवनाथ आखे मूद लेते है—आखें मूदे-मूदे ही थोडी देर और हुक्का गुडगुडाते है। ठीक ऐसे समय भवनाथ की आखो के आगे एक बडा सारा रुपहला पर्दा दिखायी देता है। मानो वे सिनेमा हॉल मे बैठे हो। पर उस हॉल मे उनके अलावा और कोई भी दर्शक नही है। लगता है, किसी ने सिर्फ उनके लिए स्पेशल शो की व्यवस्था की है। इसी हालत मे पर्दे के ऊपर क्रमश कुछ चेहरे उभरने लगते हैं। धुधले-से अँधेरे मे फिल्म शुरू हो जाती है। सब पात्र अपना-अपना काम खुद किये जाते हैं, भवनाथ को कुछ भी नही बताना पडता। वे हाथ-पाव समेटे सिर्फ बैठे रहते ह दर्शक की कुर्सी पर। आखिर अन्त भी उनके सामन आ जाता है। कहानी पूरी हो जाती है। तब वे फिर शुरू से फिल्म देखना चालू करते ह—कहानी मे जो कुछ छिद्र होते ह, उनकी वे अब मरम्मत कर देते है।

इसके बाद भवनाथ को कोई दिक्कत नही होती। हुक्के की नाल एक ओर खिसकाकर, कलम खोलकर जब वे कागज पर

पहली लाइन लिखते हैं, तब कहानी की अन्तिम लाइन तक उनके दिमाग मे होती है।

पर आज वे बेचैन हो उठे थे। कल्पना की छोटी-सी टुन-टुनिया चिड़िया उनके हाथ ही नही आ रही थी। मन की ऐसी हालत मे भवनाथ का जी और कोई काम करने को भी नही चाहता। काम तो दूर की बात है, उन्हे खाने मे भी रुचि नही रहती। सिर्फ एक हुक्के से लगाव रहता है, पर आज सुबह से तो वह भी बेस्वाद लग रहा था।

पिकलू की बात घरवाली इस तरह सुना गयी थी मानो घर मे पोते की उपस्थिति का भवनाथ को कोई होश ही न हो। बात जरा भी सच नही है। पिकलू के लिए भवनाथ ने मन-ही मन अनेक योजनाएँ बना रखी थी—उसे कहाँ कहा ले जायेगे। चिड़ियाघर के किस किस पशु से उसका परिचय करायगे। बोटा-निकल गार्डन, म्यूजियम, प्लैनेटोरियम, विक्टोरिया मेमोरियल, नेशनल लाइब्रेरी वगैरह की लिस्ट भी तैयार कर ली थी। भवनाथ ने सोचा था, इस बार अपने पोते का बड़े-बड़े लेखको से परिचय करा देगे। कुछ दिन तक तो पोते के साथ घूमना छोड़कर और कोई काम ही नही रखेगे। जरूरत हुई तो सब मिलकर लग्ज़री बस मे दीघा की सैर भी कर आयेगे।

पर हा कुछ भी नही रहा है। कहानी की समस्या और भी जटिल हो उठी है। मिजाज जसा कडवा हो रहा है, उससे दिमाग मे खुशी की कहानी कैसे निकलेगी, भवनाथ की समझ मे नही आ रहा था। पर उनका प्रण है, इस बार किसी भी हालत मे दुख की कहानी नही लिखेगे।

आज सुबह पिकलू की दादी के साथ कुछ कहा-सुनी हो गयी। बात और भी कितनी बढती, पता नही। पिकलू की दादी शायद सच ही बहूरानी के पिता अर्थात् रजन सेन को लाल-

बाजार कहला भेजती। पुलिस के ऊँचे अफसर के आगे वे पति की आलोचना करती।

पिकलू के नाना शहर के चोर-बदमाशो, गुण्डो, जालसाजो, ठगो वगैरह को पकडने मे हर समय व्यस्त रहते हैं। रात को सोते समय भी उन्हे बिस्तर के पास टेलिफोन रखना पडता है। जब बाहर निकलते हैं, तब भी गाडी मे एक बेतार का टेलिफोन रहता है।

एक बार रजनबाबू यहा रात के खाने पर आये थे। दस एक मिनट बातचीत करने के बाद खाना शुरू ही किया था कि हुकुमसिंह ने आकर खबर दी, वायरलेस पर चार्ली पीटर ने बुलाया है। चार्ली पीटर कलकत्ता पुलिस का कोई कोड वर्ड रहा होगा। वायरलेस से अवश्य ही कोई बेहद जरूरी खबर मिली थी—क्योंकि खाना बीच मे ही छोडकर रजन सेन ऑफिस लौट गये।

पिकलू की दादीमा ने पूछा, "रात के आठ बज गये हैं—अब कैसा ऑफिस ?"

रजन सेन दुखी होकर बोले, "हम लोग तो चौबीसो घण्टो के चाकर है। हमारे लिए दिन क्या और रात क्या, सुबह क्या और दोपहर क्या। बदमाश लोग तो ऑफिस की घडी देखकर बदमाशी नही करते।"

फिर भी रजन सेन और एक दिन पिकलू को देखने आये थे और बोल गये थे कि अगर हो सका तो पिकलू के लिए वे दो-एक दिन की छुट्टी लेंगे।

"आप क्या बेकार छुट्टी लेगे ? पूरी छुट्टीवाले तो आपके सामने ही बैठे है। ये न ऑफिस जाते है, न रेडियो टेलिफोन पर बाते करते है, फिर भी बडे-बडे हवाई डाकुओ को कलम की नोक से पकड डालते हैं। इनके हुकुम से कोई राजा बन जाता है,

कोई फकीर।" कुछ गुस्से से ही बोली थी पिकलू की दादीमाँ।

रजन सेन हँस पडे थे और चटपट विदा लेते हुए बोले थे, "साहित्यकार के साथ कलकत्ता की सैर और पुलिस के साथ कलकत्ता-दर्शन एक ही बात थोडे ही है! हम लोग तो आदमी की बुराइयो को ही जानते है—कहाँ खून होते है, कहाँ लूट-पाट होती है, कौन-सी जगह किस समय खतरनाक होती है, यही हम बता सकते हैं। पर भवनाथ बाबू की नजरो से ये जगह कुछ और ही हो उठेगी।"

इसके बाद ही हडहडाते हुए पिकलू के नाना चल दिये थे। भवनाथ की रचनाओ के वे बडे भक्त थे। आजकल तो वे भूल कर भी बडोवाली किताबे नही पढते। जरा-सा समय मिलते ही बच्चोवाली कहानियो की किताबे खोल बैठते हैं।

भवनाथ ने सोचा था, 'चमचम' वाले उपन्यास का एक खाका दो एक दिन मे ही दिमाग मे आ जायेगा और तब वे पिकलू की दादी को दिखला देंगे कि पोते को लेकर वे कितनी मौज मस्ती कर सकते हैं।

पर आज भी भवनाथ के मन मे धूप नही निकली। पिकलू की दादी तो शायद आज और भी गुस्सा हो जाती, शायद रजनबाबू को ही छुट्टी लेने के लिए कहला भेजती। तकदीर से हुकुमसिह और 'चमचम' के सम्पादक हरिमय बाबू एक साथ ही घर पर आ पहुँचे थे।

हरिमय भी आदमी खूब है—बच्चो से सचमुच ही प्यार करता है। एक ही गाव का होने के कारण भवनाथ से भी अच्छा स्नेह है। भवनाथ को जो अच्छी लगती है, उन छोटी मोटी बातो पर भी हरिमय को बडा उत्साह रहता है। नही तो किसी लोकप्रिय पत्रिका का सम्पादक भला सिर्फ मौज के लिए ही एक ग्यारह बरस के बच्चे के साथ घूमने निकल पडता?

एक काम के लिए निकलकर दूसरे काम मे लग जाने मे हरिमय बाबू को आपत्ति नही होती। अभी ही तो वे आये थे भवनाथ के अगले उपन्यास के कुछ अश लेने, पर उसके बारे मे कोई बात किये बिना ही पिकलू के साथ चल पडे।

एक बार हरिमय बाबू अदालत मे गवाही देने निकले थे, और उसे भूलकर मोहनबागान के मैदान मे खेल देखनवालो की कतार मे जा खडे हुए। नहाना खाना भूलकर साढे चार घण्टे क्यू मे खडे रहने के बाद मैदान मे घुसते ही उन्ह याद आया कि जेब मे गवाही का समन पडा है। अब तक तो जज ने नाराज होकर उन्हे पकड बुलाने के लिए वारण्ट जारी कर दिया होगा। भवनाथ बाबू के अलावा और किसी को विश्वास ही नही हुआ, कि वे सिफ भूल के मारे खेल के मैदान की क्यू मे खडे हो गये थे।

आज पिकलू को लेकर निक्ले ह तो हरिमय बाबू ऐसी भूल नही कर पायगे—क्योकि साथ मे हुकुमसिह है। पुलिसवाले हरिमय बाबू के ठीक विपरीत हाते है। कहा जाना है, कितनी देर रुकना है, क्या करना है, सब-कुछ फटाफट अपनी नोटबुक मे लिख लेते है—भूलने का कोई सवाल ही नही उठता। हरिमय बाबू और हुकुमसिह, इन दोनो को लेकर कहानी लिखी जाये तो कैसा रहे? भवनाथ ने अचानक ही सोचा।

हरिमय बाबू और हुकुमसिह पिकलू को लेकर निकल गये तब भी भवनाथ सेन बहुत देर तक अपनी कुर्सी मे अधलेटे बैठे रहे। फिर सोचा, कुछ देर बाहर की हवा खायी जाये। नयी रचना के लिए मन चचल हो उठा था।

पिकलू की दादीमा ने दूर से यह देखा। भवनाथ को अन्दाज है कि उन्होने क्या सोचा होगा—'अगर बाहर जाना ही था तो

पोते को लेकर ही क्यो नही निकले ?'

पर भवनाथ सैर करने तो निकले नहो थे—सिर्फ बेचैन मन को कुछ शान्त करने की कोशिश कर रहे थे। शायद दो-चार कदम चलकर ही लौट आये।

हुआ भी यही। सडक पर बहे जाते जनप्रवाह के साथ घुल-मिलकर भी भवनाथ को शान्ति नही मिली। दिमाग मे कहानी अव भी रूप नही ले रही थी।

ठीक ऐसे समय भवनाथ ने देखा, एक आदमी बाँस की नसेनी और बाल्टी लिये ऊँची ऊँची जगहो पर पोस्टर लगा रहा है। 'चमचम' का पोस्टर है ना ? हाँ, उनके दिये हुए नाम की ही बड बडे अक्षरो मे घोषणा हो रही है। और इस उपन्यास की एक पक्ति भी उन्होने अभी तक नही लिखी है ! भवनाथ सेन का सर बेहद भारी हो उठा। पास ही एक बडा सा गड्ढा था, उस ओर उनका ध्यान ही नही गया। अचानक ही पाँव उसमे जा पडा। जरा-सी कसर रह गयी, नही तो भवनाथ सेन धडाम से गिर पडते। कोई बडी दुघटना नही हुई, पर लगता है, घुटने मे मोच आ गयी है। दर्द सहते हुए भवनाथ किसी तरह घर की ओर चले।

ठीक ऐसे समय एक परिचित हँसते हुए बोले, " 'चमचम' का विज्ञापन देखा। इस बार लगता है, खूब हँसानेवाली कहानी होगी।"

भवनाथ हँस नही सके। मन और पाव, दोनो मे ही टीसे उठ रही थी।

घर लौटते ही भवनाथ ने पिकलू और हुकुमसिंह को देखा। दोनो तेजी से दोपहर का खाना निपटा रहे थे।

हुकुमसिंह को अपनी इम्पीरियल मूछे बचाकर खाना पड रहा था, इससे वह पिकलू की बराबरी नही कर पा रहा था।

वैसे पिकलू को खाना खाने मे बहुत देर लगती है। उसको एक बुरी आदत है। इस उमर मे भी माँ को उसे खाना खिलाना पडता है। यहाँ पर भी दादीमा हर रोज यह काम करती थी। पर आज पिकलू और हुकुमसिंह दोनो बम्बई मेल की रफ्तार मे खा रहे थे। दोनो के बीच खासा कम्पिटीशन चल रहा था। कटोरा उठाकर दाल पीने की वजह से हुकुमसिंह की इम्पीरियल मूँछ दस पर्सेण्ट पीली हो गयी थी।

दादीमा ने खुश होकर बताया, "इन लोगो के पास जरा भी समय नही है। अभी बाहर निकलेंगे।"

भवनाथ ने हरिमय बाबू के बारे में पूछा। पिकलू ने बताया, "खाना खतम करते ही रिक्शा लेकर वे हरिमय बाबू के घर चले जायेंगे।"

दादीमा बोली, "उन्हे भी यही ले आता। जो भी होता, दो मुट्ठी भात वे यही खा लेते।"

हुकुमसिंह ने गम्भीरता से उत्तर दिया, "बुढऊ साहब को टैम नही है। साहा सम्पादक के साथ जरूरी मुलाकात करेंगे अउर पिकलूबाबू की राह देखेंगे।"

पिकलू हँसकर बोला, "साहा सम्पादक नही। अखबार निकालने मे जो सम्पादक की मदद करते हैं, उन्हे सह-सम्पादक कहते है।"

दादा की ओर गर्दन घुमाकर खीसें निपोरता हुआ पिकलू बोला, "दद्दू, आज बडा मजा आया! एक पॉकेटमार भी देखा। इसके पहले मैंने कभी भी जीता-जागता पॉकेटमार नहीं देखा था।"

"हूं! जरूर बेचारे हरिमय बाबू की जेब पर बन आयी होगी।" भवनाथ चिन्तित हो उठे।

पिकलू ने हँसकर तसल्ली दी, "चिंता मत करो दद्दू!

जेवकतरे की वापसी, अरे बहुत मजा आया।"

पिकलू का मिजाज़ अभी बहुत खुश है। हुकुम चाचा से उसने पूछा, "अभी क्या खाया ?"

दाँत निपोरते हुए हुकुम ने जवाब दिया, "खाना ! पर साहेब लोग इसे कहते हैं लच।"

पिकलू बोला, "इसे कहते है ब्रच—सुबह के ब्रेकफास्ट और दोपहर के लच के बीच की चीज होने की वजह से बम्बई मे इसे ब्रच कहते है।"

तेजी से बाहर जाते-जाते पिकलू बोला, "हम लोग कहाँ जायेंगे, क्या करेगे, कुछ तय नही है। हम लोग चलते है। हरिमय दद्दू अब तक बेचैन हो उठे होगे।"

"तुम लोग हमारी चिन्ता मत करना।" बॉक्स कैमरा कधे से लटकाये पिकलू मस्त हो रहा था। उसकी खुशी देखकर दादी-माँ का चेहरा चमक उठा।

भवनाथ बाबू को कोई चिन्ता नही है। पिकलू के साथ हरिमय बाबू और हुकुमसिंह है।

सिर्फ दादीमा ने कहा, "एक रेनकोट ले लो। तुम्हे जुकाम बहुत होता है। बरसात मे कही ठण्ड लग गयी तो मुसीबत होगी।"

पिकलू ने यह सब सुना ही नही। कैमरा लटकाये धडधडाता हुआ वह बाहर निकल गया।

अपना पोता बहुत तेज है, भवनाथ ने मन-ही-मन सोचा। रेनकोट लिये बिना, दादीमाँ को कैसे कहकर चला गया, '*जुकाम के साथ न तो ठण्ड का कोई सम्बन्ध है, न बरसात मे भीगने का।*'

दादीमाँ भौचक होकर बोली, "रत्ती-भर के लडके की बात तो सुनो ! कहता है, पानी मे भीगने से जुकाम नही होता।"

पिकलू दूर से चिल्लाया, "जुकाम होता है वाइरस से!"

भवनाथ फिर अपने विचारो मे डूब गये। हुकुमसिंह और हरिमय बाबू, दोनो ही खासे करेक्टर हैं। कहानी अगर दिमाग मे आ जाय, तो हरिमय बाबू का नाम बदलकर लिख देंगे—रसमय बाबू।

भवनाथ ने आँखे मूँद ली। पर दिमाग मे कुछ भी नही आ रहा था। सिर्फ अखबार मे जुकाम के वाइरस चोरी होने का समाचार बडे बडे अक्षरो मे आँखो के सामने तैर रहा था।

हुकुमसिंह की भी क्या सेहत है! रिक्शे पर चढता है तो लगभग पूरी सीट ही भर जाती है। पिकलू अगर दुबला न होता तो मुश्किल हो जाती। एक रिक्शे मे समाते ही नही दोनो।

सारे कायदे-कानूनो का पालन करते हुए रिक्शावाला काफी तेजी से रिक्शा खीच रहा था। हुकुमसिंह को देखते ही उसने सलाम किया था—सादे कपडे होने पर भी पुलिसवालो को पहचानने मे रिक्शावालो को एक मिनट भी नही लगता।

'चमचम' का ऑफिस और हरिमय बाबू का डेरा एक ही मकान मे था। मकान के बाहर बडे बडे बगला अक्षरो मे लिखा था इन्द्रलुप्त चौधरी।

पर हरिमय बाबू तो खासी मुसीबत मे डाल गये। वे ऑफिस मे थे ही नही। पिकलू के पुकारने पर भीतर से किसी ने ऊँची आवाज मे बताया कि वे गडिया[1] गये हैं। पर हुकुमसिंह इतनी आसानी से छोडनेवाला नही था। उसने मोटे स्वर मे आवाज लगानी शुरू की। अब जाकर हरिमय बाबू की महराजिन और

---

१ एक स्थान का नाम।

नौकर और 'चमचम' के सह सम्पादक विजय निकल आये। विजय ने बडी स्टाइल से ही दरवाजा खोला था, पर हुकुमसिह की इम्पीरियल मूछे देखकर वह बेहद घबडा गया। तुरन्त बात बदलकर बोला, "हरिमय बाबू अचानक दमदम चले गये हैं।"

यह क्या बात हुई ! बात हुई थी कि हम लोग यहाँ आयेगे ! अब पिकलू को अन्दाज हो रहा था कि हरिमय बाबू कितने भुलक्कड हैं।

खुद विजय को भी बेहद गुस्सा आ रहा था हरिमय बाबू पर। बोला, "आप लोगो से यहाँ आने को कहा था ? इतने भुलक्कड आदमी जाने कैसे 'चमचम' जैसा पत्र चलाते है।"

क्या किया जाये ? पिकलू सोच मे पड गया।

विजय बोला, "दुखी मत होइए। आप लोग तो इतने मे ही छुट्टी पा गये। एक बार तो ये अपनी भानजी को श्रीरामपुर ले जाने के लिए हावडा स्टेशन की बडीवाली घडी के नीचे खडा कर आये। भुलक्कड ऐसे कि टिकटघर से निकलकर उसे लिये बिना ही सीधे जाकर रेल पर चढ गये। रिसडा स्टेशन पार करके जब श्रीरामपुर उतरने का समय आया, तब इन्हे ध्यान आया कि भानजी को तो हावडा स्टेशन की बडीवाली घडी के नीचे खडा कर आये हैं।"

इस हद तक पिकलू को विश्वास नही होता। उसने हरिमय बाबू को जितना देखा है, उससे तो लगता है कि उन पर खूब भरोसा किया जा सकता है।

परिस्थिति को काबू मे लाने के लिए अब हुकुमसिह ने मूछ हिला हिलाकर विजय से जिरह शुरू की, "क्या हुआ था ?"

पुलिस की पूछताछ से कौन नही डरता ? विजय डरता-डरता बोला, "बाबू ने आते ही कहा, 'चटपट खाना परोसो, मुझे अभी बाहर जाना है।' कुछ एक चिट्ठियाँ और तार आये थे।

उन्हे देखते-देखते जाने क्या हुआ कि बाबू बोले, 'खाना रहने दो। मैं ज़रा एयरपोर्ट जा रहा हूँ। 'शिशुबन्धु' पत्रिका से कोई आये तो कह देना कि मैं गडिया चला गया हूँ'।"

विजय ने स्वीकार किया कि उसे हरिमय बाबू ने पक्का निर्देश दे रखा था कि विपक्षियो को हर समय गलत रास्ता बताना है। हरिमय बाबू उत्तर जाये, तो कहना होगा कि दक्षिण गये हैं। सोये हो तो कहना है, जागे हैं, जागे हो तो कहना है कि सोये हैं।

अनजाने कण्ठस्वर को पहचान न पाने के कारण ही विजय ने पिकलू से कहा था कि हरिमय बाबू गडिया चले गये है।

पिकलू को अचानक एक बात सूझी। उसने सुना है कि कलकत्ता का नया हवाई-अड्डा बहुत शानदार बना है। पर उसने अब तक देखा नही है। पिकलू ने कहा, "हुकुम चाचा, चलो अपन ट्राम पर चढकर हवाई जहाज देख आये।"

हुकुम चाचा को इसमे ज्यादा दिलचस्पी नही थी। वहा का थाना कलकत्ता पुलिस के इख्तियार मे भी नही है। इसके अलावा ट्राम दमदम नही जाती।

पर पिकलू कहाँ छोडनेवाला था। दमदम के बडे-बडे हवाई जहाज वह देखना चाहता था, फिर वह बम्बई के सान्ताक्रुज के साथ दमदम की तुलना करेगा।

हुकुमसिंह ने दमदम जानेवाली एक मिनी बस रोकी और पिकलू को लेकर चढ गया। हाथ दिखाने का तरीका देखकर ही मिनी-बस के सदा चौकन्ने रहनेवाले ड्राइवर और क्लीनर हुकुमसिंह को पहचान गये थे। कण्डक्टर ने गला खँखारकर कहा, "सरसो के खेत मे भूत!" इशारे से उसने ड्राइवर को सावधानी से बस चलाने

को कहा । मिनी वस के ड्राइवर का शायद वी आई-पी रोड पर खूब तेजी से बस चलाने का इरादा था । पर बस मे ही पुलिसवाला है, जानकर बेचारा मन मारकर रह गया । गजी पहने ड्राइवर ने कण्डक्टर को बुलाकर कहा, "शाम भी हुई तो कहाँ, बाघ का डर है जहाँ !"

कण्डक्टर ने आकर वडी नम्रता मे जानना चाहा, हुकुमसिंह जी कहा तक जायेंगे । सोचा था, वे दो एक स्टॉप बाद ही उतर जायेगे । पर ठेठ दमदम एयरपोर्ट सुनकर उसने दुखी होकर ड्राइवर को बताया, ' पूरी शाम ।"

पिकलू ने उद्विग्न होकर पूछा, "यहाँ क्या बाघ का डर है ?"

कण्डक्टर फिक्क से हँसकर बोला, "नही, हम दूसरे बाघ की बात कर रहे है ।"

एयरपोर्ट पर उतरकर वह विशाल इन्द्रपुरी देखकर पिकलू भौचक्का रह गया । इसके आगे बम्बई का सान्ताक्रुज तो बच्चा है ।

हुकुमसिंह भी एक और सादे कपडेवाले साथी को देखकर बहुत खुश हुआ । पिकलू का परिचय देकर हुकुमसिंह बोला, "डी० सी० साहब का नाती है । बम्बई से आया है हवाई अड्डा देखने ।"

"क्यो ? क्या बम्बई मे एयरपोर्ट नही है ?" ललित बाबू ने पूछा । ललित बाबू भी कलकत्ता पुलिस के कान्स्टेबल है । पर अभी तो हुकुम चाचा ने कहा था कि दमदम कलकत्ता के इख्तियार के बाहर है ।

हुकुमसिंह ने फुसफुसाकर पिकलू को समझाया, "वो लोग 'सेन्रेटरी कण्टरोल' के हैं, जहा पहले तुम्हारे नाना थे ।"

पिकलू हँस पडा । "सिक्योरिटी कण्ट्रोल ! जो लोग विदे-

शियो पर नजर रखते है।"

ललित बाबू जरूर पूर्वी बगाल के आदमी हैं। वे बोले, "मैं अभी हाइयाह ड्यूटी पर हूँ।"

हाइयाह ! यह क्या बला है ? पिकलू की समझ मे नहीं आया। तब ललित बाबू ने समझाया, "उच्चारण की गडवड है—कोई-कोई इसे कहता है हाइजैक। विमान अपहरण।"

हाइजैक तो पिकल जरूर समझता है। पर हुकुम चाचा समझाने लगे, "वी आइ पी रोड पर भी अपहरन होता है—सीधा साधा अपहरन। और एयरपोट पर होता है, इम्पेसल अपहरन।"

"बडी डजरस वात है। हवाई डाकू प्लेन को सीधे अपहरण करने की ताक मे है।" ललित काका ने आखें फाड फाडकर समझाया पिकलू को।

फिर ललित काका बोले, "में जब हूँ, तो सारा एयरपोट दिखा दूँगा। कैसे हवाई जहाज उतरता है, कैसे ऊपर उठता है, कैसे यात्रियो की तलाशी ली जाती है।"

घूम घूमकर एयरपोट देखते देखते ही एक तीखी आवाज सुनायी दी। आवाज जानी पहचानी लग रही थी, पर आदमी इतनी दूर से पहचान मे नही आ रहा था, "पिकलू—मिस्टर पिकलू हैं ना ?"

अरे, ये तो हरिमय वाबू हैं ! गजे सिर पर विदेशी टोपी होने के कारण पहचान ही नहीं जा रहे थे। टोपी खोलकर हरिमय वाबू ने ललित बाबू के आगे अंग्रेजी स्टाइल मे सिर झुकाया, तो पिकलू ने तत्काल पहचान लिया।

हरिमय वाबू के साथ ही एक और अपरिचित सज्जन दिखायी

दिये। वे दोना एयरपोट के रेस्तराँ मे बैठे कोकाकोला पी रहे थे।

हरिमय वावू ने झटपट पिकलू और हुकुमसिह का परिचय दिया। ललित काकू का परिचय खुद पिकलू ने ही करा दिया।

वे सज्जन मजाक मे बोले, 'तकदीर से हम लोगो का प्लेन हाइयाह नही हुआ—नही तो आपका काम वढ जाता।"

ललितवावू हसे जरूर पर उनके चेहरे मे ही पता चल गया कि इस तरह की अपशकुनी वात उन्हे पसन्द नही है।

अब हरिमय वावू ने गर्व से हसते हुए कहा, "मीट माइ भतीजा—रामानुज चौधरी। कभी यह 'चमचम' का सह-सम्पादक था। अब वहुत समय मे फॉरेन मे है।"

रामानुज नाम तो खासा नयी चाल का सा लगता है। हरिमय वावू ने समझाया, "राम के अनुज अर्थात छोटे-भाई अर्थात् लक्ष्मण। इसलिए अगर भूल जाओ तो आसानी से लक्ष्मण कहकर पुकार सकते हो। कोई दिक्कत नही होगी।"

रामानुजवावू ने इसी बीच जान कब रेस्तरा के बैरा को आखो से इशारा कर दिया था। उसने वफ मे ठण्डी की हुई और तीन बोतल लाकर फटाफट खोल दी।

हुकुमसिह को पाइप से कोकाकोला पीने की आदत नही थी। इसीलिए उसने वोतल से पीना शुरू किया—फलस्वरूप इम्पीरियल मूछो के नीचे का हिस्सा भीगकर ललछौहा हो उठा।

माल असली ही लगता था। क्योकि कुछ देर मे ही हुकुमसिह ने स्टैण्डर्ड साइज की तीन डकारे लेकर हैटट्रिक की।

एयरपोर्ट के रेस्तरा की छोटी मेज के चारो ओर बैठे वे लोग कोल्ड ड्रिक्स पी रहे थे। पिकलू ने अब चारो ओर देखना शुरू किया।

रेस्तरा की मेजे काफी सटी-सटी सी थी। साथवाली मेज पर भी दो लोग बैठे थे। उनमे एक तो शायद इण्डियन ही थे,

और दूसरे कौन से देश के थे, यह पिकलू समझ नहीं पाया। लम्बा चौड़ा रोबीला चेहरा। मूँछें भी लेटेस्ट स्टाइल की। सिर पर घने घुंघराले बाल—पर बिल्कुल जंगल-जैसे। लगता था उनमें कभी कंघी छुआयी ही नहीं जाती।

हरिमय बाबू ने अब शर्मिन्दगी के मारे जीभ काट ली। पिकलू से बोले, "मुझे बहुत अफसोस है। घर लौटते ही देखा, भतीजे रामू का एक्सप्रेस तार! तार देखकर तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। मैं तो सोचता था कि रामू को अब कभी देख ही नहीं पाऊँगा! पर इसी भतीजे—रामू ने 'चमचम' के टेलिग्राफिक नम्बर पर तार दिया कि वह कलकत्ता के ऊपर से गुजर रहा है। चाहूँ, तो उससे मिलने एकबार दमदम आ जाऊँ।"

रामानुज चौधरी के दांत एकदम उजले मोतियों जैसे थे। चेहरे का रंग काला होते हुए भी उसमें चमक थी। देह भी खासी हट्टी-कट्टी। पर हरिमय बाबू के शरीर के साथ भतीजे की कद-काठी का कोई मेल नहीं था। हरिमय बाबू नाटे थे, भतीजा लम्बा। हरिमय की नाक रिवॉल्वर की नली जैसी थी, तो भतीजे की नाक चपटी।

ठण्डी बोतलें खतम होने पर हुकुमसिंह पुराने दोस्त ललित-बाबू से बातें करने के लिए उठ खड़ा हुआ।

रामानुज अब तक चुप थे। अब पूछा, "ये लोग कौन थे?"

हरिमय बाबू ने भतीजे से कुछ भी नहीं छिपाया। सब बता दिया—कि ये लोग सादी पोशाक में पुलिसवाले हैं, और पिकलू को लेकर घूमने निकले हैं।

पिकलू को लगा कि पास की मेजवाले लोग भी उनकी बातें बड़े गौर से सुन रहे हैं। अब वे लोग मुस्कुराते हुए पास आ गये।

रामानुजबाबू ने परिचय करा दिया, "मिस्टर सिंगारवेलु अय्यर—मेरे फ्रेण्ड, और हम एक ही हवाई जहाज में हांगकांग

से कलकत्ता आये है। और ये हैं मिस्टर पिकल।"

"पिकल नही – पिकल का मतलब तो होता है अचार! ये हैं पिकलू।" हरिमय बाबू ने तुरन्त प्रतिवाद किया। नाम बिगाडना उन्हे बिल्कुल सहन नही है।

इन दोनो के कपडे लत्ते और सामान वगैरह देखते ही पता चल जाता था कि ये सीधे फॉरेन से आये है।

भतीजे के गव से गर्वित हरिमय बाबू बहुत खुश होकर बोले, "फॉरेन की बात ही और है। रामू, तेरे बदन से सेण्ट की सुगन्ध आ रही है ना ?"

पिकलू को शर्म आ रही थी। जब दो मेहमान बगला नही समझ सकते तो शिष्टाचार की खातिर अग्रेजी मे ही बात करनी चाहिए।

पर हरिमय बाबू बगला मे बोले, "माइ डियर भतीजा मुझे इतने दिन बाद वापस मिला है, अब जी खोलकर बाते करके दिल हल्का करना चाहता हूँ—अग्रेजी का सवाल ही नही उठता। *मिस्टर सिंगारवेलु के ताऊ यदि यहाँ आते तो वे लोग मद्रासी* मे ही तो बात करते।"

ईस्! पिकलू को बेहद शर्म आ रही है। हरिमय बाबू को मालूम होना चाहिए था कि मद्रासी नाम की कोई भाषा है ही नही। इन सज्जन की भाषा जरूर तमिल होगी।

"सिफ फॉर्टी एट ऑवस"—अर्थात् अडतालिस घण्टे के लिए हरिमय बाबू का भतीजा कलकत्ता आया है। सिफ ब्रेक जर्नी है। हागकाग से जेनेवा जाते हुए ये लोग कलकत्ता रुके है।

पिकलू हैरान होकर रामानुज बाबू की चीज देख रहा था। उनके गले, कन्धे, कमर की बेल्ट, सबसे कितनी ही अनजानी चीजें लटक रही थी। बहुत दिन पहले बिजली की रेल मे पिकलू ने ऐसा एक फेरीवाला देखा था। उसकी आखो पर भी रगीन

चश्मा था। उस आदमी के सारे शरीर पर मेडल की तरह रंग-बिरंगे प्लास्टिक के कंघे, जूते के ब्रश, छुरी, पेन, चम्मच, चश्मे लटक रहे थे।

रामानुज चट से चश्मा खोलकर पिकलू की ओर बढ गये। "पहन कर देखो। स्पेशल पोलारॉयड लेंस है—न्यूयॉर्क मे अभी ही निकला है।"

चश्मा लगाने का लोभ रोक न सका पिकलू। आह, आखे कैसी ठण्डी हो गयी—मानो आखो से आइसक्रीम खा रहे हो।

मिस्टर अय्यर के शरीर से भी तरह तरह के अनाखे औजार लटक रहे थे। अचानक एक यन्त्र खोलकर वे अपने गालो पर फेरने लगे। हरिमय बाबू ने फुसफुसाकर कहा, "बैटरी से चलने वाला आटोमेटिक उस्तरा है, दाढी बनाने का! ऊऽऽफ! न साबुन, न पानी, न ब्लेड—जादू की तरह दाढी साफ। यह सुख तो सम्राट शाहजहाँ को भी नही मिला। पिकलू, तुम्हारे दाढी निकले तब उस तरह की एक मशीन जुटा लेना। मेरी तरह गाल छिलने की मुसीबत तुम्हे नही उठानी पडेगी।"

ताऊ की बात सुनकर रामानुज बोला, "मोस्ट आर्डिनेरी फिलोशफ। मिस्टर अय्यर को सारी दुनिया के चक्कर लगाने पडते है। अमीरो की तरह कायदे करीने से दाढी बनाने की फुरसत कहाँ है?"

हरिमय बाबू और यन्त्रो को भी तिरछी नजर से देख रहे थे। टेपरेकॉर्डर, टेलिफोटो लेंस, ट्रांजिस्टर रेडियो, तरह-तरह के कैमरे और फ्लैश। सारे जीवन मे उन्होने ऐसी चीजे नही देखी थी।

हरिमय बाबू को पुरानी बाते याद आ रही थी। इसी रामू के पास चप्पलो की सिर्फ एक जोडी थी। मैट्रिक की परीक्षा के समय एक पेन के लिए कितना रोया धोया था रामू! फिर पढाई-लिखाई करके रामू कितने ही दिन बेकार बैठा रहा। आखिर

जाकर एक स्टेशनरी की दुकान पर कोई छोटा-सा काम मिला था। पर उससे रहने खाने का खर्च भी नहीं निकलता था।

आखिर एक दिन अचानक रामू गायब हो गया। पहले तो पता ही नहीं चला कि कहाँ गया, क्या हुआ। इसके बाद रामू ने विदेश से एक रंगीन पिक्चर पोस्टकार्ड भेजा। वह तस्वीर हरिमय बाबू ने आज भी बहुत जतन से सँभालकर रख छोड़ी है। अन्दाज लगाया, भतीजा अब विदेश में जरा हैसियतवाला बन गया है।

बीते दिनों की बातें सोचकर हरिमय बाबू की आँखें भरी आ रही थी। पर यह रोने का समय नहीं था। भतीजे को लेकर वे घर जाना चाहते थे।

अपना सारा सामान लिये हुए एयरपोर्ट के गेट के पास आकर उन लोगों ने टैक्सी के लिए लाइन लगायी। इसी बीच हुकुमसिंह भी दोस्त से गप्पे निपटाकर लौट आया था।

घुँघराले बालोंवाली एक मेम अपना सामान लेकर एक टैक्सी पर चढ़कर सर-से निकल गयी। इसके बादवाली टैक्सी में मिस्टर अय्यर ने अपना सामान चढ़ा लिया। लम्बा-चौड़ा, उलझे बालोंवाला गोरा कुछ दूर चुपचाप गम्भीर होकर खड़ा था। ड्राइवर गाड़ी का दरवाजा बन्द करने जा ही रहा था कि मिस्टर अय्यर पुकार उठे, "मिस्टर चौधरी, आइए। आप भी तो कॉनवालिस होटल में ही ठहर रहे हैं।"

हरिमय बाबू हाहाकार कर उठे, "मेरा भतीजा दो दिन के लिए कलकत्ता आया है, वह भला होटल में क्यों ठहरेगा? 'चमचम' के ऑफिस में दो जनों के लिए आराम से जगह हो जायेगी।"

मिस्टर अय्यर तब तक टैक्सी से उतर पड़े थे। पर रामानुज चौधरी कहा है ? वे उस समय पिकलू को कुछ दूर खड़ा करके पूछ रहे थे, "यहा फोटो खीची जा सकती है ना ?"

आजकल हर जगह फोटो खीचने की परमिशन नही रहती। कैमरा निकालते ही पुलिस पकड लेती है पर पिकलू बाबू की तस्वीर का मामला था, इसलिए हुकुमसिह ने रोका नही। बल्कि बोला, "जल्दी से मुन्ना बाबू का फोटू खीच लीजिए।"

रामानुज चौधरी कैमरे का फोकस ठीक कर रहे थे कि तभी मिस्टर सिगारवेलु अय्यर और हरिमय बाबू भी पास आ खडे हुए।

मिस्टर अय्यर ने पूछा, "क्या तय किया आपने ? होटल मे ही ठीक रहता। दिन-भर आप ताऊ के साथ रहे—रात को होटल म चले आये।"

हरिमय बाबू को समझाता हुआ रामानुज बोला, "हमे एयराप्लेन कम्पनी से ले ओवर मिलेगा। कॉनवालिस होटल मे मेरे और मिस्टर अय्यर के लिए कमरे आरक्षित हैं।"

ले ऑफ के बारे मे हरिमय बाबू ने सुना है। ले ऑफ की वजह से कारखानो के लोगो को घर पर बेकार बैठना पडता है, बहुत तकलीफ होती है। उन्होने सोचा, शायद एयरोप्लेन कम्पनी मे भी कोई गडबड हुई है।

इस पर भतीजे ने हँसकर कहा, "ताऊजी, ले ऑफ नही, ले ओवर। मतलब दामादगिरी—प्लेन कम्पनी के खर्च पर हम होटल मे रहगे। जेब से एक कौडी भी खर्च नही होगी। बल्कि एयरपोर्ट से होटल जाने का टैक्सी-किराया भी वे ही लोग देंगे।"

आखिर मे रामानुज ने कहा, "मिस्टर अय्यर, आप चलिए। मैं ताऊजी के घर होता हुआ कानवालिस होटल आ रहा हूँ।"

अय्यर की टैक्सी तीर की तरह तेजी से एयरपोर्ट से निकल

गयी। सिर्फ मिस्टर रामानुज चौधरी की चीजे सडक पर पडी रही।

हरिमय बाबू बौखलाकर भतीजे को डाटने लगे, "कीमती चीजे इस तरह बिखेरकर मत रखाकर रामू ! यह कलकत्ता शहर है।"

दबी नजर से रामानुज ने एक बार सब चीजो का हिसाब मिला लिया। फिर एक कैमरा उठाकर पिकलू के पास चला आया।

पिकलू तब भी गेट के पास तना हुआ खडा था। फोटो उतरवाने की बात सुनकर ही उसे जाने कैसा तनाव हो जाता है। हालाकि फोटो खिचवाने का उसे शौक बहुत है।

इस बीच अपने बॉक्स कैमरा से उसने एयरपोर्ट की एक तस्वीर खीच ली थी। उस तस्वीर मे हरिमय बाबू कैसे दिखायी देंगे, यह सोच सोचकर उसे बहुत मजा आ रहा था।

हरिमय बाबू तो देख ही नही पाये कि पिकलू ने तस्वीर खीची है, पर मिस्टर अय्यर और वह लम्बा चौडा आदमी कनखियो से पिकलू को फोटो खीचते देखकर बहुत गम्भीर हो गये थे। पिकलू को लगा, कि विशाल, लम्बे चौडे उस गोरे को पिकलू से फोटो खिचवाना अच्छा नही लगा। पिकलू ने सुना है, कई लोग बिना इजाजत के फोटो खीचने पर बहुत नाराज होते है।

रामानुज ने अब चटपट पिकलू की तस्वीर उतार ली और उस रोबीले गोरे ने अचानक आकर दबी दबी हँसी हँसते हुए उन सबके बदन पर सेण्ट स्प्रे कर दिया।

सेण्ट की सुगन्ध से मस्त हरिमय बाबू खूब खुश होकर बोले, "देखो तो, हम लोगो के ऊपर इन्होने कितना सेण्ट बरबाद कर दिया। शायद इनके देश मे ऐसे ही सेण्ट छिडककर दोस्ती की जाती है।"

इसी बीच एक और खाली टैक्सी आकर रुकी, और हरिमय बाबू के निर्देश के अनुसार कुली उसमे रामानुज बाबू का सामान

चढाने लगा।

भवनाथ सेन आराम कुर्सी पर बैठे-बैठे हुक्का गुडगुडा रहे थे। घडी म पौने आठ बज थे। पिकलू की दादी इसी बीच दो बार आकर घडी देख चुकी थी—कोई चिन्ता रहने पर वे बार-बार दीवाल घडी देखती है।

भवनाथ बोले, "पिकलू की कोई फिक्र नही है—साथ मे हुकुमसिह और हरिमय बाबू हैं।"

इसी समय वे तीनो शोर मचाते हुए घर मे घुस आये।

खुशी से डगमगाते हुए हरिमय बाबू ने छोटे बच्चे की तरह कहा, 'गजब है। सोचा भी नही जा सकता।"

पिकलू भपाक से एक सोफे पर कूद पडा। फिर बोला, "ऊ ऽऽ फ, आज दिन-भर क्या मस्ती से कलकत्ता की सैर हुई है कि बस।"

हरिमय बाबू बोले, "आपका पोता चाहे तो बडे आराम से एक किताब लिख सकता है—'पिकलू का कलकत्ता भ्रमण—पहला अध्याय'।"

पहला अध्याय इसलिए, कि दूसरे अध्याय की सैर कल होगी। हरिमय बाबू ने अब पिकलू की दादीमा से अनुरोध किया, "जरा अपने समधी को कह दीजिएगा कि कल हमे अपने दल मे हुकुमसिह चाहिए। हुकुमसिह के सशरीर उपस्थित रहने से हम लोगो को कोई चिन्ता ही नही रहती।"

दादीमाँ बोली, "बैठिए, कुछ खाकर ही जाइए।"

हरिमय बाबू बोले, "बैठने की गुजाइश ही नही है। जुकाम से नाक बद है।"

भवनाथ को कुछ आश्चय हुआ क्योकि हरिमय बाबू हमेशा

शान बघारते थे कि उन्हें सर्दी खाँसी नही होती।

हरिमय ने कुछ एक बार रूमाल से नाक साफ करने की व्यथ चेष्टा की। फिर बोले, "पता नही, अचानक ही क्या हो गया—अभी ही दवा की दूकान पर जाना पड़ेगा।"

दादीमाँ ने कहा, "नाक की ड्रॉप्स और इनहेलर तो हमारे घर मे ही है।"

इनहेलरवाली बात हरिमय बाबू ठीक समझ नही पाये। बोले, "वो नाक के अन्दर घुसायी जानेवाली फाउण्टेनपेन जैसी चीज़? मैंने कभी काम मे नहीं ली—उसे तो देखते ही मुझे हँसी आती है। खैर, दीजिए। जब तकलीफ हो ही गयी है—तो इलाज भी वैसा करना ही पड़गा।"

हरिमय बाबू जब नाक मे दवाई डाल रहे थे तब भवनाथ ने गौर किया कि हुकुमसिंह भी जुकाम के मारे बदहाल है।

दादीमा ने हुकुमसिंह की नाक मे भी दवा की कुछ बूदे डाली। तुरन्त वह इतनी जोर से छीका कि पूरा मकान हिल उठा।

भवनाथ ने फिर गौर किया कि जिस पिकलू को हरदम जुकाम होता ही रहता है, उसे कुछ भी नहीं हुआ है। इस पर उन्हे कुछ ताज्जुब ही हुआ।

नाक सुडकते सुडकते हरिमय बाबू बोले, "आज क्या मजा आया है कि बस! श्यामबाजार के मोड पर एक बड़ा सा पोस्टर देखकर मेरा भतीजा तो हैरान रह गया, उस पर लिखा था 'बदमाशो के जाल मे पड।' वह बेचारा तो बिल्कुल नवस ही हो गया। बोला, 'वल्ड के किसी भी शहर मे जनता से इस तरह बदमाशो के जाल मे पडने का अनुरोध नही किया जाता'।"

"फिर?" भवनाथ ने मुस्कुराकर पूछा।

"तब मजबूर होकर भतीजे के आगे टॉप सीक्रेट का पर्दा उठाना पडा। 'चमचम' के विशेषांक के स्पेशल उपन्यास का

नाम है 'बदमाशो के जाल मे'—जनता से वही पढने को कहा जा रहा है।"

अब भवनाथ सेन ठठाकर हस पडे। हरिमय बाबू बोले, "रुकिए, हँसी की बात अभी और भी है। मेरे भतीजे के फ्रेण्ड मिस्टर सिंगारवेलु अय्यर शायद कभी ढाका मे रहे है। अच्छी बगला जानते हैं। मेरा दूसरा पोस्टर देखकर जनाब बेहद घबरा गये। धमतल्ला स्ट्रीट के एक एक लैम्प पोस्ट पर पब्लिसिटी की है 'बदमाशो के जाल मे फँसे है ? नही तो अभी तलाश कीजिए।' यह पिकलू भी बेवकूफो की तरह बोल उठा, लगता है, पुलिस ने यह विज्ञापन लगाया है। पुलिस जानना चाहती है कि सच ही कोई बदमाशो के जाल मे फँसा है या नही।"

पिकलू हँसते-हँसते बोला, "पता है दद्दू, मिस्टर सिंगार-वेलु का मुह सूख गया। पूछने लगे, यहा की पुलिस क्या बहुत चौकन्नी है ?"

हरिमय बाबू बोले, "विदेशी के सामने स्वदेशी पुलिस की बदनामी मैं कैसे सहता ? तुरन्त बोला, पुलिस को पता है कि 'दुश्मन पास ही है।' चीनी युद्ध के समय जो पोस्टर 'चमचम' मे छपाया था, तकदीर से उसकी वर्डिंग याद रह गयी।"

हरिमय बाबू ने एक बार फिर नाक मे सर्दी की दवाई डाली। पर फिर बोले, "नाक बन्द ही होती जा रही है। साँस भी बडी मुश्किल से ले पा रहा हूँ।"

अब और गप्प नही। हरिमय बाबू और हुकुमसिह अब उठ खडे हुए।

रात के खाने पर बैठकर पिकलू बोला, "दद्दू, एक बडी अजीब बात हुई।"

बात अजीब ही थी। जेब से एक रगीन फोटो निकाली पिकलू ने। यह तो पिकलू की ही फोटो थी—एयरपोर्ट के सामने सीना फुलाये हँसता हुआ खडा है पिकलू। चित्र देखकर दादीमाँ बडी खुश हुई।

पिकलू बोला, "हरिमय दद्दू के भतीजे ने जादू ही दिखला दिया। मुझसे बोले, हँसो ! म हँसा, उन्होने कैमरे का बटन दबाया। फिर वन टू थ्री करके बीस तक गिनती गिनी।" तब कैमरे मे पिकलू की यह रगीन तस्वीर निकल आयी। कितने ताज्जुब की बात है !

पिकलू खुद भी तस्वीरे खीचता है। बॉक्स कैमरे से तस्वीरे खीचकर फिल्म स्टूडियो मे भेज दता है, वहा नेगेटिव धुलते है। डेवलप किये गये नेगेटिव से डाकरूम में एक दूसरे कागज़ पर एक एक करके पॉजिटिव तस्वीर छापी जाती है। कितना समय लग जाता है। पर रामानुजबाबू का यन्त्र आश्चयजनक है—बटन दबाते ही हाथो मे तस्वीर आ जाती है।

रोटी चबाते हुए भवनाथ बोले, "मैंने पढा तो है। इसे कहते है पोलारॉयड इन्स्टैण्ट कैमरा। मैंने देखा नही है कभी। शुरू-शुरू मे सिफ काले सफेद चित्र आते थे। लगता है, अब रगीन तस्वीरे उतारनेवाला कैमरा भी बन गया है।" भवनाथ ने अग्रेजी इन्स्टैंण्टोमैटिक का मन ही मन एक देशी नाम भी सोच लिया तात्क्षणिक कैमरा।

कैमरे से सीधे रगीन तस्वीर निकल आते देखकर ही पिकलू को ताज्जुब नही हुआ था। एक और भुतहा किस्सा भी हुआ। रामानुज बाबू जब पिकलू के हाथो मे तस्वीर द रहे थे, तभी उसे अचानक याद आ गया कि आज सुबह स्नान नहीं हुआ है। पिकलू ने कहा, "पता है दद्दू, तस्वीर मे से पसीने की सी गन्ध आयी मुझे।"

भवनाथ ठठाकर हँस पडे । "क्या कहा, तेरी तस्वीर से तेरे पसीने की गन्ध आ रही थी ?"

पिकलू ने बताया कि उसने वह तस्वीर चुपके चुपके हरिमय दद्दू और हुकुमसिह को भी दिखायी थी । पर जबदस्त जुकाम के कारण उन लोगो की नाक बन्द हो गयी थी—कोई गन्ध सूघ ही नही सके । पर हरिमय बाबू किसी हालत मे स्वीकार नही करग कि उनकी नाक मे कोई गन्ध नही घुस पा रही है ।

तस्वीर निकालकर अब पिकलू ने भवनाथ के हाथो मे दी । सचमुच यह तो भुतहा काण्ड है ! उन्हे भी पसीने की ग ध लग रही थी । दादीमा ने कहा, "सब पागलपन है तुम लोगो का । दिनभर तस्वीर तेरी ज़ेब मे रही है—इसी से ऐसा लगता है।"

दादीमा अन्दर चली गयी, पर पिकनू का सन्देह कम नही हुआ । तस्वीर को उसने फिर से सूघकर देखा । फिर दादा से कहा, "जरा मेरे निकर की दाहिनी जेब तो सूघकर देखो— अमरूद की खुशबू आ रही हे ना ?"

तस्वीर मे जहा जेब दिखायी दे रही थी, वहा नाक ले जाते ही भवनाथ को पके अमरूद की तेज खुशबू महसूस हुई । पिकलू ने कहा, "मेरी दाहिनी जेब मे एक अमरूद था । पर बायी जेब जब सूघी तो कोई ग ध नही मिनी ।"

बात तो सचमुच ही भुतही सी लगी भवनाथ का । पर भूत-प्रेत पर पिकलू को खास विश्वास नही है । उसने कहा, "बात भुतही नहीं है रहस्यमय है !" इस शब्द का भवनाथ अपनी कहानियो मे अक्सर प्रयोग करते है ।

इसके बाद भवनाथ ने पिकनू को पास बठाकर पूछा, "कहा-कहा गये थे तुम लोग ?"

पिकनू घडाघड सब बता गया । एयरपोट पर हरिमय बाबू के भतीजे रामानुज के अलावा उसके दोस्त मिस्टर अय्यर से

भी परिचय हुआ। उनके साथ एक और भी लम्बा-चौडा विदेशी था—किस देश का, यह पिकलू को ठीक से पता नही चला। हो सकता है, वह मिली-जुली जातियो का हो। देखने मे एकदम पहलवान लगता है। हुकुमसिह से मिलकर वे लोग भी खुश हुए थे। अगर हुकुमसिह न होता तो एयरपोट पर पिकलू का चित्र खींचने की किसी को हिम्मत ही नही होती। फिर 'चमचम' ऑफिस से होते हुए रामानुजबाबू वगैरह न्यू मार्केट के पीछेवाले कॉनवालिस होटल म चले गये।

हरिमय बाबू ने भतीजे से बहुत रिक्वेस्ट की थी 'चमचम' ऑफिस मे ही ठहरने के लिए। रामानुज तो तैयार भी हो गये थे, "पर उन मि० सिगारवेलु के दबाव मे आकर रामूकाकू को होटल ही जाना पडा।"

"बहुत पुराने दोस्त होगे।" पिकलू की बात सुनते सुनते भवनाथ ने कहा।

पिकलू ने कहा, "बिल्कुल ही नही। हागकाग के एयरपोट पर ही परिचय हुआ। दोनो को ही गपशप का बहुत शौक है।"

वहा चाय-वाय पीकर कलकत्ता की सैर की योजना बनी।

पिकलू ने कहा, "पता है दद्दू, उनके पास तरह तरह की अद्भुत चीजे है। उस लम्बे गोरे के पास तो एक ऐसा बढिया सेण्ट है कि बस! एयरपोट पर उसने एक लम्बी, पतली शीशी निकाली, अगुली से ज़रा सा दबाया कि बस—हरिमयदद्दू और हुकुमसिह के ऊपर स्प्रे हो गया। विलायती सेण्ट की उस खुशबू से हरिमयदद्दू तो बहुत खुश—स्वदेशी आन्दोलन के बाद हरिमय दद्दू ने यही पहली बार सेण्ट लगाया है।"

"उस गोरे ने तुम लोगो के साथ बातचीत भी की?" भवनाथ ने जानना चाहा।

"बिल्कुल नही। उन्हे शायद अग्रेज़ी नही आती। पर हम

लोगों को देखते ही मुस्कुरा देते हैं—हम भी मुस्कुरा देते हैं। उनके साथ रामानुजबाबू या सिगारवेल का कोई सम्बन्ध नहीं है। एक ही हवाई जहाज से हागकाग से आये हैं, बस इतना ही और एक्सीडेण्टली एक ही होटल में ठहरे हैं।"

पिकलू कहता गया, "हरिमयदद्दू के भतीजे की बात सुनकर तुम्हें बहुत हँसी आयेगी दद्दू। सुना है, रामानुजकाकू पढ़ने-लिखने में एकदम फिसड्डी थे। तस्वीर खींचने का उन्हें बहुत शौक था। और " अब पिकलू से हँसी रोकी नहीं गयी।

दादा ने उसकी ओर देखा। पिकलू बोला, "व-हो-त पेटू थे। चॉप, कटलेट, घुडमुड से शुरू करके दही, सन्देश, रसगुल्ला तक सभी कुछ खाने का उन्हें बहुत चाव रहता था। दो-एक बार हरिमयदद्दू की जेब से पैसे भी चोरी हुए थे—और हर बार ही हरिमयदद्दू को वेस्टपेपर बास्केट में मिठाई की दूकान का खाली डिब्बा भी पड़ा हुआ मिला था। पर प्रमाण न होने के कारण हरिमयदद्दू कभी भी कुछ नहीं कह सके।"

पिकलू बोला, "लेकिन इसके बाद रामूकाकू को घर में भागना पड़ा। रबड़ी के चूरन की चोरी पकड़ी जाने के डर से।"

भवनाथ को पता है कि हरिमय बाबू को रबड़ीचूर्ण की कैसी लत है। और लोगों को बीड़ी, सिगरेट, सुंघनी, तम्बाकू का नशा होता है। पर हरिमय बाबूवाला स्पेशल नशा तो शायद दुनिया-भर में और किसी का नहीं होगा। ट्राम, बस, सड़क कहीं भी चलते-चलते अगर बीच बीच में तम्बाकू की तरह रबड़ीचूर्ण न फाकते रहें, तो उनका सर चकराने लगता है। नशे ने उन्हें अच्छी तरह अपनी गिरफ्त में ले रखा है। रबड़ीचूर्ण का मतलब है—हॉर्लिक्स पाउडर।

रामूकाकू ने दोपहर हरिमय बाबू के कमरे में घुसकर पूरी एक शीशी रबड़ीचूर्ण का कल्याण कर दिया था। उसके बाद

ही जो डर के मारे घर से भागे—तो फिर उनका पता ही नही चला। रामानुजकाकू कैसे फॉरेन पहुँचे, यह भी एक कहानी है। पर वहाँ रामानुजकाकू ने अच्छा नाम कर लिया है। सुना है, रेडियो पर एक बडी भारी नौकरी करते हैं। उसी सिलसिले मे तेहरान और जेनेवा के रास्ते मे कुछ समय के लिए कलकत्ता ठहर गये है।

हागकाग मे मि० सिगारवेलु के साथ खूब बाते हुई। उन्हाने कहा, "तो मैं भी तुम्हारे साथ कलकत्ता की सैर कर आता हूँ।"

"पता है, हरिमय दद्दू ने भतीजे को क्या उपहार दिया ? एक शीशी रवडीचूर्ण। बोले, इस मामूली-सी चीज के लिए तूने घर बार छोड दिया! रामूकाकू खूब हँसे—अब वे ये सब चीजे नही खाते।"

भवनाथ ने पूछा, "फिर तुम लोग कहा गये ?"

मुह मे एक जापानी लाइमजूस ठूसकर पिकलू बोला, "कॉन-वालिस होटल मे चाय टोस्ट लेकर हम पाचो बाहर निकल पडे।"

आजकल टैक्सीवाले पाच आदमियो को एक टैक्सी मे लेना नही चाहते पर हुकुमसिंह के साथ रहने से कोई असुविधा नही हुई। एक टैक्सीवाला ज्यादा किराया माँगने चला था, पर हुकुमसिह को देखकर उसने शम से जीभ काट ली। माफी माँग-कर बोला, स्लिप ऑफ टग हो गयी। अब कभी भी वह ज्यादा किराया नही मागेगा।

इसके बाद भवनाथ ने सोचा था कि ये लोग कलकत्ता की मशहूर जगहो जैसे विक्टोरिया मेमोरियल, चिडियाघर, नेशनल लाइब्रेरी, म्यूजियम वगैरह गये होगे।

पर वडा ताज्जुब है! वे लोग सबसे पहले गये हरिसन रोड की एक प्रसिद्ध चॉप कटलेट की दूकान पर। सुना कि इतने बरसो बाद भी दिलखुशा रेस्तरा को खुशबू रामूकाकू की नाक

मे थमी हुई है। यहा का कविराजी चिकन-कटलेट तो वल्ड मे बेस्ट है। दो सौ गज दूर से खुशबू की लपटे उडाता है। उस खुशबू के सहारे ही दूकान मिल गयी। उसके सामने खडे होकर रामकाकू ने एक तस्वीर खिचवायी। बटन दबाया मिस्टर सिगार-वेलु अय्यर ने।

इसके बाद एक प्रसिद्ध कचौडी समोसे की दूकान पर गये। वहा असली घी की सुगन्ध मस्त किये दे रही थी। हरिमय-बाबू के भतीजे ने आख बन्द कर देर तक उस पवित्र गन्ध को सूघा। वहाँ भी तस्वीर खिची।

टैक्सी अब दौड चली एस्प्लेनेड के पास उस प्रसिद्ध मुगलई पराँठो की दूकान की ओर। अनादि की दूकान पर भी खुशबुएँ लहक रही थी। रामकाकू बोल, "यह सुगन्ध तुम्हे ढूढे नही मिलेगी कही—सब देशो की रानी है मेरी यह जन्मभूमि! मुगलई पराठ और गोश्त खाते खाते तस्वीर खीचने का प्रस्ताव आया। इस हालत मे तस्वीर खीचने पर आपत्ति भी हुई थी। कई सज्जन महिलाओ के साथ बैठ मुगलई पराठे और गोश्त खा रहे थे। इस हालत मे तस्वीर खीचने मे आपत्ति तो हो ही सकती है। पर हुकुमसिंह के साथ रहने के कारण किसी ने विरोध नही किया। रामकाकू ने परम आनन्दित होकर तस्वीर खीची।

टैक्सी पर चढकर वडे बाजार के सत्यनारायण पार्क की तरफ जाते जाते रामकाकू बोले "यही सब दूकान हैं कलकत्ता की अमूल्य सम्पदा। एक-आध ऐतिहासिक मॉनुमेंट नही भी रही तो क्या पर भीमनाग, गगूराम, पूँटीराम, तिवारी, गुप्ता, शर्मा के बिना कलकत्ता शहर की कल्पना ही नही की जा सकती।'

हरिमय बाबू उत्साहित होकर बोले, "नमकीन को क्यो छोडे दे रहो हो? नानकिंग, निजाम, चुग-वा, चाचा, रॉयल। स्वाद की बात करो, या खुशबू की, हर दूकान की अपनी खासियत

है। आँखो पर पट्टी बाँधकर ले आने पर भी, सिर्फ गन्ध सूँघकर ही हज़ारो लोग बता देंगे कि कौन सी दूकान पर ले आये हो।"

इसी समय मिस्टर अय्यर बोल पड़े, "लोग तो कलकत्ता को सुगन्धो के शहर के रूप ही जानते है—पर ऐसी सुगन्ध पृथ्वी पर और कहाँ है?"

बडा बाजार की तिवारी की दूकान पर सोनपपडी बिक रही थी। भीड भाड मे वहाँ तक टैक्सी ले जाना मुश्किल था, पर हुकुमसिंह के डर से टैक्सीवाले ने असम्भव को भी सम्भव कर दिखाया। सोनपपडी खाते-खाते यहाँ भी तस्वीर खीची गयी। इसके बाद चितपुर। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के घर और नेपाल हलवाई की दूकान मे से उन्होने नेपाल की दूकान ही चुनी।

हरिमय बाबू पिक्लू से बोले, "सोच रहा हूँ, भतीजे से एक अनुरोध करूँ। 'चमचम' के विशेषाक के लिए वह कलकत्ता का एक स्पेशल खाद्य-मैप तैयार कर दे—कहाँ, किस सडक पर कौन-सी प्रसिद्ध खाजे की दूकान है, उसमे सिर्फ यही दिखाया जायेगा।"

बडे उत्साह से हरिमय बाबू बोले, "कल्पना नही की जा सकती कि क्या होगा। निकलने के पन्द्रह मिनट के अन्दर अगर 'चमचम' के सारे अक खतम न हो जाये तो मैं सम्पादन छोड दूगा।"

दिन-भर घूमने फिरने के कारण पिकू को नीद आ रही थी। बाकी बाते कल सुनी जायगी। अपने कमरे मे जाने से पहले पिक्लू गम्भीर हो गया। बोला, "दद्दू, सारी तस्वीरे उसी तात्क्षणिक कैमरे से ही तो खीची गयी थी। कितनी सुन्दर रगीन तस्वीरे थी सब। पर।

"पर क्या? कह ही डालो।" भवनाथ ने पोते को हिम्मत बँधायी।

पिकलू बोला, "चु ग-वा की तस्वीर मैंने एक बार हाथ मे ली थी। मुझे लगा कि तस्वीर मे से चिकन फ्राइड राइस की खुशबू आ रही है।"

"हुकुमसिंह और हरिमय बाबू को पता नही चला ?"

"उन्हे कैसे पता चलता ? वे लोग तो जुकाम के मारे आकछी-आक्छी कर रहे थे।"

पिकल कमरे की ओर चला जा रहा था। तभी भवनाथ ने पुकारा, "पिकलू !"

पिकल दादा के पास लौट आया। दादा ने पूछा, "तुम लोगो के दल मे किस-किसको जुकाम हुआ है ?"

दादा के सवाल पर पिकलू हँस पडा। दादीमाँ ने कहा,"क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है ?"

पिकलू ने हिसाब लगाकर बताया, "मुझे और मिस्टर अय्यर को छोडकर सबको—रामूकाकू तक को।"

दादा ने पूछा, "इस सिगारवेलु की कोई खासियत तेरी नजर मे आयी है ?"

पिकलू हँस पडा। बोला, "नाक और कान मे बेहिसाब बाल है। मानो जगल उगा हो।"

दादीमाँ बोली, "छि पिकलू, लोगो के शरीर के बारे मे इस तरह की बाते नही करते। भगवान ने जिसे जो चाहा, दिया है।"

पिकलू को लेकर उसकी दादीमा सोने चली गयी। पर भवनाथ की आखो मे नीद नही थी। कहानी के प्लॉट का सिलसिला अभी भी बँध नही पाया था। इसी बीच नयी आफत आ गयी। पिकल के पहले कलकत्ता-भ्रमण की तस्वीरें उनकी आखो के आगे तैर रही थी।

बत्ती बुझाकर आँख मूद ली भवनाथ ने—पर गध और जुकाम, जुकाम और गन्ध—दोनो बातें उनके दिमाग मे नियोन-

लाइट की तरह बार-बार जल और बुझ रही थी।

पिकलू और दिनो की अपेक्षा बहुत जल्दी जाग गया था। आज सुबह से ही घूमने निकलने का प्रोग्राम जो था। हुकुमसिंह भी आ रहा था। नाना पहले तो उसे लगातार दूसरे दिन भी छोडने को तैयार नही हुए। पर टेलिफोन पर पिकलू इस तरह मचल गया कि फिर वे कुछ कह ही नही सके।

पिकलू ने देखा, दादा बहुत पहले ही उठ चुके हैं। कलम और नोटबुक लेकर वे घिचिर पिचिर कुछ निशान बना रहे हैं। गणित का हिसाब न मिलने पर पिकलू भी कॉपी पर कई बार ऐसे ही निशान खीचने लगता है।

दादा ने पूछा, "पिक्लू, अपने कैमरे से कल तुमने कितनी तस्वीरें उतारी ?"

पिकलू बोला, "फिल्म खतम हो गयी है। एयरपोट पर उस पहलवान गोरे से शुरु करके मिस्टर अय्यर, रामूकाकू हरिमय दद्दू सबकी तस्वीरें खीची हैं।"

दादा बोले, "तो अभी ही उसे वाशिंग और प्रिंटिंग के लिए गुई स्टूडियो भेज दिया जाये।"

घर के नौकर भजू का बुलाया भवनाथ ने। इससे पहले एक बार फोटो को लेकर भजू ने झमेला कर डाला था। वाशिंग सुनकर फिल्म को सीधे गणेश डाइंग-क्लीनिंग मे दे आया था। पिकलू ने कहा, "गुई स्टूडियो। आज शाम तक ही प्रिण्ट चाहिए।"

पर कैमरा खोलकर फिल्म निकालने की तैयारी करते ही पिकलू चीख पडा। कैमरे मे फिल्म थी ही नही।

"फिल्म डाली तो थी ?" भवनाथ ने पूछा।

दो दिन पहले पिकलू ने अपने हाथो से कैमरा लोड किया था। दादीमा ने आकर सान्त्वना दी, "दुखी मत हो। अभी दो फिल्मे मँगा देती हूँ।"

बेबी ब्राउनी कैमरे से पिकलू ने कितने सुन्दर सुन्दर चित्र खीचे थे—सब बरबाद हो गये।

भवनाथ ने गम्भीर होकर जानना चाहा, "कैमरा कहाँ रखा था?"

सुबह से पिकलू ने कैमरा बराबर अपने हाथ मे ही रखा था।

"अच्छी तरह से याद करो।" भवनाथ ने कहा।

"सच, एक बार भी अपने से अलग नही किया"—सिर्फ शाम को लौटते समय कॉर्नवालिस होटल मे एक बार टॉयलेट मे जाना पडा था पिकलू को। तब कुछ मिनट के लिए कैमरा बाहर रखा था।

भवनाथ ने अपनी नोटबुक मे दो एक कील काट बनाये। बोले, "पिकलू, तुम एक बार दुमजिले के फ्लैट से प्रोफेसर मिहिर सेन को बुला लाओगे?"

और कोई समय होता तो भवनाथ खुद ही जाते, पर कल कदम चूक जाने के कारण पैर बहुत सूज गया था, चलने-फिरने का सवाल ही नही उठता था।

मिहिर सेन को लेकर पिकलू पाच मिनट मे ही लौट आया। साहित्यकार भवनाथ ने खुद बुलाया है, सुनकर मिहिरबाबू बेहद खुश थे। इन मिहिरबाबू ने ही राह चलते एक बार भवनाथ से कहा था कि जुकाम को लेकर उपन्यास लिखें। बात हँसने लायक थी, पर चूकि मिहिरबाबू जुकाम सम्बन्धी वैज्ञानिक

अनुसन्धान कर रहे थे, इसलिए भवनाथ को हँसी नही आयी। बेथेस्डा की जुकाम रिसर्च इस्टीट्यूट मे साढे तीन वरस काम किया है प्रोफेसर सेन ने।

भवनाथ ने पूछा, "अच्छा मिहिरबाबू, पानी मे भीगने के कितनी देर बाद सर्दी होती है ?"

चाय की चुस्की लेकर प्रोफेसर मिहिर सेन बोले, "बिल्कुल बेकार बात है— ठण्ड और पानी मे भीगने से सर्दी-जुकाम का कोई सम्बन्ध नही है।"

"अयँ !" दादीमाँ को विश्वास ही नही हुआ मिहिर सेन पर। बोली, "हमेशा से सुनती आ रही हूँ कि गीले कपडे रहने से जुकाम हो जाता है।"

मिहिर सेन जोर देकर बोले, "हरगिज़ नही। दुनिया की बडी-बडी जुकाम रिसर्च इस्टीटयूट मे ठण्ड लगवाकर, बरसात मे भिगोकर, लोगो को घण्टो तक गीले मोजे पहनाकर देखा गया है—जरा भी जुकाम नही हुआ। जुकाम होता है, वाइ-रस से। वाइरस-सम्बन्धी जो विज्ञान है, उसका नाम है वाईरो-लॉजी।"

वाइरस के बारे मे तो पिकलू ने भी सुना है।

मिहिरबाबू बोले, "बहुत ही सूक्ष्म चीज़ है यह वाइरस— ऑडिनेरी अनुवीक्षण यन्त्र से तो देखा ही नही जा सकता। इले-क्ट्रोन माइक्रोस्कोप से देखना भी बहुत मुश्किल होता है। पता है, एक इच लम्बी जगह मे सर्दी के कितने वाइरसो की कतार लग सकती है ?"

पिकलू ने अन्दाज़ लगाया, "सौ डेढ सौ।"

मिहिर सेन ने आखें फैलाकर बताया, "पचास हज़ार! हम लोग कहते हैं ज़ीरो पॉइण्ट ज़ीरो फाइव माइक्रोन।"

मिहिर सेन ने भवनाथ से रिक्वेस्ट की, "कोराइज़ा के बारे

मे एक उपन्यास लिखिए। हम लोगो ने हिसाव लगाकर देखा है, साल-भर मे इससे देश का सौ करोड रुपयो से ज्यादा का नुकसान होता है। अमरीका मे सालाना क्षति होती है, २४००० करोड रुपये की।"

"कोराइजा क्या होता है भला ?"

मिहिर सेन बोले, "ओहो! साधारण जुकाम का यही वैज्ञानिक नाम है—पहले कहते थे नजल कैटार।" मिहिर सेन ने आगे और समझाया, "साल मे सौ मे से पचहत्तर लोगो को कम-से कम एक बार जुकाम होता है, और सौ मे से पचीस लोगो को कम से कम चार-पाच बार।"

इसी समय गरम स्वेटर पहने, मफलर लपेटे हरिमय बाबू कमरे मे घुसे। गरमी के मौसम मे भी ऐसी अजीब ड्रेस देखकर हँसी आ रही थी विकल को। पर हरिमय बाबू का चेहरा बडा करुण हो रहा था।

मिहिर सेन की बात सुनकर हरिमय बाबू उत्तेजित हो उठे। बोले, "तो फिर 'चमचम' का एक कोराइजा अक निकाला जाय। उसी के साथ भवनाथ सेन का विशेष उपन्यास 'जुकाम से सावधान'।"

बात कहते कहते ही हरिमय बाबू को छीक आ गयी। छीक का धक्का सम्भालकर उन्होने करुण भाव से पूछा, "सर्दी कैसे होती है ?"

मिहिर सेन नाक पर रूमाल रखकर बोले, "सर्दी फैलाने का सबसे सरल उपाय है, छीक। बडो की बजाय छोटे बच्चे सर्दी का बहुत अधिक प्रचार करते हैं। जुकामवाले आदमी के खूब नजदीक जाने से भी सर्दी हो सकती है।" इतना कहकर वे हरिमय बाबू के पास से कुछ दूर सरक गये।

भवनाथ ने पूछा, "जुकाम के वाइरस क्या देह के बाहर

ज़िन्दा नही रहते ?"

मिहिर सेन बोले, "नही । पर माइनस ७६ सेण्टीग्रेड ताप-मान पर सूखी बर्फ मे जुकाम के वाइरस को साल भर रखा जा सकता है । बहुत-से देशो के मिलिटरीवाले जुकाम पर रिसर्च कर रहे हैं । युद्ध के समय शत्रु सेना मे जुकाम के वाइरस फैला देने की सम्भावना है ।"

हरिमय बाबू आतंकित हो उठे, "ठीक ही तो है ! युद्धक्षेत्र मे सैनिक छीक सम्भालेंगे या तोप बन्दूक छोडेंगे ? मेरी हड्डी-हड्डी इस बात को समझ रही है—कल से । और देखिए, अब तक मुझे कभी भी सर्दी नही हुई थी ।"

मिहिर सेन बोले, "इन्सान और शिम्पजी के छोडकर और किसी जीव को जुकाम नही होता ।"

"अब जाकर जरा आशा की किरण देखने को मिली है ।" रूमाल से नाक पोछते-पोछते हरिमय बाबू बोले, "स्कूल मे काली मास्टरजी जो मुझे गधा कहते थे, सो उस बात मे जरा भी सचाई नही है ।"

तब तक भवनाथ पूछने लगे, "जुकाम के वाइरस शरीर मे घुसने के बाद जुकाम प्रकट होने मे कितना समय लगता है ?"

"इनक्यूबेशन पीरियड के बारे मे कह रहे है ?" मिहिर सेन ने हँसकर जवाब दिया, "लगभग अड़तालीस घण्टे । पर सुना है कि दो चार जगह इन्हे और भी जल्दी 'एडरस' बनाने की कोशिश हो रही है ।"

"उससे फायदा ?" भवनाथ ने पूछा ।

"फायदा भला नही है ?" प्रोफेसर मिहिर सेन ने जवाब दिया, "खासकर जहाँ पर जुकाम का हथियार के तौर पर इस्ते-माल होगा वहाँ तो हाथो हाथ फल मिलने से बहुत फायदा है ।"

हरिमय बाबू ने करुण भाव से प्रार्थना की, "सर्दी के नाडी-

नक्षत्र तो सब आपको हिब्ज हैं। कृपा करके जरा बता ही देते कि जुकाम ठीक कैसे होता है। मैं बहुत ही सफर कर रहा हूँ।"

मिहिरबाबू ने गम्भीरता से उत्तर दिया, "अभी तक तो जुकाम का कोई इलाज निकला नही है। और यह जो चुपचाप बिस्तर पर लेटे रहने को कहा जाता है, उसका कारण यह है कि और लोगो के बीच रोग न फैल जाये। गोली हो, या मालिश हो, या नाक मे डालनेवाली बूद हो—इन सबमे सिर्फ सामयिक रूप से तकलीफ कम होती है, पर जुकाम ठीक नही होता। बडी डोज की दवाई से कई बार नुक्सान होता है—सर्दी और भी बढ जाती है।"

"क्यो ?" नाक मे दवाई डालने को तैयार हरिमय बाबू ठिठक कर रुक गये।

मिहिरबाबू बोले, "दवा से सीलिया का भारी नुकसान होता है। नाक मे जो छोटे छोटे बाल रहते हैं, उन्हे कहते है सीलिया नाक के बाल जुकाम को रोकते हैं।"

आखे फाड-फाडकर देखने लगे हरिमय बाबू। "नाक मे बाल रहते, तो आज मुझे यह तकलीफ नही होती।"

मिहिरबाबू चले गये। भवनाथ ने अब हरिमय से पूछा, "तुम्हारे उस सिंगारवेलु के नाक के बाल क्या बहुत बडे हैं ?"

एक पल सोचकर हरिमय बाबू बोले, "ठीक! आपको कैसे पता लगा ? आखो मे रडार यन्त्र लगा रखा है क्या ? घर बैठे ही सब देख पा रहे है!"

भवनाथ ने हरिमय बाबू को पिकलू के कैमरे से फिल्म गायब होने की बात बतायी। हरिमय बाबू को सच ही ताज्जुब हुआ। बोले, "भुतहा काम लगता है। कल मेरे भतीजे ने एक फोटो उपहार मे दी थी। उस अद्भुत कैमरे से फोटो खीची थी निजाम की कबाब की दूकान के सामने। तस्वीर मैंने डायरी मे रखी थी।

पर घर आकर सह सम्पादक को तस्वीर दिखाने चला तो बुद्धू बन गया। तस्वीर गायब थी।"

भवनाथ ने पूछा, "और कुछ स्पेशल हुआ था कल ?"

हरिमय बाबू गंजी खोपड़ी खुजाने लगे। फिर बोले, "बूढ़ा आदमी ठहरा। रामू का स्पेशल कैमरा मेरे हाथ मे था। बातें करते-करते कैमरा लिये लिये ही मैं होटल से निकल पड़ा। इसका ध्यान आया मिनी बस से उतरने के समय, तो सोचा कि आज सुबह ही तो फिर मिल रहे है। तभी दे दूँगा।"

"कैमरा एक बार देखू तो सही।" भवनाथ बोले।

हरिमय बाबू दुखी होकर बोले, "उस गुड मे तो रेत मिल गयी। घर पहुँचने के कोई तीन एक घण्टे बाद मिस्टर सिंगार-वेलु अय्यर एक टैक्सी लिये हाज़िर। कैमरा उसी समय ले गये।"

"अकेले आये थे ?" भवनाथ ने पूछा।

टैक्सी मे वही विराट् पहलवान साहब बैठे थे। वे भीतर भी नही घुसे। हज़ार हो, आखिर भतीजे के दोस्त ठहरे। मैंने कितनी बार रिक्वेस्ट की, घर मे बैठिए, थोड़ी लस्सी पीजिए। पर बोले, उन लोगो को कॉनवालिस होटल मे ही डिनर पार्टी है—दो एक मेहमान आ रहे हैं।"

"आपकी घड़ी मे तब क्या बजे होगे ?" भवनाथ ने पूछा।

हरिमय बाबू बोले, "आपकी तरह मैं हर समय घड़ी देखकर ही काम नही करता। पर हाँ, रात के कम से-कम पौने ग्यारह बजे होगे।"

भवनाथ बोले, "वे लोग कॉनवालिस होटल मे ही तो हैं ना ? जो होटल मिसेज एस्क्विथ चलाती है ?"

हरिमय बाबू इतनी जानकारी नही रखते। भवनाथ ने अपनी कॉपी मे फिर कुछ घसीट मारा।

पिक्ल इसी बीच कलकत्ता-भ्रमण के लिए रेडी हो गया

था। सिर पर एक शानदार रूसी टोपी पहनी थी पिकनू ने। बड़ा सुन्दर लग रहा था।

पिक्लू की दादीमां ने इसी समय कमरे मे घुसकर पति को डाट लगायी, "अपने ये सब बेकारके प्रश्न रहने दो। हरिमय बाबू, आप तो अकेले आदमी ठहरे। इत्ते दिन बाद भतीजा लौटा है, उसे कुछ खिलाना पिलाना तो जरूर चाहेंगे।"

हरिमय बाबू समझ गये, पिकलू की दादीमा क्यो ये सब पूछ रही है। वे मुस्कराये।

दादीमां बोली, "आज रात को आप सब यही खाना खायेंगे।"

पिकलू ने पूछा, "रामूकाकू के दोस्त, मिस्टर अय्यर ?"

दादी बोली, "उनसे भी कहिएगा।"

हरिमय बाबू ने अनुरोध किया, "अगर सम्भव हो तो थोडी-सी पोस्त-चच्चडी बनाइएगा। मेरे भतीजे को बहुत भाती थी, पर कैलकटा के किसी भी होटल मे पोस्त-चच्चडी नही मिली।"

भवनाथ सेन अब फिर हुक्के की निगाली थामकर गुडगुडाने लगे। हुकुमसिंह भी आ हाजिर हुआ था।

हरिमय बाबू ने कहा, "मिस्टर अय्यर की इच्छा है, आज शुरू मे ही घापा और टगरा घूम आये। ये क्या देखने की जगहे है ? बदबू "

भवनाथ बोले, "जहा भी जाओ, अगर हो सके तो दोपहर के खाने के समय एक बार लौट आना।"

पिकलू बोला, "लच के समय हम कहा रहेंगे, कुछ भी तय नही है।"

"अगर न आओ, तो जरा फोन कर देना।" भवनाथ सेन ने पोते से अनुरोध किया।

पिकलू की दादीमा हैरान रह गयी। मालिक को आज हुआ

क्या है ! पोते के लिए इतना समय खर्च कर रहे हैं !

पिकलू वगैरह के निकलते समय अचानक भवनाथ सेन ने पूछा, "पिकलू, फोटोग्राफी का आविष्कार किसने किया था ?"

क्विजमास्टर जनरल पिकलू को ये सारे उत्तर रटे हुए थे। हरिमय बाबू को अवाक् करता हुआ पिकलू बोला, "दो फ्रांसीसियो ने, पिछली सदी मे। एक का नाम था डि-निप्से। दूसरे का नाम डागुरे।"

"अहू ! शोभा तो देखो नामो की ! ऐसे ऐसे गुणी लोगो के माँ-बाप बेटे के लिए कोई भद्र नाम नही खोज सके !" हरिमय बाबू ने अपनी चिढ प्रकट की।

भवनाथ बोले, "इसी समय के आस-पास एक अंग्रेज ने भी बहुत मूल्यवान काम किया था।"

पिकलू चटपट बोला, "फॉक्स टैलबोट। उनकी खोपडी हरिमय दद्दू जैसी गजी थी—बुक ऑफ नॉलेज मे उस खोपडी की तस्वीर देखी है।"

पोते के सामान्य ज्ञान का विस्तार देखकर बहुत खुश हुए भवनाथ। हरिमय बाबू भी खुश थे, पर दूसरे ही कारण से। उन्होने कहा, "इसी से समझा जा सकता है कि गजी खोपडी मजाक की चीज नही है—बडे बडे लोगो की खोपडी पर ही गज आती है। क्यो हुकुमसिह ?"

हुकुमसिह बेचारा क्या करे ! खुद डी० सी० साहब की खोपडी भी गजी है। इसलिए उसने तुरन्त ही हरिमय बाबू की हाँ मे हाँ मिलायी।

"हैलो, लालबाजार पुलिस स्टेशन ?" भवनाथ फोन पर कह रहे थे।

समधीजी की आवाज सुनकर उस तरफ से पुलिस के बडे भारी अफसर और पिकलू की मा के पिता मिस्टर रजन सेन बहुत खुश हुए।

पिकलू इसी बीच घूमने निकल भी गया है, सुनकर मिस्टर सेन और भी खुश हुए। बोले, "कल ही सोचा था कि रात को एक बार उस तरफ आऊँगा।"

"आये क्यो नही ?" भवनाथ ने पूछा।

"आता कैसे ! निकल ही रहा था कि उसी समय विदेश से खबर आयी कि कुछ बदमाशो की कलकत्ता आने की सम्भावना है।" उसी को लेकर बेहद व्यस्त रहे पिकलू के नाना। विदेशी बदमाश देश का पता नही क्या नुकसान कर जायें !

पिकलू के नाना ने 'चमचम' का विज्ञापन भी देखा है। उन्हें शक हुआ कि रचना भवनाथ की ही होगी। पूछा, "इस बार क्या आप ही हम लोगो को 'बदमाशो के जाल मे' डाल रहे हैं ?" ठठाकर हँस पडे भवनाथ। फिर काफी चिन्तित हो उठे। बोले, "पोस्टर लग गये, पर अभी तक एक लाइन भी नही लिखी गयी।"

रजन सेन बोले, "आपको कोई चिन्ता नही है। बदमाशो की कमी नही होगी। हमारी पुलिस की लाइन मे कहते हैं, आदमी तीन तरह के होते हैं—कम बुरे, ज्यादा बुरे और एकदम बुरे ! इनके अलावा और तरह के आदमी होते ही नही !"

बात को भवनाथ ने तेजी से नोटबुक मे लिख लिया। फिर रजन सेन से एक बार मिलने का अनुरोध किया। रजन सेन बोले, "हो सका, तो दोपहर को किसी समय फट्-से चक्कर लगा जाऊँगा। विदेश से गुप्त मैसेज न आता तो, आज जरा खुल-कर गप्पे होती।"

भवनाथ बोले, "दोपहर को आयें न आयें, रात के खाने पर

आना ही पड़ेगा। घरवाली का हुकुम है। पिकलू की नानीजी को भी लाइएगा।"

लडकी की सास को नाराज़ करने की हिम्मत नही है मिस्टर सेन मे, तुरन्त तयार हो गये।

भवनाथ ने अचानक पूछा, "किसी ऐसे आदमी को जानते हैं जो इस बात की खोज-खबर रखता हो कि फोटोग्राफी के मामले मे पृथ्वी मे कहाँ क्या हो रहा है?"

मिस्टर सेन बोले, "मेरा भतीजा सुखेन्दु है। जमन कैमरा कम्पनी मे काम करता है। दो हफ्ते की छुट्टी बिताने यहाँ आया है। उसे साथ ले आऊँगा।"

इसके बाद कॉनवालिस होटल मे फोन किया भवनाथ ने। बोले, "रात ग्यारह बजे आपके होटल मे एक पार्टी देना चाहता हूँ।"

वे लोग बोले, "किसी और होटल मे कोशिश कीजिए। इस होटल मे तो रात दस बजे तक डाइनिंग हॉल बन्द हो जाता है।"

कॉनवालिस होटल मे रामानुजकाकू और मिस्टर सिंगाग्वेलु अय्यर पिकनू वगैरह की राह देख रहे थे।

पिकलू ने गौर किया, हुकुमसिंह का सलाम पाकर मिस्टर अय्यर बहुत खुश हुए। खुश होने की बात ही है—पृथ्वी पर भला कितने लोगो ने पुलिसवाले का सलाम पाने का सौभाग्य अर्जित किया है? पिकलू खुद भी तो बम्बई मे पुलिसवालो को देखकर डर जाता था। यह तो इसी बार लालबाजारवाले नाना के पास रहकर कुछ दिन से उसका डर दूर हुआ है।

पिकलू ने देखा, वही रौबीले गोरे साहब होटल के लाउंज मे बठे हैं। वे महाशय गौर कर रहे हैं कि इस दल के सभी लोग

बार बार रूमाल निकालकर नाक साफ कर रहे हैं। रामानुज-काकू भी जुकाम के मारे बेचैन हैं। साहब अचानक ही पिकलू से बोले, "वेरी बैड प्लेस ! यहा आते ही सबको जुकाम हो जाता है।'

बम्बई का बाशिन्दा होते हुए भी पिक्लू को कलकत्ता की बदनामी अच्छी नही लगी। उसने प्रतिवाद किया, "कहाँ ? मुझे तो नही हुआ ?"

साहब हँसकर बोले, "आइ एम सॉरी। तुमसे माफी मांगता हूँ।"

इसके बाद उन सज्जन ने बैग से वही सेण्ट का स्प्रे बाहर निकाला और मस्ती मे फच्-फच् करके पिकलू के शरीर पर स्प्रे कर दिया। कितनी सुन्दर, मीठी सुगन्ध है ! आह ! पिक्लू ने पल-भर के लिए आनन्द के मारे आँखे मूद ली।

टैक्सी की तलाश मे वे लोग एक साथ चौरगी की ओर निकल पडे। पिकलू एक बार होटल के टॉयलेट मे गया था। टॉयलेट से निकलकर देखा, मिस्टर अय्यर तस्वीरो का एक पैकेट मेज पर छोड गये है। लगता है, कल की खीची हुई तस्वीरे है। रगीन तस्वीरे पॉलिथीन के अलग अलग स्वच्छ लिफाफो मे थी। वह तस्वीरे देखने लगा। देखते देखते वह भौचक्का हुआ जा रहा था। मिस्टर अय्यर अचानक लौट आये और झपट्टा मारकर उसके हाथ से तस्वीरे ले ली। बोले, "मिस्टर पिकलू, चलिए—सब टैक्सी मे बैठे आपका इन्तजार कर रहे हैं।"

-

टिफिन के समय पिकलू वगैरह घर नही लौट सके। टेंगरा पुलिस चौकी से हुकुमसिह ने फोन पर भवनाथ के साथ पिकलू की बात करवा दी। कुछ देर बात करने के बाद भवनाथ ने चिन्तित

मुखमुद्रा के साथ फोन रख दिया।

पिकलू की दादी बोली, "वे लोग तो खूब मौज कर रहे है, तुमने अचानक यह सोठ सा चेहरा क्यो बना लिया ?"

भवनाथ ने असली कारण नही बताया। औरते ज़रा-से मे डर जाती है। और फिर पिकलू को फोन पर ही कुछ एक जबर्दस्त छीकें आयी है।

भवनाथ अपनी नोटबुक लेकर फिर न जाने क्या लिखने लगे। पिकलू ने कहा है, आज सुबह गोरे साहब ने उसके शरीर पर सेण्ट स्प्रे किया है। दो नम्बर पिकलू ने कहा है, दद्दू, तुम्हे विश्वास नही होगा, मुझे लगा कि दिलखुशा केबिन की तस्वीर से कविराजी चिकन कटलेट की खुशबू आ रही है।

भवनाथ इस पर विश्वास अवश्य ही नही करते। पर पिकलू मे एक गुण है—वह कभी गप्प नही लगाता। इसके अलावा बागबाजार स्ट्रीट की एक तस्वीर से पिकलू को शुद्ध सरसो के तेल की खुशबू आयी है। तस्वीर खीची गयी थी बेगुनी-पकौडो की एक दूकान के सामने।

दोपहर के खाने के कुछ देर बाद ही पिकलू के नाना रजन सेन रेडियो टेलिफोनवाली जीप लेकर भवनाथ से मिलने आये। साथ मे था कमरा विशारद भतीजा सुखेन्दु।

रजन सेन दो मिनट बात कर सके, उसका भी उपाय नही है। रेडियो-टेलिफोन पर दो-दो बार चार्ली-पीटर की कॉल आयी। मि० सेन बोले, "अब और गुजारा नही। क्या हालत है देश की! बहुत से देश यह नही चाहते कि हमारे देश की उन्नति हो। वे सारे समय षड्यन्त्र करते रहते है कि किस तरह हम लोगो का नुकसान किया जाये। इसी से हम लोगो का काम भी बढ रहा है। कल मे ही गुप्त मैसेज मिलने पर सब जगहे छाने डाल रहा हूँ।"

"बाहरवाले कर क्या सकते है ?" भवनाथ ने पूछा।

"कोई काम नही जो न कर सके। ये लोग आग लगा सकते है, पैसे खर्च करके दंगा फसाद करवा सकते है, हावडा ब्रिज का नुकसान कर सकते है, रेलें उलट सकते है, इलेक्ट्रिक पॉवर स्टेशन खराब कर सकते हैं।"

और भी बातें होती पर रेडियो-टेलिफोन पर फिर पिकलू के नाना की बुलाहट हुई। वे बोले, "सुखेन्दु, तुम बातें करो—मैं पन्द्रह मिनट मे आता हू।"

भवनाथ ने अब सुखेन्दु से कहा, "मैं जरा फोटोग्राफी के बारे मे जानना चाहता हूँ।"

सुखेन्दु ने कहा, "सिर्फ डेढ सौ बरस मे इस विद्या ने इतनी उन्नति की है कि सोचा भी नही जा सकता। सन् १८२२ मे निप्से ने पहला फोटो खीचा था। फिर डागुरे के साथ मिलकर आविष्कार किया डागुरे पद्धति का। बाजार मे सबसे पहला कैमरा लाये जीरो साहब सन् १८३९ मे। सन् १८४१ मे टैलबोट साहब ने कैलोटाइप निकाला। उसके बाद तो धडाधड उन्नति होने लगी। सन् १८७१ मे मैडॉक्स साहब ने ड्राइप्लेट प्रासेस निकाली। फिर सन् १८८८ मे जार्ज ईस्टमैन ने निकाले रोल फिल्म और कोडक कैमरा। इस कोडक कैमरे से ही अविश्वसनीय प्रगति हुई।"

भवनाथ तेजी से लिखने लगे "फिल्म के पीछे काला कागज़ लगाने का इतज़ाम हुआ १८९४ मे। इसकी वजह से दिन के उजाले मे भी कैमरे मे फिल्म डाली जा सकती है। प्रसिद्ध बेबी ब्राउनी कैमरा आया सन् १९०० मे।"

भवनाथ ने अब सुखेन्दु के चेहरे की ओर देखा। सुखेन्दु बोला, "सबसे पहली रंगीन तस्वीर लिपमैन ने खीची सन १८९१ मे। फिर १९४७ मे निकला प्रसिद्ध पोलारॉयड कैमरा—बटन दबाने

के एक मिनट के अन्दर ही तस्वीर छपकर कमरे से निकल आती है। पहले सिर्फ श्वेत-श्याम चित्र आते थे, फिर रंगीन भी आने लगे। एक मिनट का समय घटकर अब दस सेकण्ड हो गया है।"

भवनाथ समझ गये, ऐसे कैमरे से ही कल पिकलू की तस्वीर खींची गयी है।

"इसके बाद क्या ?" भवनाथ ने प्रश्न किया।

सुखेन्दु बोला, "अब सभी कुछ सम्भव है। त्रिआयामी चित्र के ऊपर काम हो रहा है। और भी क्या क्या हो सकता है, भगवान ही जानते हैं।"

भवनाथ ने अब सुखेन्दु के कानों में कुछ पूछा। प्रश्न सुनते ही सुखेन्दु चौंक उठा, "आपको कैसे पता चला ? हायेस्ट मिलिटरी डिपार्टमेंट में इस तरह की एक चेष्टा हुई थी। पर जितना मैं जानता हूँ, वे लोग अभी भी सफल नहीं हुए हैं।"

भवनाथ कुछ भी नहीं बोले। सुखेन्दु ने सोचा, साहित्यकार है। दिमाग में कभी-कभी अजीब ख़याल आ जाते हैं।

कुछ देर बाद ही रंजन सेन अपनी जीप पर चढ़कर भवनाथ के घर लौट आये। भवनाथ तुरन्त उन्हें कमरे के एक कोने में बुला ले गये।

उनकी गुप्त बातें काफी देर तक चलती रहीं। पिकलू की दादीमाँ दूर से वह दृश्य देखकर हँस पड़ीं, "दोनों समधियों में क्या गुप्त मन्त्रणा हो रही है ?"

पिकलू की दादीमाँ चाय का इन्तज़ाम करने जा रही थीं, पर रंजन सेन बोले, "मुझे अभी ही भागना होगा—एक पल भी समय बरबाद करने से नहीं चलेगा। हर पल अभी कीमती है ?"

पिकलू की दादी माँ कुछ चिढ़ ही गयीं। रंजन सेन बोले, "नाराज मत होइएगा। रात को तो सपत्नीक आ ही रहा हूँ।"

इसी चक्कर में सुखेन्दु भी चाय नहीं पी सका। वह भी

चाचा की गाडी मे ही लौट गया।

शाम के साढे सात बजे पिकलू और हरिमय बाबू लौटे हुकुमसिंह के साथ।

हरिमय बाबू का चेहरा चूना सा हो रहा था। उनके भतीजे के खीचे हुए सारे फोटो चोरी हो गये थे। "विदेशियो के आगे कलकत्ता की कोई इज्जत नही रह गयी!" हरिमय बाबू दुखी हो गये थे।

धापा और टगरा से लेकर बडे बाजार के कचरा डिपो तक की तस्वीरे खीची गयी थी आज। पब्लिक के दो एक लोगो ने आपत्ति करने की कोशिश भी की थी। पर हुकुमसिंह के साथ रहने के कारण अन्त तक कोई असुविधा नही हुई थी।

पुलिसवाले के साथ रहते हुए भी चोरी कैसे हो गयी, कोई समझ नही पा रहा था। हुकुमसिंह बोला, "पाकिटमार नही—झपट्टामार। एक पागल जाने कहा से आकर मिस्टर अय्यर के हाथ से तस्वीरे झपटकर भाग गया।"

रामानुजकाकू उदास है, पर सबसे ज्यादा मुरझा गये है मिस्टर अय्यर।

"ये कुछ एक तस्वीरे चली भी गयी तो क्या हुआ? कल सुबह और तस्वीरें खीची जायेंगी।" रामानुजकाकू ने कहा था मिस्टर अय्यर से। पर वे सज्जन एक मिनट का भी समय बरबाद किये बिना टैक्सी पर चढकर होटल को लौट गये थे। मजबूर होकर रामानुजकाकू भी होटल को लौट गये। कुछ देर मे ही दोनो जने यहाँ के निमन्त्रण पर खाने आयेंगे।

हरिमय बाबू के लिए इतनी देर चुपचाप बैठे रहना कैसा कष्टकर है, यह भवनाथ जानते हैं। उन्होने गृहिणी से कहा, "थोडा सा टोमाटो-जूस दो।"

टोमाटो जूस पीते-पीते लगभग डेढ घण्टा पार हो गया।

भूख के मारे हरिमय बाबू छटपटा रहे थे, पर खास मेहमानो के अभी भी दर्शन नही हुए थे। एक बार कॉनवालिस होटल फोन किया गया, पर कोई समाचार नही मिला। उनका नाम लेते ही पता नही किसने लाइन काट दी।

पिकलू के नाना का भी पता नही था, हालाकि नानीमाँ सही-साँझ ही आ गयी थी। वे रसोईघर मे दादीमाँ के साथ गप्पे लडा रही थीं। नाना के ऊपर पेच-ताव खाते हुए नानीमा बोली, "उनकी तो आदत ही यही है। इसीलिए उनके साथ कही जाने को मन ही नही करता।"

पर दादीमाँ नाराज नही हुई। भवनाथ के सम्बन्ध मे बोली, "ये तो और दो अँगुल ऊँचे हैं। न्यौता दिया था टॉलीगजवाली इनकी मौसेरी बहन ने और ये भूलकर मुझे लेकर पहुँच गये श्रीरामपुरवाले मौसा के घर।"

रात काफी हो चुकी थी। और प्रतीक्षा कर नही सकते थे। पिकलू को नींद आ गयी थी। भवनाथ कोई भी बात नही कर रहे थे। चिन्तित होकर वे बार-बार घडी की ओर देख रहे थे।

और देर करना सम्भव नही है। वे लोग खाने पर बैठने ही वाले थे, कि बाहर जीप की आवाज आयी।

रजन सेन प्रसन्नमुख अन्दर आकर बोले, "बदमाशो को अरेस्ट करके हाजत मे ठूसते हुए आने मे थोडी देर हो गयी। पुलिस कमिश्नर, होम सेक्रेटरी और चीफ मिनिस्टर को भी मामले

की सूचना देनी पडी । सब बहुत खुश है—वाह-वाह कर रहे हैं । हा, अखबार मे अभी कोई खबर देना ठीक नही होगा—कुछ दिन सब कुछ गुप्त रखना होगा । और भी गिरफ्तारिया हो सकती है ।"

हरिमय बाबू कुछ भी समझ नही पा रहे थे । उन्होने पूछा, "किन्हे अरेस्ट किया आपने ?"

रजन सेन बोले, "एक शत्रु देश ने उस लॉयड और सिगार-वेलु को भेजा था – विथ टॉप डिफेंस प्रोजेक्ट । उन लोगो ने एक नया टॉप सीक्रट कैमरा निकाला है—स्मेलोमेटिक ००१, इस कैमरे मे तस्वीर के साथ ही गन्ध भी आ जाती है। विज्ञान का एक अनोखा आविष्कार है—पर पट्ठे उसी के बल पर हमारे शहर का गन्ध मैप बना रहे थे।"

"अयँ ! यह क्या कह रहे है।" हरिमय बाबू बेहोश होते-होते बचे, "मैं तो कुछ भी नही समझ सका।"

"समझोगे कैसे ? तुम्हारी नाक तो जुकाम से बन्द है !" अचानक बोल उठे भवनाथ ।

रजन सेन और भवनाथ फुसफुसाकर बाते करने लगे । फिर भवनाथ ने गम्भीरता से घोषणा की, "मुझे जो डर था—वही बात है । तुम्हारा जुकाम मामूली जुकाम नही है—वह बदमाश गोरा अपने साथ जुकाम के वाइरस लाया था । स्पेशल टाइप के वाइरस छिटकने के घण्टे-भर के अन्दर जबरदस्त जुकाम से तुम्हारी नाक बन्द हो गयी । तुम सन्देह भी नही कर सके कि वे लोग सीक्रेट कैमरे से गन्ध की तस्वीर उतार रहे है । इन गन्धो का बडा खतरनाक उपयोग हो सकता है ।"

"अयँ ! मैं तो समझा था कि गोरे ने मेरे बदन पर सेण्ट स्प्रे किया।" हरिमय बाबू अब लगभग बेहोश हो चले थे ।

रजन सेन ने कहा, "सिगारवेलु अय्यर इण्डियन सिटिजन

है, पर बहुत समय से देश के बाहर रहकर स्मगलिंग कर रहा है। इस बार कैमरे से रंग गन्ध की तस्वीरें खींचने के लिए विदेशी शत्रु ने ढेर-सारे रुपये देकर इसे नियुक्त किया है। पर असली मुखिया है, वही लॉयड।"

"मेरा भतीजा! मेरा भतीजा!" कातर होकर रो पड़े हरिमय बाबू, "खानदान की नाक कटा दी, वह भी इस चक्कर में है क्या?"

रंजन सेन बोले, "वह बेचारा निरपराध है। पर बाल-बाल बचा है। रामानुजबाबू एक ऑर्डिनेरी पोलारॉयड कैमरा लाये थे—उनकी इच्छा थी पुरानी यादों से लिपटी कुछ जगहों की तस्वीरें लें। लॉयड का टॉप सीक्रेट कैमरा भी देखने में बिल्कुल वैसा ही था। तस्वीर भी एक-सी ही आती—पर साथ ही गन्ध भी आ जाती। एयरपोर्ट पर पिकलू और हरिमय बाबू की बातें सुनकर ही लायड और सिंगारवेलु ने अपनी चाल पक्की कर ली। वे समझ गये कि हुकुमसिंह साथ होगा, तो उन्हें फोटो लेने में कोई दिक्कत पेश नहीं आयेगी। जहाँ से चाहें, जिसकी चाहें, तस्वीर लेकर वे हमें ठेंगा दिखाकर चले जा सकेंगे। अकेले विदेशी के लिए कलकत्ता के राह-रास्तों पर तस्वीर खींचना जरा मुश्किल है।"

हरिमय बाबू का गला घरघरा रहा था, "सच ही बदमाशों के जाल में फँस गये थे हम!"

रंजन सेन बोले, "आपका भतीजा भी खास होशियार नहीं है।"

"यह तो है ही, यह तो है ही। होशियार होता तो क्या अपना देश छोड़कर चला जाता!" हरिमय बाबू ने अपना मन्तव्य दिया।

रंजन सेन बोले, "उन लोगों ने चालाकी से कैमरा बदल दिया—रामानुज यह समझ ही नहीं पाया। ऊपर से उसकी नाक

पर भी सर्दी का जबरदस्त असर है—इस वजह से बेचारे को किसी तरह का सन्देह भी नहीं हुआ। सिंगारवेलु जानता था कि जुकाम कम होने के पहले ही वे लोग तस्वीरों पर हाथ साफ कर लेंगे।"

"जुकाम सिर्फ दो जनों को नहीं हुआ," हरिमय बाबू चीख उठे, "उस दुष्ट सिंगारवेलु अय्यर को और पिकलू को।"

"सिंगारवेलु अय्यर नहीं—उसका असली नाम है ए० वी० सी० डी० राव। अनन्त वासुदेवन चन्द्रिकापुरम देवराज राव। वाइरस छोडने के समय उसे कुछ न हो, इसीलिए तो नाक में बडे-बडे बाल रख छोडे थे। और पिकलू को जुकाम न होने का कारण एक छोटा मोटा सयोग ही है। उसे बार-बार जुकाम होता है—*शायद उसकी देह के वाइरस ने दुश्मनों के द्वारा छोडे गये नये* वाइरस को टिकने नहीं दिया। बात मामूली-सी है। पर इसी से उनकी मुसीबत का सूत्रपात हुआ।'

भवनाथ बोले, "पिकलू अगर कल अपनी तस्वीर में पसीने *की बदबू की बात न कहता तो मुझे सन्देह ही नहीं होता।"*

हरिमय बाबू बोले, "कैसी भयकर बात है, देखिए तो! इतने बदमाश दुश्मन हमारे कन्धे पर बन्दूक रखकर हमारे देश का नुकसान कर रहे थे। आप लोग धन्य हैं—इस यात्रा में बदमाश पकडे गये।"

रजन सेन बोले, "धन्यवाद पर मेरा जरा भी दावा नहीं है। पूरा क्रेडिट भवनाथबाबू का है। वे ही पिछली रात से रहस्य का एक के बाद एक पॉइण्ट जमाये जा रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय जुकाम इस्टीट्यूट से अचानक ही जुकाम के वाइरस चोरी क्यो हुए? पिकलू की तस्वीर में पसीने की गन्ध क्यो है? मिस्टर सिंगारवेलु अय्यर रात के ग्यारह बजे हरिमय बाबू के घर से तस्वीर वापस लेने क्यो आये? टैक्सी में वही लॉयड साहब क्यो

बैठे थे ? कॉनवालिस होटल का डाइनिग रूम दस बजे बन्द हो जाता है—फिर सिंगारवेलु ने हरिमय बाबू से झूठ क्यो बोला कि होटल मे रात को साढे ग्यारह बजे डिनर पार्टी है ? पिकलू के ब्राउनी कैमरा से फिल्म गायब क्यो हो गयी ? जरूर ऐसे किसी आदमी को तस्वीर उस कैमरे मे आ गयी है, जो अपना प्रचार नही चाहता। सिंगारवेलु की नाक में इतने बडे बडे बाल क्यो है ? उसे जुकाम क्यो नही हुआ ? जिन हरिमय बाबू को लाइफ मे कभी भी सर्दी नही हुई, अचानक ही उन्हे सर्दी क्यो हो गयी ? इसके अलावा भवनाथ बाबू ने कुछ दिन पहले अचानक ही सपना देखा है एक नयी तरह का कैमरा निकला है, जिसमे रग के साथ गन्ध भी पकड मे आ जाती है। सपने मे ही उन्होने इस नये कैमरे का नाम दिया है स्मेलोमेटिक ! साहित्यकार भवनाथ ने सरल भाव से सोचा था, इस नये कैमरे से नयी सम्भावनाओ की दिशाएँ खुल जायेगी। तब केवल सजधजकर ही तस्वीर नही खिचायी जायेगी—साथ ही स्नो और सेण्ट भी लगाना पडेगा। सामने सुगन्धित फूलो का गुच्छा रहे तो फिर बात ही क्या है। पर जो बात मिस्टर सेन सोच नही सके—वह थी, बदमाशो के हाथ मे पडकर इस आविष्कार का दुरुपयोग भी हो सकता है। विषैली गैस की तस्वीर खीचकर भेजने से—उस तस्वीर को देखनेवाले मनुष्य की मौत तक हो सकती है।"

विस्मित हरिमय बाबू उत्तेजना के मारे बार-बार गजी खोपडी पर हाथ फेरने लगे। फिर वे भवनाथ से बोले, "तो यह सम्मान सचमुच ही आपका प्राप्य है। समय रहते आपने ही रजन सेन को सावधान कर दिया था, इसी से बदमाश लोग पकडे गये।"

रजन सेन बोले, "बदमाश तो पकडे गये पर वह जन्तर हाथ मे नही आया। मेरे जासूसो ने उसे घेर लिया है, यह समझते

ही उस लायड के बच्चे ने गुप्त कैमरा धडाम से ज़मीन पर पटक-कर तोड डाला।"

"तस्वीरें भी तो हावडा ब्रिज के सामने किसी ने झपट ली।" हरिमय बाबू ने अफसोस किया।

"झपटी नहीं है। मेरे प्लेन-ड्रेस सब-इन्स्पेक्टर ने पागल का रूप बनाकर तस्वीरों का पैकेट छीन लिया था। उसके बाद ही तो मैंने खुद कॉर्नवालिस होटल मे जाकर लॉयड को अरेस्ट किया। वे सब तस्वीर अदालत मे पेश होगी—परन्तु अदालत भी सीक्रेट होगी। आफिशियल सीक्रेट एक्ट के अनुसार मुकदमा चलेगा। बाहर इसकी विशेष खबर नहीं जायेगी।"

हरिमय बाबू ने आखें बन्द करके काली मैया को लक्ष्य कर तीन बार प्रणाम किया। भतीजा बाल बाल बच गया है, इसके लिए उन्होंने मैया की डेढ़ सेर चमचम की मनौती मानी। रंजन सेन बोले "उसके लिए चिन्ता मत कीजिएगा। उसका स्टेट-मेण्ट अभी थाने के अफसर लिखे ले रहे हैं। यह पानी तो अभी बहुत दूर तक बहेगा, क्योंकि लॉयड ने स्वीकार किया है कि जुकाम इंस्टीट्यूट के वाइरस उसके दल के लोगों ने ही चुराये हैं।"

पिकलू और भवनाथ, दोनो ही आज बहुत खुश थे। घर लौटते ही पिकलू को समाचार मिल गया था कि बहन शतरूपा की बीमारी ऐसी कुछ नहीं है। वेलोर के डॉक्टरों ने कहा है कि कुछ दिन ठीक से दवा पीते ही चटपट ठीक हो जायेगी।

हरिमय बाबू की आखें अभी भी चमचम हो रही थी। उन्होंने अब भवनाथ से कहा, " 'चमचम' पत्रिका की तरफ से आपको एक शीशी रबडी चूर्ण और माला भेजूंगा। घर बैठे बैठे इतने भारी रहस्य का उद्घाटन कर डाला आपने!"

पोते की तरफ इशारा करके भवनाथ बोले, "यह सब पिकलू

को ही मिलना चाहिए। वह अगर इतना सतर्क न होता, तो कुछ भी नही पकडा जाता। आज सुबह भी इसने हिम्मत करके कॉनवालिस होटल मे बाकी तस्वीरे सूघ डाली थी और मुझे टेलिफोन पर बताया था कि दिलखुशा केबिन की तस्वीर कविराजी चिकन कटलेट की खुशबू छोड रही है। उसका फोन न मिलता तो मेरे मन मे भी सन्देह का दाना न पडता। मैं लालबाजार खबर देने की बात सोच भी नही पाता।"

बेहद खुश होकर विदा लेते समय हरिमय बाबू ने घोषणा की, "सिर्फ माला ही नही—पिकलू को पद्मश्री मिले, इसके लिए मै 'चमचम' के *अगले अक मे कडा सम्पादकीय लिखूगा।"*

"सम्पादकीय क्यो ? सीधे सरकार को ही लिखा जा सकता है।" बोले रजन सेन।

गम्भीर भाव से हरिमय बोले, "जित्ता जानता हूँ, इक्कीस बरस से कमवालो को पद्मश्री नही दिया जाता। इसलिए यह चिट्ठी का काम नही है। सरकारी खिताब पाने की उम्र घटाकर दस तक लाने के लिए 'चमचम' के आग-भरे एडिटोरियल के बिना काम नही चलेगा।"

काकली के नाना

नाना, माने मा के बाबूजी कलकत्ता आ रहे है। पहले से समाचार पाकर काकली के दिल मे जाने कसी सुरसुराहट होने लगी। अगर ऐसा लगे कि छाती के अन्दर बायी तरफ कोई पछी का पख घुमा रहा है, तो समझ जाना चाहिए कि बहुत खुशी हो रही है।—घर के नौकर अभयदा ने काकली को बताया था।

"अहा ! कितना अच्छा लग रहा है ! कितना मजा आ रहा है !" खुशी के मारे काकली ने आखे मूंद ली।

छोटी सी लडकी काकली को बहुत कुछ जानने का शौक है। उसके प्रश्नो की बौछार से तग आकर घर की महरी मोक्षदा बोली थी, "कैसी अकालपक्व छोरी है री ! तेरी मा तो अभी भी बच्ची सी लगती है, तू ऐसी कैसे हो गयी री ?"

अकालपक्व—कितना कडा शब्द है ! काकली ने मतलब पूछा तो मोक्षदा मौसी ने कहा था, "अकालपक्व माने असमय पका हुआ—जिस आम को अषाढ मे पकना हो, वह बैसाख महीने के शुरू मे ही पक गया हो।"

मोक्षदा मौसी बहुत चिल्लाती है—उससे पूछकर कोई फायदा नही। यह जानने की काकली को बडी इच्छा है कि दुख किसे कहते है। जैसे अभी देखो, खुशी हो रही है तो लगता है कि छाती के भीतर कोई पछी का पख घुमा रहा है—दुख होने पर कैसा लगता है ?

काकली तब और भी छोटी थी। काकली को याद है, दोपहर को माँ बैठकर मामा की एक तस्वीर की तरफ देख रही थी। मा

की बडी-बडी काली आखो से आँसू बह रहे थे और मोरकण्ठी रग की साडी के पल्ल से वह बार-बार आँख पोछ रही थी। काकली ने पहले तो समझा कि माँ को सर्दी हो गयी है, इसीलिए सप्-सप् नाक पोछ रही है। सर्दी लगेगी नही भला ! कितने ठण्डे देश से माँ के नाम नाना की चिट्ठी आयी है। काकली तो मा को सावधान करने जा रही थी, "स्वेटर पहन लो तब ये चिट्ठियाँ खोला करो—तब ठण्ड नही लगेगी।" माँ ने जब कोई उत्तर नही दिया, तब काकली ने समझा—सर्दी-खाँसी कुछ नहीं, माँ रो रही है।

भूख लगने पर, गुस्सा आने पर, गिर पडने पर काकली भी हाथ-पाव पमारकर रोने लगती है। मा से पूछने पर काकली को पता चला, इनमे से कोई भी उनके रोने का कारण नही है। मोक्षदा मौसी ने फुसफुसाकर कहा, "तेरी माँ को दुख हो रहा है।"

काकली की आँखे बिल्कुल अपनी माँ जैसी है। बडी बडी आँखे फैलाकर माँ से सटकर खडी होते हुए काकली ने पूछा था, "दुख होने पर कैसे पता चलता है माँ ? मोक्षदा मौसी कह रही थी, भगवान मिरच पीसकर छाती मे ठूँस देते है।" मा का आचल खिसकाकर काकली छाती पर हाथ फेरने जा रही थी कि मा ने दुलारकर, उसे चूमकर अलग करते हुए कहा था, "सुख किसे कहते हैं, दुख किसे कहते हैं, समय आने पर सब पता चल जायेगा बिट्टो।"

आज, इस पल पापा और माँ का चेहरा देखकर ही काकली की समझ मे आ रहा है कि सुख किसे कहते है। नाना की चिट्ठी आयी है—नाना आ रहे हैं। माँ ने कहा, "मैंने तो सोचा था, बाबूजी किसी तरह भी तैयार नही होंगे, इसीलिए तुम्हारी और काकली की बात बार-बार लिख दी थी।"

खुशी से उमगती हुई काकली बोली, "पता है पापा, लिखावट की चार-छ गलतिया होने पर भी मैंने नाना को चिट्ठी लिख दी थी।"

अब पापा हँसकर माँ से बोले, "तुमने तो कितनी बार लिखा है, पर काम नही बना। तो इस बार काकली की बात मानकर ही वे आ रहे हैं।"

काकली की माँ अदिति ने कोई प्रतिवाद नही किया। पर अचानक ही कैलेण्डर पर नज़र डालकर उसने पूछा, "यह तो जुलाई चल रहा है ना ?"

सबको तो पता है, यह जुलाई चल रहा है। काकली की समझ मे नही आ रहा है, इस, इतनी-सी बात से माँ का चेहरा ऐसा सूख क्यो गया ? पापा भी अजीब हैं ! माँ गुमसुम जुलाई महीने की ओर ताके जा रही है, फिर भी उसे कुछ नही कहते।

काकली को अभी समय नही है। लगभग दौडते दौडते साथवाले मकान के तिमजिले के फ्लैट पर अपनी सहेली से मिलने वह चल दी। घण्टी दबाते ही सहेली के बडे भाई नन्दन ने दरवाजा खोल दिया। बाकायदा गम्भीरता से काकली ने पूछा, "आरती है ?"

आरती के भैया ने भी गम्भीरता से कहा, "भीतर जाकर देखो—कुछ पहले ही तो नीद से उठी है। बहुत देर सोयी है।"

आरती की तो मौज है—उसकी ननिहाल कलकत्ता मे कालीघाट मे ही है। जब होता है तब आरती नाना के पास चली जाती है। ऐसा कोई भी सप्ताह नही जाता जब आरती के साथ नाना का मिलना न हो। पर आज आरती को भी भौचक कर देगी काकली।

रग-बिरगी ग्रिल से घिरे बरामदे के एक कोने मे आठवर्षीया आरती अपनी गृहस्थी जमा रही थी। उसकी आवाज़ सुनायी दे

रही थी "तुम लोगो के मारे जान आफत मे है। एक दिन जरा बाहर गयी, और तुम लोगो ने घर मे लकाकाण्ड मचा डाला।"

"किसे डाट रही है ?" गदन खुजाते-खुजाते काकली ने सहेली से पूछा।

"छोटी बेटी को।" पक्की गिरस्तिन की तरह उत्तर दिया आरती ने। रूमाल से गुडिया का मुह पोछते पोछते आरती बोली, "तुमलोगो की खातिर क्या 'चालीस' घण्ट घर मे ही कैद रहूँ ? मेरे अपने क्या कोई शौक, कोई चाव नही है ?" अब सहेली की ओर मुखातिब होकर आरती गम्भीरता से बोली, "कालिख-वालिख पोतकर चुडैल-सा चेहरा बनाये बैठी है। तू भी सोचेगी कि इन लोगो की मा कुछ देखभाल ही नही करती।"

काकली भी पक्की गिरस्तिन की तरह बोली, "दिन-भर डाटने से बच्चे बिगड जाते हैं। उस दिन पापा चुपचाप मा से कह रहे थे, मने मुन लिया। तू गुस्सा मत हो—मुझे थोडा पानी दे, म बच्ची को नहला देती हूँ।"

"अरे बाबा, यह तो मरने पर भी नही—सुबह सवेरे ठण्डा पानी उसे सहन नही होगा।" आरती सिहर उठी।"

प्यारी सी गुडिया को गोद मे लेकर नहलाने का मन था काकली का। पर आरती भी खूब है ! अपने बेटे बेटियो को खुद दिन रात डाटेगी, मारेगी, पर और किमी को प्यार भी नही करने देगी।

"ठण्ड कहा है ?" काकली ने कुछ चिढकर ही पूछा।

बेटी को गोद मे लेकर सूखे कपडे से बेहद एहतियात से पोछते पोछते आरती बोली, "इसके भी तो मेरी ही तरह टॉन्मिल है। जनम से ही तकलीफ पा रही है।"

इस लडकी का नाम काकली ने ही रखा है—सोमा चटर्जी। उमर ज्यादा नही है—यही कुछ हफ्ते पहले ही तो ननिहाल से

लौटते समय आरती इसे ले आयी थी। पाक स्ट्रीट की 'पैरेगॉन' से आरती के नाना खुद पसन्द करके खरीद लाये थे। खूब छोटी है बच्ची—अभी सिर्फ आठ नौ बरस की है।

लाली लाली बिटिया के घुंघराले बाल परे करके आरती ने उसे गोद मे उठा लिया। चूमकर दुलराते हुए बोली, "शैतान छोकरी, मिठाई की टोकरी।"

काकली बेचैन हो उठी, "ऐसे मत देख। नजर लग जायेगी।"

आरती खूब जानती है, नजर लगने पर बच्चे जोरो से बीमार पड जाते हैं। तभी उसने प्रतिवाद किया, "अरे हत्, माँ की नजर नही लगती—नानी उस दिन मौसी से कह रही थी।"

गुडिया-बिटिया पर काकली को एक दबा-दबा सा आकर्षण है। उसे कलेजे से सटाकर खूब प्यार करने की इच्छा होती है और डर भी लगता है। उसे कही नजर न लग जाये—कुछ भी हो, वह गुडिया की माँ तो नही है। बात भुलाने को काकली बोली, "ऐसे आखें फाडे क्या ताक रही है?"

आरती ने अब पूछा, "यह देखने मे बिल्कुल मुझ पर पडी है ना?"

"जरूर पडी है—लडकियाँ तो माँ-जैसी दिखती हैं, या बाप-जैसी।"

काकली को आरती हर बार नाना-नानी की नयी नयी बाते बताती है। ननिहाल जाते ही जो जो होता है, सबकुछ काकली को बताये बगैर आरती को खाना हजम नहीं होता। ननिहाल मे आरती नाना और नानी के बीच मे सोती है। नानी बहुत देर तक नातिन की पीठ गुदगुदाती रहती है और नाना राजकुमारो-राजकुमारियो की कहानिया सुनाते हैं। "पता है काकली, एक रानी है ना, इतनी बदमाश थी कि मन्तर पढकर अपने सौतेले बेटो को हस बना दिया था, और बेटी को घर से निकाल दिया

था।"

"हाय, कित्ती वदमाश !" वात सुनकर खुद काकली को भी रानी पर बहुत गुस्सा आ गया। काकली को कहानी सुनाने वाला कोई नही है—माँ को इतनी कहानिया आती नही, और आती हो, तो भी सुनाने का धीरज नही है। "हस बन जाने पर तो बडी तकलीफ होती है, है ना ?" काकली को अनजान राजकुमारो की फिकर हो रही थी।

"और तकलीफ भी ऐसी-वैसी।" आरती ने जवाब दिया। "न वात न चीत, तुझे-मुझे कोई हस बना दे तो क्या हालत हो, बोल तो ? स्कूल जाना बन्द, मास की बोटियाँ चवाना बन्द, नाना के पास सोना बन्द—दिन-रात बस पानी मे तैरो और पैक पैक करो। तकदीर से हमारी मा सौतेली नही है !"

काकली अब समाचार दबा नही पायी। सहेली को उसने बता दिया कि उसके नाना भी अब कलकत्ता आ रहे है। आरती खूब जानती थी कि नाना के न आने का कितना दुख उसकी सहेली को है। इसीलिए उसे बहुत खुशी हुई। पर काकली के सिर की ओर देखकर बडी चिन्ता मे पड गयी वह। खूब डाट लगायी सहेली को। "सिर घुटाने को और कोई समय नही मिला था ?"

"सिर घुटाने मे तो राजकुमारी जैसे बाल आयेंगे, माँ ने कहा था।" काकली के इस उत्तर से आरती को जरा भी सन्तोष नही हुआ। उसे चिन्ता थी, अगर उसके नाना की तरह काकली के नाना भी नातिन से ब्याह करना चाहे, तो ? "घुटी चाद लेकर कैसे ब्याह करेगी ?" आरती ने मुह बिचकाया।

अनजाने भय से घबरा उठी काकली। अनजाने ही अपने सिर पर हाथ फेर लिया। वात पर उसे ठीक विश्वास नही आ रहा था। आरती फुसफुसाकर अपने अनुभव बताने लगी, "मुझसे ब्याह करने के लिए तो नाना उतावले हो रहे हैं। अभी से ही

मुझे छोटी बहू कहकर पुकारते हैं। मैंने तो मुह पर कह दिया था, ऐमे तग करोगे तो तुम्हारे घर आऊँगी ही नही। वैसे बूढे से भला क्यो व्याह करूँ, बोल तो ? सिर के बाल सब सफेद, आधे दाँत गायब। नाना ऐमे बत्तमीज है, कहते क्या हैं, तुम्हारे भी तो चार-पाच दात टूट गये हैं।"

"फिर ?" काकली ने पूछा। ऐसी गुप्त बाते उसने पहले कभी नही सुनी थी।

यह साफ था, आरती अब नाना पर कुछ पिघल रही है। वह बोली, "इतना डाटा नाना को, पर कुछ भी नही हुआ। हर बार मुझे खिलौने ला देंगे—कपडे खरीद दगे। इस बार दो कैंडबरी दी हैं।"

हैण्डबैग से चॉक्लेट का पैकेट निकाला आरती ने। "तेरे लिए आधी रखी है, खाकर देख।"

दोनो चॉकलेट चूसने लगी। काकली ने सलाह दी, "अगर रोज़ चॉकलेट दें, तो नाना से व्याह करना ठीक ही है।"

आरती ने जोर का प्रतिवाद नही किया। अपनी समस्या का समाधान करक अब वह बोली, "तेरे नाना इतने दिन कहा थे ?"

नाना की जरा भी याद नही है काकली को। सहेली के आगे आज उसे बडा लज्जित होना पड रहा है। काकली ने सुना है, नाना बहुत बडे आदमी हैं। बहुत बडी सरकारी नौकरी की है नाना न। देश विदेश मे कितनी ही जगह घूमे हैं नाना—वाशिंगटन, टोकियो, न्यूयॉक, लन्दन, पेरिस, हागकाग, काहिरा। कितनी अनोखी जगहो के नाम बताती है माँ। मा से नाना की सारी बाते जान लेनी होगी।

"हाय राम ! यह कैसे कह दिया कि नाना को तूने देखा नही ?"

बेटी को भीचकर अदिति ने दुलराया ।

दिल्ली के अस्पताल मे जब काकली पैदा हुई थी, तब पहले-पहल उसका मुँह नाना ने ही तो देखा था । नाना की गाडी पर चढकर ही तो काकली अस्पताल से घर गयी थी । तस्वीरो के अलबम म नाना को गोदी मे चढकर खिचवाया हुआ एक रगीन फोटो है—वह पेरिस मे खीचा गया था ।

"अइया ! मैं भी पेरिस गयी थी ।" हैरान थी काकली ।

"जरूर, गयी थी । नाना ने ही तो मेरे और तेरे जाने के लिए हवाई जहाज का किराया भेजा था । नाना तब वही नौकरी करते थे ।"

काकली अब कुछ शान्त हुई । अदिति को याद आया, पेरिस मे बाबूजी के साथ और भी कितनी तस्वीरे खिचवाने का प्रोग्राम था । पर बाबूजी तो हर समय काम, सिफ काम मे डूबे रहते थे । जिस दिन उनकी मोटर द्वारा पेरिस से बाहर जाने की बात थी, उसी दिन दिल्ली से न जाने कौन सा गुप्त समाचार आ गया ।

बाबूजी ने कहा, "देश की हालत अच्छी नही है, किसी भी समय शत्रु हमारे देश पर आक्रमण कर सकता है ।" बाबूजी उसी समय फ्रासीसी सरकार के किसी अधिकारी के साथ गुप्त बातचीत करने भागे ।

अदिति की छुट्टी समाप्त होने को आ रही थी । बाबूजी भी कितने ही कामो मे फँस गये थे—भगवान ही जानते है कि विदेश मे इण्डिया के राजदूत को इतना क्या काम हो सकता है । पर वे सब बाते गुप्त थी—बाबूजी ने कभी भी घर लौटकर ऑफिस की बातें नही बतायी ।

मा जब जिन्दा थी, तब उन्होने एक दो बार इसे लेकर खुला अभियोग लगाया था "हम तो तुम्हारी बाते दुश्मनो के कानो

मे फूकने नही जा रहे !" बाबूजी चुपचाप मुस्कुरा दिये थे, कोई जवाब नही दिया था।

"तुम्हारे नाना बहुत ही गम्भीर और सरल आदमी है।" अदिति ने काकली को याद दिला दी।

अब यह क्या कह रही है माँ ? नाना लोग कभी भी सख्त नही होते। काकली की मा ने कहा, "तुम जैसे पप्पा की गोद मे बैठकर मनमानी शैतानिया करती हो, फोन उठाकर ऑफिस मे पप्पा पर सौ तरह से हुकुम चलाती हो, इस सब की तो मुझे और तुम्हारी मौसी को बचपन मे हिम्मत ही नही होती थी।" इन दो के अलावा एक तीसरे की भी याद अचानक ही आ गयी अदिति को।

माँ का उदासी-घिरा चेहरा देखकर काकली भी बता सकती है, माँ अभी मामा की बात सोच रही है। कैसा अजीब नाम था मामू का ! केन्यामामू की गोद मे खिचायी हुई एक रगीन तस्वीर है काकली की। माँ की सहेली खुकू मौसी ने समझा था, उनका नाम होगा कन्हैया।

माँ ने कहा, "नही, कन्हैया नही है उसका नाम—बाबूजी तब केन्या मे पास्टेड थे। वही उसका जन्म हुआ, इसलिए सब उसे केन्या कहकर ही पुकारते थे।"

तस्वीरो का अलबम पलटते पलटते केन्यामामू की रगीन फोटो के आगे आकर माँ ठिठककर रुक गयी है। मा की आखो मे आसू है—केन्यामामू के बारे मे बात चलते ही मा रा पडती है। काकली ने आरती को यह बताया था। आरती ने कहा था, "देख, तेरे मामू शायद धरती छोडकर आकाश के तारे बन गये हैं। मरने पर आदमी तारे बन जाते हैं, पता है ना तुझे ? दूर से वे लोग सबकुछ देखते है, पर पास नही आ सकते।"

केन्यामामू की खूब याद है काकली को। यहा आकर कुछ

दिन रहे भी थे। काकली को लेकर चिडियाघर, अजायबघर, विक्टोरिया मेमोरियल, सब दिखला लाये थे मामू। और जाते समय अपने बैग से निकालकर दिया था—काला-कलूटा एक भालू। भालू को मामा ने जाने कहाँ छिपा रखा था, काकली को पता ही नही चला। पता चलता तो कभी का उसे बैग से निकाल लेती।

काकली आकाश के तारो की तरफ एकटक देख रही है। सब एक से दिखायी देते हैं—इनमे से केन्यामामू कौन से हैं, काकली को पता नही चलता। नाना जरूर पहचान लेगे। नाना आ जायें, फिर उनसे यह बताने को कहना होगा।

मा ने सावधान कर दिया था, "सबके नाना एक-जैसे नही होते। तुम्हारे नाना आरती के नाना-जैसे नही है। बाबूजी बहुत गम्भीर हैं—उनमे बात करने की तो मेरी भी हिम्मत नही पडती।"

काकली इस सब पर विश्वास नही करती। कही काकली नाना को तग न करे, इसलिए मा पहले ही डराये दे रही है। पर काकली कोई भी बात नही सुनेगी, नाना को खूब डाटेगी। पूछेगी, आरती के नाना की तरह हर शनिवार अपनी बेटी को देखने के लिए नही आ सकते? इसके बाद काकली और भी कई तरह के हुकुम चलायेगी—वे सब बाते मा को पता भी नही चलगी। क्योकि सारी गुप्त बातें लुके छिपे होगी, रात को नाना के बिस्तर मे घुसकर।

नाना के साथ नानी भी होती तो बडा मज़ा आता—नाना जब कहानी सुनाते तो नानी माँ पीठ खुजा देती। नानी भी कब की आकाश का तारा बन चुकी ह, काकली के जन्म के पहले ही। कैसे हैं नाना—न नानी, न मामा, अकेले-अकेले आयेगे।

काकली एकचित्त होकर अलबम मे नाना की तस्वीरे देख

रही है। माँ के साथ, केन्यामामू के साथ, कनाडा मौसी के साथ, नानीमाँ के साथ खिची हुई तस्वीरे ज्यादा नही हैं। ज्यादातर तस्वीरें अनजाने लोगो के साथ खिची हुई ह। माँ ने कहा है, "ये लोग हर्गिज अनजाने नही हैं, वडी होगी तव समझोगी, ये सब वहुत बडे आदमी है। सारी दुनिया इन्हे पहचानती है—जापान के सम्राट, हॉलैण्ड की रानी, कनाडा के प्राइम मिनिस्टर, और भी न जाने कौन कौन।"

काकली को इन सब लोगो को देखने मे कोई दिलचस्पी नही है—जिन लोगो को पहचानती हो नही, उनके साथ तस्वीर खिचवाने से फायदा ? मा ने कहा, "तुम्हारे नाना इतना बडा काम जो करते थे।"

काकली वडी अनिच्छा से वे तस्वीर देख रही है—और उसी बीच माँ सोच रही है, वावूजी का नौकरी का दौर अव खतम हुआ है। फॉरेन सर्विस मे देश विदेशो मे ही सारा जीवन बिताकर बाबूजी अब जीवन के बाकी दिन कहाँ बितायेंगे ? लौटकर वावूजी ने दिल्ली मे ही मकान लिया है। निमल चौधरी का नाम दिल्ली मे सव जानते हैं। यहाँ भी सभी ने सुना है उनका नाम—समाज मे अदिति की पहचान निमल चौधरी की वडी बेटी के रूप मे ही तो है।

एक बार अफवाह उडी थी, निमल चौधरी वगाल के राज्यपाल वन रहे हैं। तब कितने ही लोगो ने अदिति को फोन किया था। पुराने जमाने के सरकारी कर्मचारी थे निमल चौधरी—अपनी वेटी को भी गुप्त सरकारी प्रस्ताव की वात नही लिखते। काकली के पापा उसी समय दिल्ली गये थे। लौटकर वताया, बात ठीक थी। प्राइम मिनिस्टर ने अनुरोध किया था, पर बाबूजी तैयार नही हुए। "अब कुछ भी अच्छा नही लगता।" बाबूजी ने दामाद से कहा था।

बाबूजी को काम अच्छा न लगे, ऐसा भी कभी हो सकता है, यह अदिति सपने मे भी नहीं सोच पाती। मुन्ना ने सब गड-बड कर दी। ट्रककॉल मे दुघटना की खबर पाकर अदिति भागी गयी थी चण्डीगढ। तब तक सब खतम हो चुका था। जिस लॉरी-ड्राइवर ने मुन्ना को कुचल दिया था, वह पकडा गया था। निमल चौधरी के बेटे के स्कूटर को कुचलकर वह भला कैसे निजात पाता? पर उसने कहा था, उसका दोष नही है, स्कटर मानो जान-बूझकर ही उसकी लॉरी के आगे आ गया था। इस बात पर किसी ने भी विश्वास नही किया। ड्राइवर को कडी सज़ा हो गयी थी।

तब से ही जाने क्या हुआ कि बाबूजी चण्डीगढ का काम-काज छोडकर दिल्ली आ बैठे।

हर साल मुन्ना की बरसी पर बाबूजी अग्रेजी अखबार मे एक विज्ञापन देते है, और दोनो लडकियो के पास एक-एक केक भेजते है। वह भी एक जबरदस्त दुख है, आसूभरी आखे लिये, केक काटकर हिस्से करने पडते हैं। बाबूजी ये केक क्यो भेजते है, अदिति को पता नहीं है। बाबूजी से पूछ भी नही सकती। शायद इसलिए भेजते हैं कि मुन्ना को केक पसन्द थे। या फिर काकली की तरह ही बाबूजी भी सोचते हैं कि मुन्ना उस दिन आकाश का तारा बन गया। उसका पुनजन्म हो गया।

वैसे दिन माँ की हालत देखकर काकली डर जाती है—पूछती है, "माँ, रो क्यो रही हो? तुम्हारे पापा केक लेकर खुद नही आये, इसलिए-?"——

ना, अभी ये सब दुख की बातें नही सोचेगी अदिति। लडकी से कहा, "तुम जाकर खेलो, जाओ।"

नाना आ रहे हैं, इसीलिए काकली सुबह से ही उठकर काम मे लग गयी है। दो दिन से खुद ही सर्फ के चूरे से गुडियो के कपडे धोये हैं। बेटो के पाउडर लगाया है, बाल सँवार दिये हैं। नाना को एक बार लिखा था काकली ने, "मेरे चार बेटे हैं—बहुत ही शैतान, पढाई-लिखाई मे मन नही लगता। बडे दो बेटे नौकरी कर रहे हैं।"

बेटो मे बडे की शादी हो गयी है। पप्पा उसे शादी शुदा हालत मे ही बम्बई से खरीद लाये थे। कितना सुन्दर, प्यारा बच्चा है। बहूरानी भी सुन्दर है, पर सलवार कमीज पहन रखी है। बदन पर रंगीन चुन्नी, नाक मे नथ। पप्पा को भी दुनिया-दारी की कोई समझ नही है! जानते सुनते पजाबी बहू उठा लाये। और कोई तकलीफ नही है, बस, उसे सजाते समय काकली को हिन्दी मे बाते करनी पडती हैं। काकली ने देखा है, बँगला मे बोलने से गुडिया कुछ भी समझ नही पाती, आखे फाडकर उसकी तरफ देखती रह जाती है।

"देखो, नाना के सामने कही मेरी नाक नीची न हो। तुम लोग बिल्कुल भी शैतानी नही करोगे, मैं जो कहूँगी, वह सुनोगे," काकली बेटो और बहू को सावधान किये दे रही है, "अगर बात नही मानोगे, तो कोयले के ढेर पर फेक आऊँगी, वहाँ मे चूहे खीच ले जायेगे।"

इसी समय नाना आ गये। पहले काकली कुछ-कुछ शरमा रही थी। ऐसे ही समय माथे को घोटमोट होना था।

नाना ने कपडे-अपडे बदलकर उसकी ओर देखा। बडी बेटी की इकलौती सन्तान, मँझली बेटी के कोई बाल बच्चे नही हुए। और मुन्ना के—निर्मल चौधरी के मन मे अचानक ही मानो काँटा कसक उठा। हिसाब लगाकर उन्होने देखा, मुन्ना जिन्दा रहता तो अब तक कोई पोता-पोती भी गोद मे होते। अदिति

की बेटी की ओर अवाक् होकर देखते रहे रिटायर्ड राजदूत निमल चौधरी। भारी-भरकम चेहरा-मोहरा—शरीर का रग सोने-जैसा। बाल पकने लगे हैं। आँखो पर चश्मा—जिसके मोट काँच का रग हल्का नीला है।

काकली को बहुत शरम आ रही थी। नाना कैसे देख रहे हैं उसकी तरफ! नाना सोच रहे हैं, मीठू उफ अदिति की बेटी कितनी प्यारी दिखती है। इसके रग से तो मेमे भी मात हो जाय। बडी-बडी आँखो मे नीले रग की-सी आभा—यह काकली को अपनी मा से मिली है। नरम नरम गोल मटोल हाथ भी बडे प्यारे लगे निमल चौधरी को। याद आया, वाशिगटन के एक डिपार्टमेण्टल स्टोर मे उन्होंने एक बडी सारी गुडिया देखी थी। तब उस गुडिया को खरीदने के लिए अदिति ने खूब जिद की थी। दूकान के मनेजर ने कहा था, यह गुडिया बिकाऊ नही है। तब कितना रोयी थी अदिति! मीठू को क्या यह बात याद है? अब तो उसे एक जीती-जागती गुडिया मिल गयी है।

अदिति ने देखा, उसके इतने गम्भीर बाबूजी को भी काकली ने कुछ ही घण्टो मे पालतू बना लिया है। अदिति ने कहा था, "दिन-रात दादीअम्मा की सी बातें करती है। और इसके पापा जरा भी नही डाँटते डपटते। तुम्हे कोई परेशानी हो, तो डाँट देना।"

काकली ने सोचा था, नाना के बैग मे ढेर-सारी गुडियाँ होगी। नही हैं गुडियाँ। इसके बदले हैं, ढेर-सारी किताब। पापा के लिए, अपनी बेटी के लिए, काकली के लिए किताबें लाये हैं नाना। किताबें तो काकली को जरा भी नही सुहाती। नाना पर काकली को गुस्सा आ रहा है—दो एक गुडियाँ साथ नहीं ला सके? माँ

सुनेगी तो गुस्सा हो जायेगी। कहेगी, गुडियो की भीड के मारे घर मे अब ज्यादा जगह नही है। जब जहाँ तबादला हुआ है, नाना ने वही से डाक द्वारा गुडियाँ भेजी है। काकली तब छोटी थी, इसीलिए याद नही है।

घर मे बेट बेटियो से भी कुछ दूरी रखकर चलते रहे हैं निर्मल चौधरी। पिता के साथ वे लोग कभी भी घनिष्ठ नही हो सके। पर लगता है, नातिन के हाथो ही उन्हे हार माननी होगी।

नाना का हाथ पकडकर काकली ने अपने परिवार से उनका परिचय करवा दिया। कहा, "मेरा बडा बेटा राहुल—पोस्ट-ऑफिस का पियून है। इसकी शादी हो गयी है। तुम्हारी सब चिट्ठिया तो यही घर ले आता है!"

'वाह, बहूरानी तो बडी सुन्दर है।" नाना ने गम्भीरता से कहा।

"शादी मैंने नही की है, खुद ही व्याह कर लाया है।" काकली ने दबी आवाज़ मे बताया।

और भी तीन बेटो की माँ है काकली। इनमे से कोई पुलिस का सिपाही है, कोई मोटर-साइकिल चलाता है। कितना सुन्दर जमाजमाया परिवार है।

छोटे बेटे को कुत्तो का शौक है—इसीलिए उसे सफेद कुत्ते के पास सुला दिया है। कुत्ता हर समय सिर हिलाता रहता है, एकदम चौकन्ना रहता है। अदिति ने कहा, "याद है बाबूजी, ऊन-वाला कुत्ता तुमने रोम से भेजा था!"

काकली नाना से चिढ गयी। कहा तो बेटो को गोद मे लेकर प्यार करना था, मुँह देखकर चार-चार आने पैसे देना था, और कहाँ गुड्डो को देखकर नाना कहने लगे, "बडी होओगी तब पता चलेगा, गुडियो की आँखें ऐसी नीली क्यो होती हैं। रानी विक्टोरिया की नीली आँखो के सम्मान मे। बचपन से ही उन्हे गुडियो का

शौक था—१३२ गुडिया थी उनके पास। गुडियो का व्यवसाय जव जमनो के हाथो मे चला गया, तब भी आँखे नीली ही बनती रही।"

काकली ने जैसे ही छोटे वेटे को वैठाया, उसने आखे खालकर देखा। कितनी सुन्दर आँखे ! नाना ने कहा, "एट्टीन ट्वेण्टी सिक्स—१८२६ ईस्वी के पहले गुडियाँ आखे खोल या वन्द नही कर सकती थी।"

काकली ने बताया, "मेरा सिफ छोटा वेटा ही बोलना जानता है। मुझे देखते ही अग्रेजी मे 'मम्मी-मम्मी' कहने लगता है। कितना डाटती हूँ उसे कि वँगला मे 'मा' कहा करे—पर वह सुनता ही नही।"

माँ ने कहा, "यह गुड्डा भी तो तुमने बॉन से भेजा था।"

नाना कितनी बातें जानते है। वोले, "मिलजेल नामक एक जमन ने ही तो पहले-पहल गुडियो को 'मम्मी' बोलना सिखाया था।"

काकली के लाडले भालू के पास आते ही परिस्थिति बदल गयी। माँ सव जानते हुए चुप थी। काकली ने कहा, "केन्यामामू यह टेडी बेयर लाये थे—हा, तब यह बहुत छोटा जरूर था, मैंने दूध पिला पिलाकर इसे वडा किया है।"

सभी अचानक ऐसे चुप क्यो हो गये ? काकली को समझ मे नही आ रहा है। टेडी वेयर को दुलारकर काकली बोली, "नाना, तुम इसे गोद मे ले सकते हो—तुम्हे यह कुछ नही कहेगा। कैसे टुकुर-टुकुर तुम्हारी तरफ देख रहा है, देखा।"

नाना ने कहा, "इस भालू के पुतले का जन्म हुआ था अमरीका मे। प्रेसिडेण्ट थियोडोर रूजवेल्ट के पुकार के नाम पर इसका नाम रखा गया 'टेडी'।"

हो सकता है, काकली की बात मानकर नाना टेडी को दुला-

रते—पर माँ जानबूझकर ही नाना को लेकर चल दी।

गुडिया के नाम पर नाना अब काकली को ही देख रहे है। अदिति की बिटिया कितनी प्यारी है ! नाना को लुभाने के लिए ही शायद सुबह माँ की लिपस्टिक होठो पर लगा ली थी। चेहरे पर बडे जतन से रुज लगाया है। काकली को पता है, नाना की नजर उसी पर टिकी हैं। वह बोली, "नेल-पॉलिश मा ने न जाने कहाँ छिपाकर रख दिया। वह लगाने से मैं बहुत सुन्दर लगती हूँ।"

"तुम्हे एक अलग नेल-पॉलिश खरीद दूगा।" नाना जैसे घूर रहे है, कही अभी ही 'छोटी बहू' कहकर न पुकार बैठें।

पर नेल पॉलिश की जगह कोई और चीज चाहती है काकली। "कौन सी चीज, बताओ ?" नाना ने पूछा।

"पहले कहो, कि किसी को नही बताओगे ?" काकली ने नाना से सौगन्ध रखवा ली। फिर कान मे बोली, "मेरे कोई बेटी क्यो नही हो रही है, बोलो तो ? मुझे एक बेटी दोगे तुम ?"

यह भी ऐसा कौन-सा अनुरोध है। पहले पता रहता तो विदेश से ही एक सुन्दर-सी गुडिया ला सकते थे। रात को नाना के पास लेटकर काकली और भी पास सरक आयी, षड्यन्त्र की मुद्रा मे फुसफुसाकर बोली, "किसी को भी पता न चले।"

डिप्लामटिक नौकरी मे निमल चौधरी ने बहुत-सी बाते गुप्त रखी हैं, बहुत जिम्मेदारिया आयी हैं, पर इस नातिन की तरह किसी ने नही कहा, "किसी को पता चला, ता खुट्टी-खुट्टी-खुट्टी। मैं भी केन्यामामू की तरह आकाश का तारा बन जाऊँगी।"

स्टीलफ्रेम की नौकरी मे अपने को भी इस्पात की ही तरह तैयार कर लिया था निमल चौधरी ने। यह पहली बार वे मानो हार रहे है।

अगले दिन रथयात्रा थी। रथ का मेला-ठेला कितने दिन से नही देखा है निमल चौधरी ने। सारा जीवन ही तो उन्होने देश के बाहर-बाहर ही बिता दिया है। सोचा था, मेले मे काकली को ले जायेंगे। पर अदिति ने रोक दिया। "बेहद भीड होगी—तुम्हे यहाँ का कुछ अन्दाज भी नही है। साथ छूट जाने मे भला कितनी देर लगती है ?"

जिसकी चीज हो, उसी को पसन्द के हिसाब से खरीदना अच्छा रहता है, पर काकली को साथ ले नही जा पा रहे हैं। अदिति ने कहा, "इतनी-सी बच्ची की भला पसन्द क्या ? कौन-सा उसके लिए दूल्हा ला रहे हो।"

गम्भीर निमल चौधरी ने कोई उत्तर नही दिया। सडक पर निकले, तो लडकी की आखिरी बात कानो मे गूँजने लगी। अपनी दोनो लडकियो के वर स्वय उन्होने ही पसन्द किये थे। और लडके की बारी पर मुन्ना से बोले थे, जब तक वे हैं, तब तक उनकी पसन्द की भी कीमत रहेगी।

विलायत-अमरीका मे कर्मजीवन बिताकर लौटे निमल चौधरी रथ के मेले पर मोहित हो गये। खुले आकाश के नीचे, हजारो की धकापेल की तरफ से निर्लिप्त होकर वे बहुत देर तक घूमते रहे। फिर साखू के पत्तो का एक डिब्बा हाथ मे लिये घर लौटे।

काकली दौडी-दौडी आयी। उसके मा पापा तो थे ही। नाना बोले, "तुम लोगो की बेटी के लिए एक बेटी लाया हूँ।'

काकली से अब देर सही नही जा रही थी। "नाना, चटपट लडकी दिखाओ। उसका नाम भी तय कर लिया है—चन्द्रा।"

डिब्बा खोलते ही कमरे मे एक अस्वाभाविक चुप्पी उतर आयी। अदिति ने सोचा था, बाबूजी किसी मनिहारी की दूकान से नातिन के लिए नायलॉन की गुडिया खरीद लायेंगे। उसके

बदले रथ के मेले से मिट्टी की गुडिया ले आये नाना।

"क्या हुआ ? रो क्यो रही हो ?"

आँखे मसलते-मसलते काकली ने अब तक रोना शुरू कर दिया था, "यह मेरी बेटी ! यह तो काली भुच्च है।"

अदिति और उसके पति शर्मिन्दा हो गये। लडकी को नाना के सामने डाँट भी नही पा रहे हैं। फिर भी बोले, "छि काकली, नाना जो भी लायें, लेना चाहिए।"

गुडिया तो गुडिया। उसके रूप को लेकर नातिन इतना तूफान खडा कर देगी, निर्मल चौधरी को अन्दाज़ ही नही था। उनके बच्चे भी बचपन मे गुडियो से खेले हैं, पर उन्होने तो कभी पिता की पसन्द के ऊपर कुछ नही कहा।

"हाय राम ! कैसी गन्दी, काली है। मेरी बेटी भला ऐसी काली क्यो होगी ?" काकली अब बाकायदा गुस्सा ज़ाहिर कर रही थी।

अपराधी की तरह मौन खडे निमल चौधरी ने देखा, उनकी नातिन का रग मेमा जैसा गोरा है। उनकी लडकी, दामाद, यहाँ तक कि वे खुद भी खासे गोरे हैं।

अदिति ने भी तिरछी नज़र से गुडिया की ओर देखा। लडकी से कहा, "क्यो शोर मचा रही हो ? अच्छी तो है गुडिया।"

"अच्छी है ?" फुफकार उठी काकली, "तुम्हारी बेटी अगर ऐसी होती, तो तुम लेती ?"

एक चक्का-सा लगा अदिति को। अपनी बेटी अगर वैसी होती, तो सच, क्या होता ? वैसी कुरूप लडकी की बात इस समय अदिति सोच भी नही पा रही है। गुडिया की गदन गायब है, ललाट बाहर निकला पड रहा है, भेंगी आखें, होठ भी जाने कैसे।

अदिति लडकी को डाँट ज़रूर रही है, पर बाबूजी भी भला देख-सुनकर ऐसी गुडिया क्यो ले आये ? बाज़ार मे क्या और

गुडिया नही थी ?

बाजार मे और बहुत-सी गुडिया थीं जरूर, पर घूम-घूमकर देखते हुए निमल चौधरी की नज़र सुन्दरियो की भीड मे उसी गुडिया पर पडी। कुरूप गुडिया को कोई नहीं चाहता। दूकानदार ने भी जमीन पर सजायी हुई सुन्दर-सुन्दर गुडियो की जमघट से उसे कुछ दूर ही खिसका रखा है। गुडिया धडाधड बिक रही है—पर उसकी ओर देखते ही सब मुह फेर लेते है। दूकानदार देहाती आदमी है—इस रथ के मेले मे अपनी बनायी हुई गुडिया बेचने शहर आया है।

निमल चौधरी को याद आया, मुन्ना को लेकर एक बार केन्या के बाजार मे गुडिया खरीदने गये थे। वहाँ भी एक कुरूप, लूली गुडिया थी—मुन्ना ने उसी को पसन्द किया। कहा, 'बाबूजी, उसे देखकर मुझे दुख होता है। कोई उसे नही ले रहा है।" छोटे बच्चो का खयाल था कि वे उन लोगो का मन नही पहचानते। पर उन्होने कोई बाधा नही दी। "तुम्हे जो पसन्द हो, वही लो।" मुन्ना से कहा था उन्होने।

रथ के मेले मे ताड के पत्तो की बनी हुई ढेरो पेंपियाँ बज रही थीं। तले पापडो की खुशबू से हवा छायी हुई थी। कुछ दूर पर बच्चे नागर हिंडोले पर चढ रहे थे। सैकडो आदमी सौदा कर रहे थे, जलेबी खा रहे थे। इस भीड मे पल भर खडे होकर सोचने की गुंजाइश नही—पर निमल चौधरी को पुरानी बाते याद आ रही है। मुन्ना शायद बचपन से ही अलग तरह का था। नही तो भला बडा होकर कोई ऐसा हो जाता है ? भूतपूर्व राजदूत निमल चौधरी का इकलौता बेटा। राजकुमारियो जैसी कन्याओ के पिता विवाह का प्रस्ताव लेकर उन्हे घेरे रहते थे। पर लडका जाने कहाँ से चण्डीगढ की भंगी कॉलोनी की एक काली कुरूप लडकी को पसन्द कर बैठा।

लडकी को मुन्ना एक दिन घर पर भी लाया था पिता को दिखाने के लिए। मोती जैसे लडके के गले मे मानो बन्दर की माला हो। आग की तरह धधक उठे निर्मल चौधरी। लडके से साफ कह दिया, उस लडकी से शादी नही हो सकती।

मुन्ना की हिम्मत भी कम नही थी। बहस करने लगा, "सूरत बुरी होने से ही क्या आदमी भी बुरा हो जाता है ?"

"नौकरी न चाकरी, बाप के होटल मे रहनेवाले को यह सब बहस नही फबती। इस घर मे उस लडकी को लाना नही चल सकता। समाज मे निर्मल चौधरी की एक इज्जत है।"

मुन्ना ने तब कोई उत्तर नही दिया। पिता को जवाब देने की शिक्षा उसे नही मिली थी। कुछ पल वह सिर नीचा किये बैठा रहा। निर्मल चौधरी खुद नाराजगी से बैठक से उठकर पढने के कमरे मे चले गये थे। मुन्ना उस कुरूप लडकी को घर पहुँचा देने के लिए स्कूटर लेकर निकल गया—वह आवाज भी निर्मल चौधरी ने सुनी थी। उसके बाद वह भयकर रात। रात ग्यारह तक उन्होने बेटे की राह देखी थी। आखिर पुलिस को खबर दी थी। इसके दो घण्टे बाद अस्पताल के मोर्ग मे मृत बेटे का मुह देखना पडा था निर्मल चौधरी को। लॉरी के साथ स्कूटर की टक्कर—अखबार मे यही खबर निकली थी। लडकी को छोड-कर घर लौटते समय मौत ने मुन्ना को पुकार लिया था। पिता से डाट खाकर क्या मुन्ना अन्यमनस्क हो गया था ? या और कुछ ? दुर्घटना ? या आत्महत्या ? जो इस सबका ठीक जवाब दे सकता था, वह अब सबकी पहुँच के बाहर है।

रथ का बाजार सुस्त पड गया है। अब रात के आठ बजे हैं। काकली जरूर अब तक नाना के लिए जागी बैठी होगी। रथ के दूकानदार सब रेल के यात्री हैं—उनमे से कइयो ने बिक्री बन्द कर दी है। घूमते-घूमते निर्मल चौधरी न जाने किस आक-

र्पण से उसी गुडियो की दूकान पर लौट आये। टिमटिमाती हुई एक मोमबत्ती जल रही है। सुन्दर-सुन्दर गुडिया सब बिक गयी हैं। पर *जिसके लिए लौट आये हैं, वह कुरूप गुडिया अब तक* पडी है। दूकानदार नही समझ सका कि वह विश्वविख्यात भारतीय अफसर निमल चौधरी से बात कर रहा है। निमल चौधरी ने पूछा, "उस गुडिया को इस तरह कीचड मे क्यो डाल रखा है?"

"वह सुन्दर जो नही है बाबू।" आदमी ने मुट्ठी-भर मुरमुरे फाकते हुए कहा। दिन-भर काम करते करते बेचारे को भूख लग आयी है।

"वह ऐसी 'अग्ली' क्यो हुई?" निर्मल चौधरी ने पूछा।

लगता है, आदमी ने सहज ही अन्दाज लगा लिया कि 'अग्ली' का अर्थ 'बदसूरत' होता है। मुरमुरे चबाना बन्द करके उसने कहा, "हाथ की पाँचो उँगलिया क्या बराबर होती हैं हुजूर? कोशिश तो करता हूँ कि सभी सुन्दर तैयार हो। पर भाग्य जो जैसा ले आये!"

गाँव का कुम्हार होने से क्या होता है, आदमी की बातें खूब है, निर्मल चौधरी ने सोचा। पर बोले, "कुछ भी कहो भैया, देखने मे बडी गन्दी है।"

आदमी ने सोचा, बाबू शायद यह सब कहकर गुडिया का दाम कम करवाना चाहते हैं। इसीलिए बोला, "देखने मे खराब होने से ही क्या कोई आदमी खराब हो जाता है बाबू? अब उठने का समय आ गया है—पचहत्तर पैसे मे ही दे दूगा।"

निर्मल चौधरी को अचानक ही सारे शरीर मे एक सिहरन महसूस हुई। मुन्ना की बातें अचानक ही याद आ रही हैं। भगी कॉलोनी की उस काली कुरूप लडकी की सूरत याद करने की कोशिश की। फिर कीचड-सनी, बदसूरत उस गुडिया को प्यार

ने उन्होंने उठा लिया। मामबत्ती के अस्पष्ट उजाले में परम स्नेह से उसके मुंह को देखा, फिर जेब से पूरे दस रुपये का नोट निकालकर उस आदमी को पकड़ा दिया। बाकी पैसे वापस लिये बिना ही उस आदमी को हैरत में डालकर निमल चौधरी तेजी से बेटी के घर की ओर चल दिये थे।

काकली-जैसी वित्ते-भर की बच्ची भी गुड़िया के रूप को लेकर इतना तूफान मचा देगी, यह निमल चौधरी सोच भी नहीं सके थे। राई-रत्ती करके वह गुड़िया को देख रही है, और एक के बाद एक, तरह-तरह की खामियाँ निकाल रही है। अदिति ने फिर लड़की को डाँटा, "छि काकली, नाना जो भी लायें, खुशी-खुशी लेना चाहिए।"

काकली के कानों में वह बात घुसी ही नहीं। उसने डाँट लगायी, "नाना, तुम्हें जरा भी अक्ल नहीं है—मेरी बेटी दिखने में भला ऐसी क्यों होगी?"

बाबूजी कुछ बोल ही नहीं रहे हैं। निमल चौधरी को नातिन छोड़कर शायद और कोई इस तरह नहीं डाँट सकता। बाबूजी भला देख-सुनकर ऐसी गुड़िया क्यों ले आये?

"तुम क्या चश्मा ले जाना भूल गये थे?" अदिति ने पिता से पूछा।

चश्मा तो साथ ही था, निर्मल चौधरी ने स्वीकार किया।

एक गुड़िया को लेकर यह मामूली सी बात क्रमशः इतनी बढ़ जायेगी, यह किसने सोचा था! काकली ने कहा था, "अभी भी समय है नाना, तुम दूकान पर जाकर इसे बदलवा लाओ।"

इतनी रात को कहाँ जायेंगे नाना? और फिर मेला भी तो कब का छूट गया है। पर काकली कहाँ छोड़नेवाली थी!

आखिर तय हुआ, जो करना होगा कल किया जायेगा। इस बीच काकली सहेलियो से सलाह करके देख ले।

नाना की बगल मे बिस्तर पर सोकर काकली को आज नीद नही आ रही है। वह छटपटा रही है और नाना सोच रहे हैं, आजकल के बच्चे अपनी ही बात रखते हैं।

"नाना, तुम्हे क्या लगता है, उस लडकी का ब्याह होगा?" काकली ने पूछा।

चिन्तित नातिन को नाना ने दिलासा दिया, 'क्यो नही होगा? जिन्हे भगवान ने सुन्दर नही बनाया, उनका क्या ब्याह नही होता?"

"अपनी सहेली आरती को कल लडकी दिखाऊँगी। उसके एक बेटा है—पसन्द कर ले तो ठीक है। तब उसे लौटाना नही पडेगा।"

काकली ने करवट बदली। फिर गम्भीरता से बोली, "आरती का बेटा बडा सुन्दर है—एकदम मेरे बडे बेटे जैसा। तुम्हे क्या लगता है, इसे पसन्द करेगा?"

इस विषय को लेकर खुद नाना के मन मे ही यथेष्ट भय है, फिर भी उन्होने नातिन को तसल्ली दी। काकली को नाना के ऊपर गुस्सा आ रहा है। अपने बाल बच्चो को लेकर मस्त थी। न जाने कहा से इस काली कुरूपा लडकी को लाकर नाना ने उसकी नीद छीन ली।

खुद नाना को अब जोरो से नीद आ रही थी। ऐसे समय देखा, बिस्तर मे उठकर काकली गुडिया से कह रही है, "बस, बस बहुत हुआ—अब मुह फुलाये खडी मत रहो। जल्दी से यह दूध पीकर सो जाओ।"

बिस्तर पर लौट आयी काकली। फुसफुसाकर बोली, "पता है नाना, अचानक याद आया, काली लडकी को तो सोने के लिए कहा ही नही—मेरे और सब गुड्डे गुडिया बिस्तर पर हैं। उठकर देखती हूँ, तो जो सोचा था, वही हुआ। सब सो रहे हैं, और वह सूखा मुँह लिये चुपचाप खडी है। कुछ खाया भी नही—तकदीर से दूध का गिलास पडा था।"

गुस्से के मारे आज काकली ने दूध नही पिया था—माँ गिलास टेबल पर रखकर चली गयी थी।

काकली ने नाना से कहा, "क्या मिजाज़ है लडकी का! दूध पीने को तैयार ही नही हो रही थी। पर कल दोपहर को ही तुम उसे विदा कर आना।" साफ साफ जता दिया नाना को काकली ने।

नाना और काकली, दोनो ही आज सुबह से बेहद व्यस्त हैं। थोडी देर मे ही आरती लडकी देखने आयेगी।

कमरे को झाड पोछकर साफ किया है काकली ने। नाना को एक डाँट लगायी, "क्या बैठे बैठे सिगरेट पीने से ही काम चलेगा? कोई काम नही करोगे? सारी मुसीबत की लड तो तुम्ही हो।" बात बडी कडी है। 'जड' के बदले काकली भूल से 'लड' कह गयी है।

निमल चौधरी ने मन ही-मन सोचा, लडकी ने बात गलत नही कही है। सारे जीवन मे कितनी ही भूले की हैं उन्होने—हर भूल को अगर मनका मान लिया जाये तो सचमुच ही वे मुसीबतो की लडी हैं।

सिगरेट परे कर निमल चौधरी ने पूछा, "कोई काम है?"

"जाओ, अभी पता लगाकर आओ—वे कितने लोग देखने

आयेंगे। खिलाने-पिलाने का भी तो इन्तजाम करना पडेगा। मैं अकेली कितना कर सकूँगी ?"

"क्यो, तुम्हारी बहूरानी तो है ?" नाना ने याद दिला दिया।

काकली ने मुंह बिचका दिया। "बहूरानी अभी भी सो रही है—न कोई बात सुनती है, न कोई काम करती है। लडके सब ऑफिस चले गये है।"

घर पर सबको हैरत मे डाल दिया निमल चौधरी ने। टहलनेवाली छडी लेकर निकल पडे। नौकर से पूछा, "आरती का घर कहाँ है ?"

सुबह के समय ही विशिष्ट मेहमान को देखकर आरती के माता-पिता भौचक्के रह गये। पर निर्मल चौधरी ने लडकीवालो की तरह ही विनय विगलित होकर आरती से बात की। आरती लडकेवाली थी, इसीलिए उसने काकली के नाना की विशेष आवभगत नही की। गम्भीरता से बता दिया, लडकी देखने इस घर से कम-से-कम दो लोग आयेंगे, तीन भी हो सकते है। भैया से कहा है आरती ने, पर आज स्कूल मे फुटबॉल का खेल है।

घर लौटकर नाना को सारी दोपहर काकली के साथ व्यस्त रहना पडा। काम इतना था कि काकली को नहाने-खाने का भी समय नही रहा था। नाना को मिठाई नमकीन लाने दौडना पडा। फिर काली गुडिया का सिंगार करने बैठी काकली। एक तो रूप ही ऐसा ! ऊपर से कपडो की शोभा तो देखो ! नाना को खूब सुना दिया काकली ने। "कपडे तक नही देख पाये ?" निरुपाय काकली ने अपना ही एक सिल्क का फ्रॉक चुपके चुपके फाड डाला। फिर बहुत समय लगाकर गुडिया को साडी पहनायी। पर ब्लाउज ? "नाना, तुम चटपट जाकर एक ब्लाउज खरीद ला सकोगे ?"

इत्ती-सी गुडिया का रेडिमेड ब्लाउज भला कहाँ मिलेगा ? "लडकी लाये हो, और ब्लाउज नही ला सके ?" काकली ने फिर नाना को डाँट लगायी ।

क्या करे काकली ? रहने दो ऐसे ही । निर्मल चौधरी सुझाव देने लगे कि बहूरानी का झलमल जरीवाला ब्लाउज कुछ देर के लिए ले लिया जाये । पर काकली गुस्सा उठी, "जाने कहाँ की यह लडकी, जान न पहचान, बहूरानी इसे अपना ब्लाउज क्यो देगी ?"

डाट खाकर अपराधी की तरह चुप रह गये नाना । घडी की ओर देखकर पाया, समय ज्यादा नही है । काकली खुद ही अभी तक तैयार नही हुई । दिन-भर की मेहनत से लडकी के चेहरे पर तेल चिपचिपा आया है ।

बाथरूम से हाथ मुँह धो आयी काकली । नाना को हुक्म दिया, "माँ के पास से एक साडी ले आओ । मैं माँगूगी तो माँ देगी नही ।"

पिता के कहने पर अदिति को साडी देनी ही पडी । मुँह दबाकर उसने आती हुई हँसी को रोकने की कोशिश की । नातिन के पल्ले पडकर बाबूजी की अच्छी कवायद हो रही है—खुद भी गुडिया के खेल मे मगन हो उठे हैं । वैसे हमेशा से बाबूजी और ही तरह के थे—हर समय बच्चो से दूरी बनाये चलते थे । अदिति को याद आया, अपनी बेटी के ब्याह मे भी बाबूजी ने इतना काम नही किया था । लडकेवाले जब अदिति को देखने आये थे, बाबूजी तब ऑफिस के किसी जरूरी काम से साउथ ब्लॉक चले गये थे ।

साडी पहनकर काकली ने गम्भीरता से पूछा, "कैसी लगती है नाना ?"

"बहुत ही प्यारी । जो देखेगा, वही पसन्द कर लेगा "

नाना के इस जवाब से काकली का पारा आसमान पर चढ गया, "मेरी नही—इस लडकी की बात हो रही है।"

गुडिया को खूब परख-परखकर देखा निर्मल चौधरी ने। एक दिन मे ही लडकी को सजा-सँवारकर काकली ने काफी सुन्दर बना दिया है।

"होठो पर थोडी लिलिस्टिक लगा दू ?" काकली ने अब नाना से सलाह माँगी।

"लगा दो," अनाडी निमल चौधरी ने खूब सोच-विचारकर राय दी। "माँ के पास से लिपस्टिक ले आओ।" उन्होने कहा।

"तुममे जरा भी अक्कल नही है," काकली ने फिर डाँट लगायी, "मा की लिलिस्टिक तो एकदम लाल टक्क है—फ्लेमिंगो रेड। काली लडकी के लिए चाहिए नैचरल कलर।" इतनी सी लडकी ने सारे रगो के नाम वाम रट रखे हैं।

नाना लिपस्टिक खरीदने दूकान को भागे। दूकान मे लौटते ही देखा, नातिन का गुस्सा फिर बढ रहा है। गम्भीर चेहरे से काकली बोली, "आरती अगर पसन्द न करे तो आज ही तुम्हें इसे लौटा आना होगा।"

बाहर घण्टी बजी। दरवाजा खोलकर निमल चौधरी ने देखा, लडकेवाले आ गये हैं। मा की साडी पहने आरती गम्भीर भाव से दरवाज़े के पास खडी थी।

"तीन की जगह सिफ एक ही ?" निमल चौधरी ने पूछा।

गम्भीरता से कुर्सी पर बैठती हुई आरती बोली, "एक कहाँ ? दो जने आये है हम। भूलू आया है।" छोटा सा एक कुत्ता आरती के पैरो के पास घुरघुरा रहा था। "भैया का खेल पूरा नही हुआ था, इससे वह नही आया।"

आरती आज और दिनो की अपेक्षा गम्भीर है। मानो कुछ दूरी रखे चल रही है वह।

"लडकीवालो को ज्यादा मुंह लगाना अच्छा नही है।" आरती ने कहा, "भूलू, तुम चुपचाप बैठो। अभी लडकी देखोगे।"

अब भूलू गम्भीर होकर सोफे पर चढ बैठा। कोई और दिन होता तो काकली उसे वहा नही बैठने देती। वह नाखूनो से सोफे का कपडा फाड डालता है। पर आज भनू की सम्बन्धियो-जैसी खातिरदारी करनी पडी।

काकली ने नाना से फुसफुसाकर कहा, "भूलू बहुत अकलमन्द है—इसीलिए आरती उसे लडकी दिखाने लायी है। पर उसे खिलाऊँ क्या? तुम तो सिर्फ समोसे और राजभोग लाये हो।"

प्लेटो मे नाश्ता सजाकर आरती के सामने रखा काकली ने। नाना ने कहा, "लडकी देखने के पहले जरा मुह मीठा करने की कृपा करें।"

नाश्ता देखकर भूलू उतावला हो उठा—अब वह अपनी शान कायम नही रख पा रहा है।

बेहद शर्मिन्दा होकर काकली ने पूछा, "इसे क्या दूं? थोडा-सा दूध?"

आरती गम्भीरता से बोली, "समोसा उसे सहन नही होता—पर राजभोग भूलू बडे शौक से खाता है।"

भूलू सारी बातें समझ रहा है। खाना देखकर खुशी के मारे उसकी लार टपक रही है।

दूध और राजभोग खाकर भूलू बेचैन हो उठा—जोरो से दुम हिलाने लगा। आरती बोली, "लडकी देखने के लिए वह उतावला हो रहा है।" भूलू के शरीर पर हाथ रखकर वह बोली, "छि भूलू, ऐसे नही करते। मैं चाय पी लू—तब लडकी आयेगी।"

सहेली से आरती ने कहा, "हो सके तो भूलू को भी थोडी सी चाय दे देना—पर पर तो हम दोनो को ही चाय नही

मिलती।"

निमल चौधरी हैरान से छोटी लडकियो की बडी-बडी बातें देख रहे थे। काकली ने पूछा, "लडका कितना पढा हुआ है ?"

"बी० ए० फेल।" आरती ने गम्भीरता से जवाब दिया। उसके चाचा भी इस बार बी० ए० मे फेल हुए थे।

आरती ने लडकी की पढाई लिखाई के बारे मे पूछ ताछ की। काकली बडी लज्जित हुई—उसने नाना के मुँह की ओर देखा। नाना हिचकिचाने लगे। काकली ने कहा, "गाव की लडकी है ना—पढना-लिखना बिल्कुल नही जानती।"

आरती बेहद गम्भीर हो उठी। धडकते दिल से काकली ने काली गुडिया को लाकर उनके सामने बैठा दिया।

एकदम चुप्पी—कोई एक शब्द भी नहीं बोल रहा है। लगभग दो-तीन मिनट तक आरती खूब गौर से गुडिया को देखती रही। उसके चेहरे से मन के भाव जरा भी समझ मे नही आ रहे है। भूलू भी खूब गौर से देख रहा है। फिर दौडकर आकर गुडिया को सूघ रहा है। आरती अगर डाँट न देती तो जीभ निकालकर उसे चाट भी लेता। भूलू बेहद खुश है—लगता है, लडकी पसन्द आयी है।

भगवान ही जानते हैं, आरती ने यह सब बाते कहा से सीखी है। बोली, "जरा इसके पैर देखूँ—साडी से ढके हैं।"

और कभी काकली आरती की बात नही मानती। पर आज तुरन्त पैरा पर से साडी सरकाकर गुडिया के पैर दिखला दिये।

"खाना पकाना ?" आरती ने पूछा।

काकली ने फिर तिरछी नजरो से नाना की ओर देखा। "गाँव की लडकी है ना—खाना अच्छा पकाती है।" खुद नाना ने ही उत्तर दिया।

पन्द्रह मिनट बाद बेटे की माँ भूलू के साथ घर से निकल-

गयी। काकली ने यथासम्भव भद्रता दिखायी थी। भूलू ने एक कप तोड डाला तब भी उसने कुछ नही कहा। आरती को ओट मे बुलाकर काकली ने लालच दिया था, लडकी पसन्द आ गयी तो नाना दो कैडबरी चॉकलेट खरीद देगे।

पर आरती नरम पडनेवाली नही थी। सीधे बोली, "सिर्फ चॉकलेट से क्या होता है—अपने पेट के बेट की बात भी तो सोचनी होगी।"

काली गुडिया को नाना की गोद मे बैठाकर काकली भी उन लोगो के साथ हो ली थी। नाना बैठे बठे छटपटा रहे थे। इस नाटक ने उन्हे भी अपनी लपेट मे ले लिया था।

मुह फुलाये काकली घर लौटी। आते ही नाना की गोद मे मुँह छुपाकर बोली, "मैं कुछ भी सुनना नही चाहती—उसे अभी विदा कर आओ।" आरती को लडकी पसन्द नही आयी। यहाँ तक कि भूलू भी आरती के पक्ष मे है।

गुडिया लाकर निर्मल चौधरी किस मुसीबत मे पड गये! अब इसे कौन वापस लेगा? सही बात तो यह है कि बेचारी को लौटाने की कोई इच्छा भी नही थी उनकी। एक काली लडकी को लौटाकर उन्हे उम्र-भर का सबक मिल गया है। मुन्ना ने क्या कर डाला! अब उनकी अपनी कोई पसन्द-नापसन्द नही रह गयी है।

काकली कई बार हुक्म दे चुकी है, "जाओ, उसे छोड आओ। रात हो रही है।"

निमल चौधरी फिर भी चुपचाप बैठे है। सोच रहे हैं, नातिन से एक और दिन की मुहलत माँग लेगे। कुरूप गुडिया लाकर इस घर की बेटी के जीवन मे भी उन्होने अशान्ति घोल दी है।

सखो से अपमानित होकर काकली अब गुडिया का मुँह भी

देखना नही चाहती। बिगडकर कहती है, "सच ही तो, ऐसी नाटी, मोटी, काली, भुच्ची, भगी, बदसूरत लडकी किसे पसद आयेगी ?"

घर का नौकर अभय खडा खडा नाना की असहाय अवस्था देख रहा है। वह फुसफुसाकर बोला, "आप चिन्ता मत कीजिए नानाजी। जरूरत पडी तो जो इन्तजाम करना है, मैं ही कर दूँगा।"

अभय की बात नाना को जरा भी नही जँची। पर वे कुछ बोले नहीं। इन्तज़ाम तो जो करना है, उन्ही का काम है।

शाम को पढने बैठी थी काकली। पढाई खतम करके खिलौनो वाले कमरे मे जाते ही वह चौक उठी। काली गुडिया वहा नही थी। काकली की और गुडियाँ तो सब अपनी-अपनी जगह हैं, सिर्फ काली गुडिया गायब हो गयी है।

बेटो से पूछा काकली ने, "तुम लोगो ने देखा है ? लडकी कहा गयी ?"

लडके केवल टुकुर टुकुर ताकते रहे।

"बहूरानी, बहूरानी, तुम सारे समय घर पर ही थी ! तुमने तो देखा ही होगा, लडकी कहा गयी ?" काकली ने कातर होकर पूछा।

जगरमगर साडी और रूज से सजी बहूरानी अपने मे ही मगन थी। उसने कोई जवाब नही दिया।

काकली की बेचैनी बढ गयी। पढने जाने के पहले भी तो लडकी को देखा है उसने। इसी बीच कहा गायब हो गयी ?

"भालू भाई, भालू भाई, तुम्हें पता है ?" काकली रुआँसी हो आयी थी।

टेडीबियर की आँखे अंधेरे मे भी झिलमिलाती है। उसकी आँखे मानो छलछला रही है। लगता है, वह कह रहा है, "जिसका तुमने इतना निरादर-अपमान किया, उसकी तलाश से फायदा क्या ?"

विलायती कुत्ता भी अब तक चुप बैठा था। जरा सा धक्का देते ही उसने आदतन सिर हिलाना शुरू कर दिया। रुआसे स्वर मे काकली ने पूछा, "बता सकते हो, कहाँ गयी काली गुडिया ?"

गम्भीर चेहरे से कुत्ता केवल सिर हिलाने लगा। कोई उत्तर नही दिया।

अनजाने भय से काकली का शरीर झनझना उठा। हाफती-हाफती वह नाना के पास आ पहुँची। "नाना, तुम क्या सच ही उसे लौटा आये ?" काकली की आखे छलक रही थी। "मुझसे एक बार पूछ तो लेना था ! शाम को बेचारी ने कुछ भी नही खाया था। उसे कुछ खाने को देना भूल ही गयी थी। मेरे और बच्चे तो खाना न मिलने पर चीख पुकार मचा देते हैं—वह चुपचाप एक कोने मे खडी थी। बडी मानी है वह।"

नाना एक बार तो भौचक्के रह गये। वे तो समझ रहे थे, उसे न लौटाने के कारण नातिन की डाँट सुननी पडेगी।

काकली ने घर का कोना-कोना छान मारा। कौन जाने, गुस्से के मारे लडकी कही छिपी खडी हो। पलग के नीचे, बक्से के पीछे, अलमारी के कोने मे—सब जगहो पर अच्छी तरह ढूढा काकली ने। माँ ने उसे खाना खिलाने को बुलाया, पर खाने का होश कहा था उसे !

रात को खाने के लिए तैयार नही हो रही थी काकली। माँ की डाँट पर एक रोटी खाकर वह उठ गयी। कुछ देर बाद वह भी उल्टी मे निकल गयी।

'नाना, नाना, तुम सो गये क्या ?" आधी रात को काकली

की पुकार सुनकर निर्मल चौधरी समझ गये, लड़की सोयी नहा है।

काकली के कहने पर नाना को उठना पड़ा। दोनों ने मिलकर फिर ढूंढना शुरू किया। गुडियो की गृहस्थी मे सभी आराम से सोये थे, एक भालू को छोडकर—वह बेचारा आँखें नही मूद पाता, इसी से उसे नीद नही आती।

बडी मुश्किल से नातिन को लाकर विस्तर पर सुलाया निमल चौधरी ने। बोले, "कल सुबह फिर खोजेंगे।"

काकली अभी भी छटपटा रही थी। "नाना, किसी के खोने पर पुलिस को खबर देते हैं ना ? तुम एक बार थाने मे फोन कर दो।"

नाना को याद आया, उस रात मुन्ना के न लौटने पर ऐसी ही बेचैनी से उन्होने पुलिस से सम्पर्क किया था।

अभी नातिन को बहलाने की गरज से बोले, "पुलिसवाले अभी सो रहे है रानी बिटिया। कल सुबह देखेंगे।"

निमल चौधरी करवट बदलकर लेट गये। आज रात उन्हें भी नीद कहा आनी थी। कल १० जुलाई है। दो बरस पहले आज की ही रात मुन्ना आखिरी बार उनके साथ के पलग पर सोया था। अकेले सोने मे डर लगता था मुन्ना को। बिन मा का बच्चा—इसीलिए कुछ कहते नही थे निमल चौधरी।

लगता है, काकली अब सो गयी है। और निमल चौधरी १० जुलाई की उस भयानक रात की बात सोचने लगे—मुन्ना घर नही लौटा है।

"नाना, नाना", काकली फिर बोल रही है। "अभी एक बहुत बुरा सपना देखा। नाना, अभी एक बार छत पर चलोगे ?"

ऐसी रात मे छत पर जाना ! पर पता नही क्यो, नाना तैयार हो गये। बत्ती जलाकर दबे पाव दोनो छत पर चढ आये।

"आकाश मे आज बहुत तारे हैं। कोई भी तारा अभी सोने नही गया है।" नाना ने शान्त भाव से कहा।

काकली ने कहा, "सोने जायेगा कैसे ? इसी समय तो वे अपने लोगो को देखने की टोह रखते हैं।"

आकाश की ओर देखकर अधीर आग्रह से काकली जाने क्या खोज रही है। उसने कहा, "नाना, देखो तो, आकाश मे कल से एक तारा ज्यादा है या नही ?"

कैसा अजीब ख़याल है यह ! इन लाखो करोडो तारो को गिनना क्या उन-जैसे साधारण मनुष्य के लिए सम्भव है ? काकली ने कहा, "तुम कुछ भी नही जानते नाना ! मरकर लोग आसमान मे तारे बन जाते है। मैने अचानक सपना देखा कि लडकी मोटर के नीचे आ गयी है।"

नातिन को तसल्ली दी निमल चौधरी ने। फिर बहुत देर तक आकाश के तारो को निहारकर दोनो नीचे आ गये।

नातिन की पीठ पर हाथ फेरते-फेरते निमल चौधरी सोच रहे हैं, काकली मानो अब छोटी बच्ची नही रही।

अगले दिन काकली स्कूल जाने को तैयार नही हुई। खाना-पीना भी बन्द। एक ही दिन मे बेचारी की आखो के इद-गिद स्याही छा गयी थी।

काकली के माता पिता बेटी से तग आ गये थे। मामूली-सी एक गुडिया—जो पसन्द भी नही आ रही थी—उसके लिए इतनी हायतोबा मचाने का मतलब ? पर नाना ने उन लोगो को रोका।

आज सुबह से ही काकली की आखो मे आँसू है। सब जगह खोज-तलाश कर अब उसने उम्मीद छोड दी है। बीच-बीच

में काकली आँखें मूँदती है, और साथ ही साथ गुड़िया का असहाय चेहरा आखों में तैर जाता है।

सुबह साढ़े दस बजे थे। स्नानघर में दरवाजा बन्द कर, शॉवर खोलकर निमल चौधरी रो रहे थे। १० जुलाई को सबसे छिपाकर, आसू बहाकर वे अपने को कुछ हल्का कर लेते हैं। फिर वे लड़कियों के लिए केक खरीदने निकलेंगे। मुन्ना को केक बहुत पसन्द थे।

निमल चौधरी ने मन का बाँध तोड़ दिया था। आषाढ़ की वर्षा की तरह आसू की बड़ी बड़ी बूंद उनके मन की धरती पर पड़ने लगी। ठीक उसी समय काकली का उत्तेजित स्वर सुनायी दिया—'नाना, नाना !"

निमल चौधरी भीगे कपड़ों में ही तेजी से गुसलखाने के बाहर आ गये। काकली बेहद उत्तेजित थी। काली गुड़िया मिल गयी है। बूटी जमादारनी जब कूड़ेदान साफ करने आयी तो उसे कचरे के बीच रंगीन साड़ी में लिपटी गुड़िया दिखायी दे गयी।

मछली के काटे, जूठन, राख, कीचड़ के बीच गुड़िया अब भी औंधे मुह पड़ी थी। काकली ने किसी की भी बात नहीं सुनी, पागलों की तरह दौड़कर गयी और कचरे के अन्दर से उसे उठा लायी। मा हाय हाय कर उठी, पर तब तक तो काकली ने सारी गन्दगी समेत गुड़िया को कलेजे से लगा लिया था। इस ओर उसका ध्यान ही नहीं था कि उसके साफ सुथरे कपड़ों में डस्टबिन का कूड़ा कचट लग रहा है।

"देखो, देखो, मेरी रानी बिटिया की क्या हालत हो गयी है!" काकली ने गुड़िया को और भी जोरों से भींच लिया। रात-भर पानी में भीगकर गुड़िया का रंग काफी उतर गया था। शायद चूहे ने हाथ का थोड़ा सा हिस्सा भी कुतर डाला था।

बदरंग गुड़िया और भी भद्दी दिखायी दे रही थी।

पर काकली से अभी यह बात कौन कहे ? "मुन्नी मेरी, घर चलो—तुम्हे अब मैं कभी नही डाँटूंगी। तुम मेरी प्यारी बिटिया हो, सोना बेटी हो, मेरी अपनी बेटी हो," कहकर काकली बदरंग गन्दी गुड़िया के मुंह, आख, ललाट को बार-बार चूमने लगी।

गुस्से के मारे अदिति काकली को मारने चली। "डस्टबिन की गन्दगी मुँह मे लेकर बीमार पड जायेगी तू !"

नाना विस्मय से देखे जा रहे थे। ऐसा अद्भुत दश्य उन्होने सारे जीवन मे कभी नही देखा था। अपनी बेटी को रोककर, मन की उमडती अनुभूति को दबाकर निमल चौधरी किसी तरह बोले, "वह तो माँ-जननी है—खोया धन उसे वापस मिला है। उसे तुम लोग कुछ मत कहो।"

नाना ने एक बार फिर मुडकर काकली और उसकी काली बिटिया को देखा। फिर स्नानघर मे लौटकर दरवाजा बन्द कर फूट-फूटकर रो पडे।

छेनो भैया

वचपन मे मैं जिस स्कूल मे पढता था, उसका नाम था विवेकानन्द इस्टीट्यूशन। हावडा के नेताजी सुभाप मार्ग पर इस स्कूल की पुराने चाल की दुमजिली इमारत अब भी उदास खडी है। हा, हमारा स्कूल कई वरस पहले ही वहा से दूसरी जगह चला गया है।

विवेकानन्द स्कूल मे ही मुझसे कुछ साल सीनियर थे लक्ष्मीमाधव मण्डल। हम सब उन्हे छेनो भैया कहकर पुकारते थे।

छेनो भैया को स्कूल मे दूर से देखता और सोचता, काश, किसी तरह मैं भी छेनो भैया जैसा बन पाता!

छेनो भैया तब सबके हीरो थे। वजह—स्पोर्ट्स मे वे बेजोड थे। हाइजम्प मे वे फर्स्ट आये थे। चार सौ चालीस और दो-सौ बीस गज की दौडो मे भी किसी और के फस्ट प्राइज़ ले जाने का सवाल ही नही उठता था। चार मील पैदल चलने की प्रतियोगिता मे भी उस बार हावडा जिला मे प्रथम आकर छेनो भैया ने चादी का चैलेंज कप जीता था—इतना बडा कप था कि छेनो भैया अकेले उसे उठाकर ला ही नही पा रहे थे।

खेलकूद के देवता कौन है, पता नही। पर छेनो भया पर उनकी कृपा होने के कारण देवी सरस्वती रूठ गयी। विवेकानन्द स्कूल की सातवी कक्षा के जक्शन स्टशन पर आकर छेनो भैया की विद्या का इजिन जो रुका तो रुका ही रह गया।

तीन साल लगातार फेल हुए छेनो भैया। आखिरी बार परीक्षा के समय अण्टी मे कागज छिपाकर लाये थे वे। पर हमारे

हेडमास्टर साहब की आँखो मे एक खास तरह का रडार-यन्त्र लगा हुआ था। घुसते समय छेनो भैया उन्ही के हाथो पकडे गये। पहले तो परीक्षा-हॉल से, और फिर स्कूल से भी उन्हे विदा लेनी पडी।

फिर वही हुआ जो होता आया है। छेनो भैया बिगड गये। कोडारवागान की एक गन्दी चाय की दूकान पर बैठे वे बीडी फूँकते रहते। उस दूकान पर गाली-गलौज, मार पीट, सब चलती थी।

सुना है, इसी उमर मे छेनो भैया को गाजे की लत भी लग गयी थी। स्कूल के रास्ते मे चाय की दूकान के आगे छेनो भैया से कभी कभार मेरा सामना हो जाता था। मुझे वे बुलाते—"अरे सुन।"

हम थे विवेकानन्द इन्स्टीट्यूशन के अच्छे विद्यार्थी। इस तरह बीडी पीनेवाले लडके के साथ सडक पर खडे होकर बात करने मे शर्म से कट जाते थे।

छेनो भैया जरूर बडे शरीफाना ढग से पेश आते थे। पूछते, "मास्टर साहब सभी अच्छी तरह से है तो? इस बार चार मील पैदल चलने की प्रतियोगिता मे कौन फस्ट आया?"

छेनो भैया को पता था, मै अच्छा लडका हूँ, इसीलिए किसी तरह की गालीगलौच नही करते। फिर भी मुझे डर लगता था कि कही कोई देख न ले। सोचेगा, मैं भी बिगड रहा हूँ, या फिर बरबादी के रास्ते पर पाव बढा रहा हूँ।

इसके बाद छेनो भैया ने मुझे बुलाना कम कर दिया। शायद मेरे हाव-भाव से मेरे मन की हालत का उन्हे पता चल गया था। पर एक दिन अचानक ही वे मुझे बुला बैठे। सडक-वाली दूकान पर गन्दा निकर पहने छेनो भैया बीडी के कश लगा रहे थे। दूर से मुझे देखते ही पुकारा, "अरे सुन!"

[illegible]

[illegible]

छेनो भैया को [illegible] हुआ था। [illegible] [illegible] हैं। [illegible], [illegible] भी [illegible] इसी तरह से लिखते थे। छेनो भैया के [illegible] था।

मैं [illegible] की तरह [illegible] थे, वो और कुछ ऐसा भाव दिखलाया था कि छेनो भैया को यह समझने में जरा भी परेशानी नहीं हुई कि मैं और रवीन्द्रनाथ दोनों ही लेखक हैं, और हम दोनों ही दिमाग लगाकर लिखते हैं। और शायद इसीलिए छेनो भैया उसी समय से मेरे बारे में बहुत ऊँची धारणा बना बैठे थे। जब भी सामना होता, वे बात करना चाहते। और कभी-कभी खुद ही सावधान कर देते, "मेरे लेख मत घुला-मिलाकर—हमारा रेकॉर्ड खराब है। दिन रात पढ़ाई में लगा रहा कर और दिमाग लगाकर लिखना चालू रख।"

शायद इसी तरह से लम्बे समय तक चलता। पर छेनो भैया अचानक ही कहीं गायब हो गये थे। और मैंने भी दिलचस्पी से उनकी तलाश नहीं की, बल्कि उनके हाथ से बचने पर राहत की सांस ही छोड़ी थी। इसी बीच १९६० में पत्रिका में मेरी और भी रचनाएँ छपती थीं, अच्छे लड़के में मेरी तारीफ और भी फैली थी और सौभाग्य से इस जमाने में सामाजिक छेनो भैया मुझसे और भी दूर रहने लगे थे।

हेडमास्टर साहब
हुआ था। घुसते स
तो परीक्षा-हॉल से
पडी।

फिर वही हुआ
कोडारवागान की एक
फूकते रहते। उस दूकान
थी।

सुना है, इसी उमर म
गयी थी। स्कूल के रास्ते मे
से कभी कभार मेरा सामना
"अरे सुन!"

हम थे विवेकानन्द इस्टीट्यू
बीडी पोनेवाले लडके के साथ स
शम से कट जाते थे।

छेनो भैया जरूर बडे शरीफान
"मास्टर साहब सभी अच्छी तरह से
पैदल चलने की प्रतियोगिता मे कौन

छेनो भैया को पता था, मै अच्छा
तरह की गालीगलौच नही करते। फि
कि कही कोई देख न ले। सोचेगा, मैं
फिर बरबादी के रास्ते पर पाव बढा रहा

इसके बाद छेनो भैया ने मुझे बुला
शायद मेरे हाव-भाव से मेरे मन की हालत
गया था। पर एक दिन अचानक ही वे मुझे
वाली दूकान पर गन्दा निकर पहने छेनो भैया
रहे थे। दूर से मुझे देखते ही पुकारा, "अरे सु

धकेलकर कुर्सी से न उठाये जाने तक वे टाइप किये जाते। भवतारण बाबू मुँह टेढा कर व्यग्य करते, 'इतनी लगन मैट्रिक की परीक्षा मे ही दिखायी होती! स्कॉलरशिप लेकर आइ-ए-एस, बी-सी-एस बन जाते—इस बक्स बजाने की लाइन मे न आना पडता।"

इस बीच ही मैं लोगो से कहने लगा था, "कोई नौकरी नजर मे आये तो ध्यान रखिएगा। मेरी स्पीड चालीस की हो गयी है।"

स्पीड का हिसाब सुनकर कई लोग चौक जाते। साथ-साथ सुना देते, "वह रामराज अब नही है भाई। चालीस की स्पीड पर अब सिफ मेमसाहबो को ही नौकरी मिलती है। हमारे ऑफिस मे जो छोकरा अय्यर है, वह तो हसते-खेलते पचहत्तर की स्पीड से टाइप कर लेता है। छोकरा शाम पाँच बजे के बाद एक घण्टा एक्स्ट्रा प्रैक्टिस करता है। सौ की स्पीड हुई ही समझो।"

दो-चार लोग तो मेरी सूरत देखते ही मुह फेरकर चल देते। सोचते, अभी यह नौकरी के लिए गिडगिडाना शुरू करेगा।

सडक पर चुपचाप खडा खडा सोच रहा था, पैंतालीस रुपये खच करके एक धनदा कवच खरीदूं या नही। विज्ञापन मे लिखा है। बेकारो को शर्तिया नौकरी! पर जल्दी फल पाने के लिए आणविक शक्ति सम्पन्न धनदा एक्स्ट्रा स्ट्राग कवच, जिसकी कीमत बहुत ज्यादा है—१७२ रुपये। इतने रुपये मुझे कहाँ मिलेगे?

ऐसे समय एक दिन हमारी गली के मोड पर छेनो भैया दिखायी दिये। सफेद हाफशट, खाकी हाफपैण्ट, काले जूते और हरे मोजे पहने छेनो भैया चले जा रहे थे। हाथ मे काले रग के चमडे का एक चौकोर बैग था।

मुझे देखते ही वे रुक गये। पास आकर पूछा, "हाँ रे, कौन-

पर कई दिन बाद मुझे छेनो भैया की जरूरत पडी। मेरे पिताजी का उस समय अचानक ही स्वर्गवास हो गया था। मुफस्सिल की अदालत के वकील, रोजमर्रा के खाने कपडे जुटाने के सघष मे ही इतने व्यस्त रहते थे कि अनागत भविष्य के लिए बचत करने का उन्हे मौका ही नही मिला था। मेरे बहुत बुरे दिन आ गये थे। पैसो के अभाव मे पढाई छोडकर नौकरी की तलाश मे भटक रहा था।

पर नौकरी थी कहाँ? सुना था, पैसा फेकने पर कलकत्ता शहर मे बाघिन का दूध भी मिल सकता है। इसीलिए बचपन मे पिताजी की दी हुई सोने की अँगूठी और बटन बेचकर कुछ नक्द रुपये का भी इन्तजाम कर रखा था। मेरे एक नजदीकी रिश्तेदार को सौ रुपये सलामी देने पर एक सरकारी प्रतिष्ठान मे लोअर डिवीजन किरानी की नौकरी मिली थी। मुझसे उन्ही सज्जन ने कहा था, "रुपये का इन्तज़ाम कर रखना। कभी मौका आ गया और रुपये न रहे, तो उमर-भर अफसोस करके मरोगे।" मेरे रुपये तो तैयार है, पर नौकरी कहाँ है?

आखिर टाइपिग सीखना शुरू किया। कोशिश यही करता कि यह विद्या जल्दी-से जल्दी आ जाये। पर इसमे भी बाधा थी। टाइपिग स्कूल के मालिक भवतारण बाबू नगे बदन, घडी लगाये शिकारी कुत्ते की तरह पहरा देते घूमते थे। सिखाने का उन्हे रत्ती भर शौक नही था। उनकी नजर सिर्फ इसी पर रहती थी कि कोई आधे घण्टे से ऊपर तो टाइप नही किये ले रहा है? आधे घण्टे भी वे धीरज धरकर नही बैठ पाते थे। पचीस मिनट होते ही चीख पडते, "रेमिंगटन तीन नम्बर, फाइव मिनिट्स मोर।" कही कोई ज्यादा सीखकर जल्दी स्कूल न छोड दे, इसी-लिए वे इतनी सख्त नजर रखते थे।

कोई कोई छात्र भी चिपकने मे उस्ताद थे। जबरदस्ती

धकेलकर कुर्सी से न उठाये जाने तक वे टाइप किये जाते। भवतारण बाबू मुह टेढा कर व्यग्य करते, "इतनी लगन मैट्रिक की परीक्षा मे ही दिखायी होती ! स्कॉलरशिप लेकर आइ-ए-एस, बी-सी-एस बन जाते—इस वक्स बजाने की लाइन मे न आना पडता।"

इस बीच ही मै लोगो से कहने लगा था, "कोई नौकरी नजर मे आये तो ध्यान रखिएगा। मेरी स्पीड चालीस की हो गयी है।"

स्पीड का हिसाब सुनकर कई लोग चौक जाते। साथ साथ सुना देते, "वह रामराज अब नही है भाई। चालीस की स्पीड पर अब सिर्फ मेमसाहबो को ही नौकरी मिलती है। हमारे ऑफिस मे जो छोकरा अय्यर है, वह तो हसते-खेलते पचहत्तर की स्पीड से टाइप कर लेता है। छोकरा शाम पाँच बजे के बाद एक घण्टा एक्स्ट्रा प्रैक्टिस करता है। सौ की स्पीड हुई ही समझो।"

दो चार लोग तो मेरी सूरत देखते ही मुह फेरकर चल देते। सोचते, अभी यह नौकरी के लिए गिडगिडाना शुरू करेगा।

सडक पर चुपचाप खडा-खडा सोच रहा था, पैंतालीस रुपये खर्च करके एक धनदा कवच खरीदू या नही। विज्ञापन मे लिखा है। बेकारो को शर्तिया नौकरी ! पर जल्दी फल पाने के लिए आणविक शक्ति सम्पन्न धनदा एक्स्ट्रा स्ट्राग कवच, जिसकी कीमत बहुत ज्यादा है—१७० रुपये। इतने रुपये मुझे कहाँ मिलेगे ?

ऐसे समय एक दिन हमारी गली के मोड पर छेनो भैया दिखायी दिये। सफेद हाफशर्ट, खाकी हाफपैण्ट, काले जूते और हरे मोजे पहने छेनो भैया चले जा रहे थे। हाथ मे काले रग के चमडे का एक चौकोर बैग था।

मुझे देखते ही वे रुक गये। पास आकर पूछा, "हाँ रे, कौन-

बोले, "घबरा मत। मैं तुझे नौकरी दिलवा दूगा। कितनी ही जगहो पर तो जाता हूँ मशीन सुधारने।"

अगले दिन शाम को हम दोनो की फिर मुलाकात हुई। छेना भया चाय की दूकान पर बैठे फुटबॉल पर बहस कर रहे थे। मुझे जाते देखकर पुकार लिया। बोले, "ले, चाय बिस्कुट ले।"

लज्जित होकर मैं बोला, "यह सब किसलिए छेनो भैया ? मेरी नौकरी की कोशिश कर रहे है, यही काफी है।"

छेनो भैया बोले, "खा भी ले। बिना खाये-पिये कहानी लिखने को दिमाग नही खुलेगा। अच्छे लडको को मगज साफ रखने के लिए बहुत-कुछ खाने की जरूरत होती है। हाँ, तेरी नौकरी के लिए कई जगह कह रखा है। बल्कि कल तू मेरे साथ ही निकल चल, मैं खुद ही तुझे जान-पहचानवाली पार्टियो के पास ले जाऊँगा।"

अगले दिन की सुबह से मेरा नया जीवन शुरू हुआ। ९५ नम्बर कोडारबागान लेन की पूरबियो की बस्ती के एक अँधेरे कमरे मे छेनो भैया रहते थे। छेनो भैया के विजिटिंग-काड पर नजर पडी—

ग्रेट इण्डियन टाइपराटर लिमिटेड
फैक्टरी एण्ड हेड ऑफिस
९५ कोडारबागान लेन, हावडा
सिटी ऑफिस
१६७ स्वैलो लेन। कलकत्ता
फोन

मेरा भाव देखकर छेनो भैया हँस पडे। अपना बैग दिखाकर बोले, "ऑफिस का नाम देखकर घबरा मत जाना। दरअसल

सी नयी कहानी लिखी ?"

मैंने कहा, "कुछ भी नही लिखा।"

पर मेरे उत्तर से छेनो भैया निराश नही हुए। बोले, "रवि-ठाकुर भी तो बीच-बीच मे कुछ लिखे बिना चुपचाप बैठ रहते थे। कवि, कलाकार, लेखकों की यही मुश्किल है। जाने कब सरस्वती दया कर, इसी इन्तजार मे अँगूठा चूसते रहो बैठकर। हम लोगो को वैसा कुछ झंझट नही है। जब भी भूख लगी, जैसे भी हो, कमाकर पेट भर लेंगे।"

बात का उत्तर दिये बिना ही मैं मुह फेरने जा रहा था। अचानक छेनो भैया के काले बैग पर नजर पडी। उस पर सफद अक्षरो मे लिखा था—'ग्रेट इण्डियन टाइपराइटर लिमिटेड।'

छेनो भैया चले जा रहे थे। मैंने अचानक पुकारा, "छेनो भैया।"

चौककर पीछे देखकर छेनो भया मेरे पास लौट आये। उत्तेजना से मेरे ओठ काँप रहे थे। इतने दिन बडे आदमियो से नौकरी के लिए कहता आया हूँ। अब झोपडपट्टीवाले लोगो से भी कहना पडेगा। छेनो भैया ने पूछा, "मुझे बुला रहा था? कुछ कहना है?"

"छेनो भैया, आप टाइप का काम करते हैं?"

"हाँ, मैं तो टाइप मशीन का मैकेनिक हूँ।"

शर्म का गला घोटकर बोला, "मैंने टाइप करना सीखा है छेनो भैया।"

छेनो भया मानो चौक उठे। चिन्तित भाव से बोले, "तू क्यो इस लाइन मे आने लगा? रविठाकुर क्या टाइप करते थे?"

मैं जवाब नही दे सका। आखो से आसू बहने लगे।

छेनो भैया समझ गये। यह भी समझ गये कि नौकरी न मिलने पर मुझे भूखो मरना होगा। पीठ पर एक धौल जमाकर

बोले, "घबरा मत। मैं तुझे नौकरी दिलवा दूगा। कितनी ही जगहो पर तो जाता हूँ मशीन सुधारने।"

अगले दिन शाम को हम दोनो की फिर मुलाकात हुई। छेनो भैया चाय की दूकान पर बैठे फुटबॉल पर बहस कर रह थे। मुझे जाते देखकर पुकार लिया। बोले, "ले, चाय बिस्कुट ले।"

लज्जित होकर मैं बोला, "यह सब किसलिए छेना भैया? मेरी नौकरी की कोशिश कर रहे हैं, यही काफी है।"

छेनो भैया बोले, "खा भी ले। बिना खाये-पिये कहानी लिखने को दिमाग नही खुलेगा। अच्छे लडको को मगज साफ रखने के लिए बहुत-कुछ खाने की ज़रूरत होती है। हाँ, तेरी नौकरी के लिए कई जगह कह रखा है। बल्कि कल तू मेरे साथ ही निकल चल, मैं खुद ही तुझे जान पहचानवाली पार्टियो के पास ले जाऊँगा।"

अगले दिन की सुबह से मेरा नया जीवन शुरू हुआ। ९५ नम्बर काडारबागान लेन की पूरबियों की बस्ती के एक अँधेरे कमरे मे छेनो भैया रहते थे। छेनो भैया के विज़िटिंग काड पर नजर पडी—

ग्रेट इण्डियन टाइपराटर लिमिटेड
फैक्टरी एण्ड हेड ऑफिस
९५ कोडारबागान लेन, हावडा
सिटी ऑफिस
१६७ स्वैलो लेन। कलकत्ता
फोन

मेरा भाव देखकर छेनो भैया हँस पडे। अपना बैग दिखाकर बोले, "ऑफिस का नाम देखकर घबरा मत जाना। दरअसल

यह बैग ही मेरी फैक्टरी है। यही मेरा सिटी ऑफिस है, यही मेरा हेड ऑफिस। विजिटिंग कार्ड न हो, तो पार्टी बिगड जाती है। सोचती है, ऐरा गैरा है।"

बस और ट्राम से जब हम कलकत्ता के ऑफिसवाले मुहल्ले मे पहुँचे तब दिन के लगभग ग्यारह बज रहे थे। पर कहा है ग्रेट इण्डियन टाइपराटर कम्पनी ? पुराने टाइपराइटरो की एक छोटी-सी दूकान जरूर दिखायी दे रही है, पर उस पर कोई नाम नही लिखा है।

दूकान के सामने सडक पर कुछ-एक बेंचें लगी हुई थी। उन पर कुछ लोग बैठे थे। उन सभी के हाथो मे छेनो भैया-जैसे ही चमडे के बैग थे।

छेनो भैया को देखकर बेंच पर बैठे लोग मुखर हो उठे। दुबले दुबले चेहरे थे उन लोगो के। बहुतो ने हाफपैण्ट पहन रखा था। दो एक लोग अधमैली धोती और बदरंग न्यूकट जूते भी पहने थे।

रेमिंगटन रिबन के डिब्बे मे बीडी निकालकर सुलगाते हुए एक सज्जन बोले, "आइए पिताजी, आइए।"

पर छेनो भैया जल भुन गये। बोले, "मैं कसम से तुम लोगो को चेतावनी दे रहा हूँ। मुह मे अगर अब कोई गन्दी बात निकाली, तो मैं घूसा मारकर मुँह की ज्योग्राफी बदल दूगा।"

अब छेनो भैया ने मेरा परिचय कराया। "यह मेरे छोटे भाई जैसा है। तुम लोगो जैसा गया गुजरा नही, बहुत अच्छा लडका है। इसकी लिखी कविता कहानिया अखबारो मे छपती हैं।"

सब सज्जनो ने अब सचमुच ही हैरान होकर मेरी ओर देखा। बोले, "खडे क्यो हैं ? बैठिए।"

जिन सज्जन ने पहले मुँह खोला था, वे बोले, "कुछ सोचियेगा मत सर! आपके भैया के साथ बाप का रिश्ता जोडा है। बहुत पुरानी आदत है। कभी-कभी गलती हो सकती है।"

जो सज्जन दूकान मे खडे थे, उनकी देह पर एक चीकट बनि-याइन थी। चश्मे की एक कमानी गायब थी, उसकी जगह डोरी बधी थी। काच की अलमारियो मे कई साइजो के औजार, कल पुर्जे आदि थे। छेनो भैया बोले, "पाचू भाई, क्यो दुम-से लटकाये बैठे हो, एक एस्केपमेण्ट ह्वील दो। नही तो पार्टी हाथ से निकल जायेगी।"

पाचू भाई पान चबाते-चबाते बोले, "चौदह नम्बर रेमिंगटन है न? कम्पनी का ही माल लो। मँगा देता हूँ।"

बेंच से एक सज्जन ने दबी आवाज मे छौक लगाया, 'ज़रू-रत नही है साधूगीरी का। कम्पनी के घर का माल बेचकर ही तो ये स्वैलो लेन मे बिज़नेस चला रहे है! कम्पनी के घर का माल खरीदकर मशीन सुधारते तो यहाँ अण्टी ही साफ नही हो जाती?"

अन्दाज से समझा, यहाँ पुराने माल का स्टॉक है। पाचू बाबू चुपके-चुपके हँसते हुए बोले, "छोडो, यह माल तो जहाँ से भी हो, तुम्हे दिला दूगा। पर पूरे दस रुपये लगेगे।"

"इसीलिए तो तुम्हारे घर मे भी अशान्ति रहती है। घर के आदमियो के साथ भी काबुलीवालो जैसा व्यवहार करोगे? पाच चवन्नी का माल—और दस रुपये मे बेचना चाहते हो?"

उनकी बाते चलती रही। मैं चुपचाप बेच पर बैठ गया।

एक सज्जन बोले, "दुनिया-भर के टाइप मैकेनिका को यहाँ आना पडता है। हम सभी प्राइवेट प्रैक्टिस करते हैं—रेमिंगटन या अण्डरवुड। महीने-महीने तनख्वाहवाली नौकरी नही है ये।"

पाँचू बाबू से पार्ट् स खरीदकर छेनो भैया बेंच पर आ बैठे। इस राज्य मे छेनो भैया का प्रचण्ड प्रताप था। सब मैकेनिक उनमे डरते थे। बेचो पर तब तक सत्रह-अठारह मैकेनिक इकट्ठे हो

गये थे। छेनो भैया ने कहा, "देखो, मेरे इस छोट भाई को नौकरी की जरूरत है। टाइपिंग सीख चुका है। तुम लोगों को मैं सात दिन का समय दे रहा हूँ। इस बीच जहा भी हो सके, इसे लगवा देना है। नही तो, बोल रखता हूँ, कटाकटी हो जायेगी।"

पर मैले कपडो में लिपटे लोगो ने जरा भी गुस्सा जाहिर नही किया। एक सज्जन बोले, "जो पट्ठे हम लोगो से टाइप सुधरवाते है, वे क्या इंसान हैं? खटमल हैं खटमल! नौकरी देंगे भी तो खून चूस लेंगे।"

छेनो भैया गरम हो उठे। बोले, "राजकिशन, गप्पें बाद मे उडाना। अभी तो कोई रद्दी नौकरी ही जुटा दो। मेरे भाई की विद्या तो तुम लोगो जैसी नही है।"

छेनो भैया मुझे लेकर निकल पडे। एक ऑफिस मे मशीन की ऑइलिंग-क्लीनिंग का काम था। बैग मुझे पकडाकर छेनो भैया ने काम शुरू किया। मैं हैरान देखने लगा।

काम करते-करते ही छेनो भैया ने मेरी नौकरी के लिए कोशिश की, पर जिसकी तकदीर पर ही पत्थर पडे हो, उसके लिए और लोग क्या कर सकेंगे? नौकरी नही थी।

काम खतम करके दो रुपये जेब मे रखकर छेनो भया ने मशीन के मालिक से कहा, "मशीन एक बार ओवरहॉल करवा लीजिए, मजे मे दस बरस और चल जायेगी।"

मालिक ने पूछा, "कण्डीशन कैसी है?"

"कण्डीशन! यह बढिया चीज है। पुराने की बात ही और होती है सर! आजकल के मॉडल देखने मे झकमक, फिटफाट—पर किसी काम के नहीं। आये दिन ब्रेकडाउन होते रहते हैं।"

पर मालिक मीठी बातो के बहकावे मे नहीं आये। बोले, "एकाध महीना और देखू।"

तब लगभग एक बजा था। मुझे लेकर छेनो भैया सीधे एक

ढाब मे घुसे। करीब बारह आने का खिला दिया मुझको। मैं एतराज़ करने लगा, पर छेनो भैया का एक ही तर्क था, "अच्छे लड़के को खाना चाहिए। तभी तो दिमाग खुलेगा। तभी तो कहानी, कविता वगैरह लिख सकेगा।"

टाइपराइटरो की विचित्र दुनिया के साथ नमश मेरा परिचय बढने लगा। अण्डरवुड की डॉग कार्स्टिग स्मिथ कोरोना मे नही लगेगी, पर स्मिथ का टाइपवार कुशन इम्पीरियल मशीन मे आसानी से फिट हो जाता है—ये मव बात अब मै भी जान गया। पर नौकरी नही ही मिली।

स्वैलो लेन के सभी मैकेनिक साथी काम से लौट आते थे। कहते थे, "कही इन्तजाम नही हो पा रहा है।"

यह बात सुनते ही छेनो भैया आगबबूला हो उठे। बोले, "लतरानियाँ छोडो। और तीन दिन का समय देता हूँ। इस बीच अगर काम न हो, तो तुममे से हरेक को रोज एक आना फाइन देना होगा। टेंट का पैसा खरच होगा, तब जाकर तुम लोगो के जागर डुलेंगे।"

इसके बाद छेनो भैया गालियाँ बकने जा रहे थे, पर मेरी उपस्थिति का ध्यान आते ही वे चुप लगा गये।

मैं छेनो भैया से कहता, "कितने दिन मुझ पर पैसा बरबाद करेंगे?"

"मैं बरबाद कहा कर रहा हूँ! तू कमा रहा है। ये जो मेरे साथ ऑफिसो के चक्कर लगाता है, मेरी मदद कर रहा है, उसकी कोई कीमत नही है?"

खूब कर रहा हूँ मदद! पार्टी से मेरा परिचय छेनो भैया असिस्टेण्ट के रूप मे देते हैं। मशीन टटोलकर जाचते हुए कहते

हैं, "टेक डाउन।" मैं बैग से चटपट रबरस्टैम्प लगा हुआ पैड निकालकर एस्टीमेट लिखता हूँ—'वन कैरेज स्ट्रैप—८ रु०, वन डॉग कास्टिंग—४० रु०, सर्विस—५ रु०। कुल ५३ रु०।'

खरीदार यह हिसाब देखकर चौंक उठे। "इतने रुपये!"

मैंने कहा, "नहीं सर, यह हमारा यूजुअल चार्ज है। पर आप हैं रेगुलर कस्टमर, आपके लिए दस रुपये की छूट।"

छेनो भैया ने कागज पर लम्बा-चौड़ा दस्तखत मार दिया—एल० मण्डल, मैनेजिंग डायरेक्टर। फिर कहा, "सर, हम लोग बैग लिये घूमते हैं, इसीलिए। मशीन एक बार कम्पनी के पास भेजकर देखिए। रिपेयर तो दूर की बात है, सिर्फ इंस्पेक्शन का चार्ज ही पचास रुपये धरवा लेंगे।'

"कम्पनी के काम और आपके काम की बराबरी है?" खरीदार बोले।

छेनो भैया ने तत्काल उत्तर दिया, "कम्पनी के मिस्त्रियों के हाथ क्या सोने से मढ़े हैं सर? हम-जैसा ही कोई बदनसीब मशीन सुधारेगा, पर कागज़ पर दस्तखत करेंगे कोट पैण्ट-टाई लगाये कोई बड़े साहब। उनकी तनखा कहाँ से आयेगी सर—यही आप लोगों की जेब से ही तो?"

ग्राहक पर कुछ असर देखकर छेनो भैया ने आगे कहा, "कम्पनी का काम भी तो देखता हूँ सर! मशीन जिस दिन दुरुस्त होकर आयी, उसी दिन फिर खराब। आपको भरोसा न हो तो उन लोगों का पता भी बता दूँ। अब कम्पनी खुलकर मुझे काम दे रही है। ऐसी वैसी पार्टी नहीं है सर—मेम टाइपिस्ट है।'

ग्राहक ने कहा, "ऐसा?"

छेनो भैया ने कहा, "मेमसाहब मेरे काम से बहुत खुश हैं। वे कहती हैं, मिस्टर मण्डल, तुम्हारा टच—वाह, बिल्कुल फादर

टच है। वे लाग की बोड पर टच की कीमत समझती है। पतली पतली अँगुलिया होती हैं, हथौटा मारने जैसा टाइप नही कर सक्ती।"

ग्राहक बोले, "अच्छा ?"

छेनो भैया ने निवेदन किया, "लोग मशीनो की अच्छी मरम्मत क्यो करवाते है ? इसीलिए तो। सिफ चिट्ठियाँ ही अच्छी नही निकलेगी—प्रोडक्शन भी बढ जायेगा। एक आदमी दो टाइपिस्टो का काम कर सकेगा।"

छेनो भैया ने अब अपनी बात उठायी, "तो फिर एस्टीमेट ज़रा देखेगे सर ?"

"नही, रख जाइए, बाद मे बताऊँगा।"

इस तरह के कितने ही एस्टीमेट तैयार हाते हैं। पर अन्त मे जाकर ऑर्डर बहुत कम आते है। दूकानवाले पाचूबाबू कहते हैं, "इस धन्धे का यही हाल है। मैकेनिक तो फिर भी ऑयलिंग-क्लीनिंग से कुछ कमा जाते हैं, मैं तो सिफ पार्ट्स लिये चुपचाप बैठा मक्खिया मार रहा हूँ।"

सचमुच यह एक अद्भुत ससार है। हँसी मजाक, गाली-गलौज मे दिन तो बीत जाता है, पर शाम को सौदा सुलफ लाने लायक पैसे भी जुडेगे या नहीं, किसी को नही पता। कभी सेकेण्ड-हैण्ड मशीन की दलाली करके किसी को बीस रुपये मिल गये। और साथियो को यह समाचार मिलते ही—बस ! सब उसे घेर लेते। पूछते "अरे रिपी, वह बुड्ढी मशीन दो सौ मे कैसे बेच दी ?"

ऋपिबाबू ने गदन हिलायी, "सजाना आता हो, तो सारी बूढी मशीनो को नयी कहकर चलाया जा सकता है। बाहर से ज़रा मालिश पालिश कर दो। बेवकूफ ग्राहक उसी से खुश हो जाता है—भीतर के हाल को लेकर माथापच्ची नहीं करता।"

मरोगे।"

"ठीक कहा आपने दादा। कँटीली दाढी और मैली कमीज-वाले टाइपिस्ट बाबू बैठे हैं। पर छेनो के भाग्य में कैसी विलायती कम्पनी आयी है !" एक और व्यक्ति ने कहा।

फिर उन लोगा मे छेनो भैया को लेकर तरह-तरह की बाते होने लगी।

अब उनकी नजर मुझ पर पडी। कुछ सहम भी गये। पाँचू बाबू कुछ निगलते हुए से बोले, "भाई साहब, हम लोग आपस मे ही कुछ गप्प सडाके लगाते रहते है। अपने भैया से मत कहिएगा। जैसे आदमी है वे, क्या पता खून खच्चर ही कर बैठ।"

मैं सहमत हुआ बोला, "ठीक है।"

शायद और भी बाते होती। पर एक जने ने सावधान कर दिया—छेनो भैया आ रहे है। साथ ही मानो सब के सब फ्यूज हो गये। पाँचूबाबू ने इशारे से मुझे चुप रहने का वादा याद दिला दिया।

छेनो भया आकर बेच पर बैठे। दूसरे मैकेनिक भी क्रमश वहाँ इकट्ठे हो गये। छेनो भैया बोले, "तो फिर तुम लोगो ने मेरे भाई को नौकरी के लिए कुछ भी नही किया हे। काफी दिन बीत चुके हैं। अब आज तुम लोग फाइन दो। नैपा, हरएक के पास स एक आने के हिसाब से वसूल करो।"

हुक्म होते ही काम हो गया। नैपा ने फाइन इकट्ठा करना शुरू किया। देखा, सब बिना ची-चपड किये नैपा को एक आना देने लगे। छेनो भैया ने चार आने दिये। "हाँ, तो टोटल कितना हुआ ?"

नपा ने बताया, "एक रुपया चार आना।"

"गुड।" छेनो भैया ने कहा।

घर लौटते समय हावडा स्टेशन पर छेनो भैया ने पैसे मेरे

हाथों मे सौंप दिये। मुझे बहुत शर्म आ रही थी, पर छेनो भैया ने कसकर डाट दिया।

लगभग रोज ही मैंने टाइपों के मुहल्ले मे आना जाना शुरू कर दिया था। मुझे पांचूबाबू के पास बैठाकर छेनो भैया फिर निकल गये थे।

उस दिन तीसरे पहर ज्यादा आदमी नही थे। सिर्फ पाँचूबाबू एक टाइपब्रश के पिछले सिरे से पीठ खुजा रहे थे। अब ऋषिबाबू पार्टी के यहा से लौटकर दूकान पर आ बैठे।

ऋषिबाबू ललाट का पसीना पोछते पोछते बोले, "पाचूभाई कुछ कैश चाहिए। घरवाली बहुत बीमार है। दो दिन तो होम्योपैथिक गोलिया दी—पर कोई फायदा नही दिखता। आज डॉक्टर बुलाना ही होगा। कुछ रुपये दो पाँचूभाई।"

पाँचूभाई की आखे अब चचल हो उठी। उन्होने पूछा, "सुबह कौन-सा मन्तर दिया था मैंने? काटे मे फँसा कुछ?"

ऋषिबाबू उनके पास खिसककर फुसफुसाते हुए बताने लगे, "फसता भला कैसे नही? पर कीमत वाजिब देना।"

पाचूबाबू का चेहरा चमक उठा। दोनो के बीच न जाने क्या बात हुई। फिर ऋषिबाबू ने कमीज की जेब से कागज मे लिपटी कोई चीज निकालकर पाचूबाबू को पकडा दी। पाचूबाबू पाच रुपये का एक नोट उन्हे पकडाकर बोले, "पक्के जौहरी हो।"

अब पाचूबाबू ने मेरी तरफ देखा। बोले, "छेनो तो प्रसिद्ध गुण्डा है, उससे कुछ कहने की हिम्मत नही होती। रोज एक आने के हिसाब से फाइन वसूल कर रहा है। जब तक तुम्हारी नौकरी नही लगती, उस फाइन के रुपये—रोज की पाच चवन्नी तुमको देगा।" पाचबाबू कुछ रुके। फिर तीव्र घृणा से मुह टेढा

करके बोले, "तुम कैसे आदमी हो ?"

मैं चौक उठा। पाँचूबाबू गुर्रा उठे। "औरो से भीख लेते शम नही आती ? क्यो ? खुद ही तो कितनी जगह टाइप का एस्टीमेट देने जाते हो—काम का डौल नही बैठा सकते ? मद हो तुम ! पता है, दो फीड रोलरो की कीमत कितनी होनी है ?"

कुछ देर मे छेनो भैया लौट आये। सबसे एक आना फाइन लिया। फिर लौटते समय ओट मे बुलाकर फाइन के पैसे उन्होने मुझे दिये। घृणा से धूल मे मिल जाने को जी कर रहा था मेरा।

छेनो भैया बोले, "छि, कहानी लिखता है ना तू ? अब घर जा। कल सुबह-सुबह तैयार रहना। एक मशीन देखने चन्दननगर जाना है।"

अगले दिन हम हावडा से रेल मे सवार हुए। छेनो भैया मेरे आगे हर समय ही मानो छोटे बने रहते। म अच्छा लडका ठहरा। मेरे मुँह से भूल से भी कोई गन्दी बात नही निकलती। मैं तो परीक्षा हॉल मे वेईमानी करते हुए नही पकडा गया था। मैंन तो कभी किसी की कॉपी की तरफ भूल से भी नही देखा। न खुद बेईमानी की, न किसी और की वेईमानी मे मदद की।

छेनो भैया बोले, "दूकान पर उन सब बत्तमीज लोगो के साथ बैठने म तुझे तकलीफ होती है ना ?"

"नही"—मैने उत्तर दिया।

चन्दननगर मे हम एक विशाल मकान के सामने जा पहुँचे। मकान का मालिक जाना माना व्यवसायी था। उसी का घरेलू टाइपराइटर था।

सेठजी उस समय वनियाइन पहने हनुमानजी की तस्वीर

को माथा टेक रहे थे। सेठानी ने हमें बैठाया। नौकर हमारे सामने की मेज पर टाइपराइटर रख गया।

सेठजी ने आकर बताया, इस मशीन का सगुन बहुत अच्छा है। टूटे लोहा-लक्कड की मामूली दूकान मे शुरू करके आज जा वे मकान, गाडी और मिल के मालिक बन बैठे हैं, सब इस मशीन का ही प्रताप है।

छेनो भैया ने भी अनुभवी शिकारी की तरह मशीन को कुछ हिला-डुलाकर कहा, "बिल्कुल साक्षात लक्ष्मी मैया है। जरा सा रिपेयर करवा लेने पर एकदम नयी जैसा काम देगी। लक्ष्मी मैया और भगवती मैया की ही तरह मशीन भी सेवा से ही सन्तुष्ट होती है।"

बैग खोलकर मैंने औजार निकाले। छेनो भैया ने बडे एहतियात से धीरे-धीरे कैरेज खोलकर टेबल पर रखा। जानकार आँखो से वे इस धलभरी बूढी मशीन की बीमारी खोजने लगे। मैं भी एकाग्र होकर देख रहा था।

मशीन की ओर देखते हुए ही छेनो भैया बोले, "टेक डाउन।" पैड निकालकर एक कार्बन लगाकर मैं नोट करने लगा—'वन करेज स्ट्रैप वन एस्केपमेण्ट व्हील ।'

सेठजी बोले, "पुरानी मशीन को एकदम नया बनाना है।"

कालिख मने हाथो का गन्दे झाडन मे पोछते-पोछते छेनो भैया हिसाब लगाने लगे। मैं मशीन मे एक कागज लगाकर टाइप का नमूना लेने लगा। छेनो भैया ने कहा, "सेठजी, तीस रुपये लगेंगे।"

"तीस रुपये!" सेठजी ने ऐसी अनोखी बात सारी जिन्दगी मे कभी नही सुनी थी। इतना तो मोटरगाडी की मरम्मत मे भी नही लगता! सेठजी के सोना मढे दांत चमक उठे। सेठजी का ख्याल था, दो तीन रुपये खर्च करने पर खुद रेमिंगटन

कम्पनी ही इस मशीन को सुधार देगी।

क्रोध और अपमान से मेरे तन-बदन मे आग लग गयी। छेनो भैया का मुँह लाल हो उठा। हम दोनो का राहखर्च ही तो तीन रुपया था।

छेनो भैया बोले, "इतनी दूर से आये ह, तो फिर ऑयल ही कर जाते है। दो रुपये दे दीजिएगा।"

"बूद-भर तेल के लिए दो रुपये!" सेठजी उछल पडे। हम लोग व्योपार कर रहे हैं या डकैती?

छेनो भैया तब भी मेठजी का समझाने की कोशिश कर रह थे, इससे कम मे कोई ऑयल नही करेगा, पर बूढ तोते को पढाना इतना आसान नही है।

मुझे तब तक जोगे का गुस्सा आ गया था। जरा रुको, हम लोगो को इस तरह बेकार परेशान करने का इलाज करता हूँ। वे दोनो बात कर रह थे, तब तक कुछ तय करके म टाइप-राइटर पर झुक गया। दोनो हाथ काप रह थे, फिर भी । बस, दो मिनट लगे थे। और पल-भर की भी देर किये बिना मैंने छेनो भया से कहा, "ऐसा काम करने की जरूरत नही है हमें, चलिए लौट चले।"

छेनो भैया जैसा गँवार गुस्सैल आदमी मेरे कहते ही सेठजी को छोडकर चला आयेगा, यह मैंने सोचा भी नहीं था। कोई और समय होता तो शायद लडाई हो जाती। पर मशीन को खिसकाकर हम निकल आये। मेरे पाँव तब बेहद काँप रहे थे। हाथ भी मानो बस मे नही थे। ये मानो मेरे नहीं, किसी और के हाथ हो। किसी अदृश्य इजेक्शन से मानो इन हाथो को हिलाने की शक्ति भी जाती रही हो।

सडक पर आते ही छेनो भैया ने मेरे हाथ कसकर पकड लिये। फिर मेरी तरफ ऐसे देखा ना, उस नजर का वर्णन

करने की शक्ति मुझमे नही है। क्या था उन आखो मे ? मैं खुद ही नही जानता। पर मैं समझ गया कि उनकी आखो मे मैं धूल नही झोक पाया हूँ। मैं पकड़ा गया हू। वज्राहत होने पर भी छेनो भैया को इतना आश्चय न होता। किसी तरह से वे बोल पाये, "यह क्या किया तूने।"

हाथ पाव ही नही, मेरी सारी देह ही तब तक अवश हो आयी थी। लग रहा था, अभी सडक पर गिर पडूगा। बोला, "सिफ दो फीड रोलर खोल लिये हैं।"

छेनो भैया को मानो तब भी विश्वास नही हो रहा था। बोले, "और तू कविता लिखता है!"

हाय ईश्वर, यह क्या किया! गुस्से मे आकर सेठजी को सजा देने के लिए यह क्या दुर्बुद्धि आयी मुझे! धरती, तू फट जा। मेरा हृदय अभी, इसी समय धडकना वन्द क्यो नही कर देता? सारे सकोच से छुटकारा मिल जाता। डर लगा, छेनो भैया अभी अपने लोह-जैसे कठोर हाथो से मुझे एक थप्पड मारेगे। पर कहा? कुछ भी तो नही किया। उनका चेहरा भी एकदम फक् पड गया था। शायद अपने अनागत भविष्य की तस्वीर पल-भर के लिए दपण की झलक की तरह उनकी आखो मे कौध गयी थी।

छेनो भैया ने मेरे कान मे कहा, "वे लोग समझ गये हैं।" फिर मुझे एक तरह से जबरदस्ती पकडकर खीचते खीचते स्टेशन की ओर चल पडे।

पर उन्हे सच ही पता चल गया था। दो दरबान चिल्लाते हुए हमारी तरफ दौडे आ रहे थे। उस पल मेरी चेतना का मानो अचानक ही फ्यूज उड गया। कुछ याद नही कर पा रहा हूँ। सिफ इतना याद है कि छेना भैया ने चुराये हुए दोनो फीड रोलर अचानक ही मेरे हाथ से छीन लिये थे। शायद

मैंने रोका था। पर छेनो भैया बोले थे, "हम तो दागी हैं ही, हमारा कुछ नही बिगडेगा।" फीड रोलर अपनी जेब मे डालते हुए बोले थे, "नही तो तेरा रेकॉर्ड खराब हो जायेगा।"

उसके बाद क्या हुआ था, मुझे किसी भी तरह याद नही आता। दरवानो ने हम दोनों की गर्दन पकड ली थी। मेरी पीठ पर भी दो एक घूसे पडे थे। छेनो भैया की नाक से तर-तर खून बह रहा था। फिर भी छेनो भैया कह रहे थे, "उसे छोड दीजिए, उसका कोई कसूर नही है। चोरी मने की है।"

उन लोगो ने सच ही मुझे छोड दिया था। और छेनो भैया को थाने भेज दिया था।

मेरे पास एक पैसा भी नही था। बिना टिकट रेल मे चढ-कर घर आया। सारी रात रोता रहा। रोते-रोते जाने कब नींद आ गयी। सपने मे देखा, पुलिस मेरी कमर मे रस्सी बाँधे मुझे रूलर से पीट रही है। हजारेक लोगो की भीड घेरा डाले खडी है। सब चीख रहे हैं—'चोर, चोर!' और छेनो भैया कह रहे हैं, 'उसे छोड दीजिए। उसका कोई कसूर नही है। चोरी मैंने की है।'

चौंककर जाग उठा। पसीने से सारी देह तरबतर थी। यह क्या किया मैंने! यह क्या किया!

मैं नही जानता था कि भोर का उजाला भी पृथ्वी के मनुष्य के लिए इतना सकोच, इतनी लज्जा लेकर आ सकता है। लग रहा था मानो मैं बिलकुल नगा होकर चौराहे पर खडा हूँ। सभी मुझे देख रहे हैं। फिर चौंक उठा मैं। यह भी सपना था।

किसी को भी पता नही चला। मेरी जिन्दगी के उन अँधेरे पलो की बात किसी के आगे भी नही खुली। अखबार मे खबर छपी—'टाइपराइटर का पुर्जा चुराने के अपराध मे तीन महीने की कैद।' इस घृणित अपराध के लिए मजिस्ट्रेट ने अपने

फैसले में जो कडी बाते कही, उनका भी विस्तृत विवरण प्रकाशित हुआ।

कोई और होता तो शायद पागल हो जाता। शायद आत्महत्या कर लेता। पर मेरे जैसे कायर गदहे के लिए कुछ भी करना सम्भव नही है। बस, बीच बीच में जब भी मन के एकान्त मे चन्दननगर का दृश्य आखो के आगे तैर जाता, मैं अवश हो उठता।

कितने दिन रात की गहराइयो मे छिप-छिपकर रोया हूँ, और सोचा है, यह लज्जा कैसे छिपाऊँगा ? दुनिया के लोगो के आगे अब कैसे मुँह दिखाऊँगा ? पर देखा, लज्जा मेरी सचमुच ही छिप गयी है। कोई मुझे पहचान नही पाया।

तीन महीने बाद छेनो भैया जेल से लौट आये। मुझे समाचार मिला, पर उनसे मिलने की हिम्मत नही हुई। कोडारबागान के रास्ते से निकलना ही छोड दिया। उनके सामने खडे होने का साहस नही था मुझमे।

पर मेरे कारण छेनो भैया का यह हाल होगा, किसे पता था यह। उनका सबकुछ समाप्त हो गया। म्बैलो लेन के पाँचूबाबू ने छेनो मण्डल को अब बेच पर बैठने ही नही दिया। जेल से लौटे टाइपराइटर चोर से भला कौन मशीन सुधरवायेगा ?

उसके बाद ? उसके बाद शुरू हुआ निश्चित अध पतन का इतिहास। मेरा अपराध अपने ऊपर लेकर छेनो भैया ने अपने सर्वनाश को न्यौता दे दिया था। मेरे कलेजे मे मरोड सी उठती, पर उनसे मिलने का साहस नही होता।

फिर छेनो भैया चोर बन गये। अन्त मे जाकर डाकू।

और मेरी बात ? वह तो धीरे-धीरे सारी ही तुम लोगो के आगे रखूगा। मेरे जीवन के जोड बाकी-गुणा भाग तुम लोगो के लिए अनजाने नही रहेगे।

बीच की बाते भी हैं। वे सब बताऊँ, इसीलिए आज लिखने बैठा हूँ। बहुत सी अग्निपरीक्षाओ के बाद ससार के देवता ने एक दिन अपने क्षमा के सौन्दर्य से मण्डित नयनो से मेरे ऊपर दया की वर्षा की। सफलता की सीढियो पर मैं ऊँचा चढने लगा। पाठको के बीच अचानक ही मैं भावुक साहित्यकार के रूप मे पहचाना जाने लगा। मेरा रेकॉड भी तो शरत्कालीन आकाश जैसा निर्मल था। पृथ्वी पर कही भी, यहाँ तक कि चन्दननगर के पुलिस रजिस्टर मे भी मेरे बारे मे कुछ नही लिखा था।

दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा मुझे एक साहित्य-पुरस्कार देने की घोषणा के बाद ही यह घटना हुई थी। एक प्रसिद्ध मासिक पत्र के विशेष प्रतिनिधि उस दिन मुझसे मिलने आ रहे थे। उन्होने बतला रखा था, मेरे कुछ फोटो भी खीचगे।

मेरे पास तब भी कुछ समय था। इसीलिए मुहल्ले के हेयर कटिग सैलून मे जा पहुँचा। सैलून के मालिक उमापतिबाबू ने खातिर करते हुए तुरन्त कुर्सी आगे बढा दी। बोले, "इस गन्दे मुहल्ले मे आप अभी भी किरायेदार है। यही हम लोगो का सौभाग्य है। यहाँ रहकर भी दिन-रात कितने ऊँचे ऊँचे विचारो का चिन्तन करते ह यार। जिन्दगी-भर तो आप लिखने-पढने मे ही डूबे रह, और किसी भी तरफ आपने ध्यान ही नही दिया।"

इसी समय बाहर से जोरो का शोर सुनायी दिया—रामनाम, सत्त है। डढ रुपल्ली के बँस-खट मे चटाई से लिपटा एक मुर्दा

जा रहा था। ढोनेवाले फिर मस्ती से चिल्ला उठे—रामनाम, सत्त है।

साबुन का ब्रश मेरे गालों पर घिसते-घिसते उमापतिबाबू बोले, "तो खतम हुआ यह गुण्डा! बहुत दिन से बीमार चल रहा था! उमर ही क्या होगी इसकी! पर कहते हैं ना सर, जैसा करेगा, वैसा भरेगा। अरे, तू सही रास्ते पर रहता, तो अभी और भी कितने दिन जीता, और मरने पर भी लोग याद करते, अर्थी के पीछे दस लोग चलते, फूलों से सजायी जाती, मालाएँ आती। पर इस छेनो मण्डल जैसा होने पर तो ऐसे ही चटाई मे लिपटकर पॉकेटमार चोट्टो के कन्धो पर चढकर ही मसान जाना पडता है।'

मुझे चक्कर आने लगे थे। शायद उमापतिबाबू ने भी इस बदलाव को लक्ष्य किया। बोले, "छेनो की इस मामूली सी बात से ही आपका चेहरा नीला पड गया?"

उमापति ठठाकर हँस पडे। बोले, "इसीलिए तो कहते हैं, कलाकार का मन! आप लोग सभी को प्यार किये बिना नही रह सकते। सुना है, रविठाकुर भी तो ऐसे ही थे—गरीबो का दुख एकदम नही सह सकते थे। पर छेना के मरने से मुहल्ले की इज्जत बची सर। नहीं तो इसका नाम ही हो गया था गुण्डो का मुहल्ला। कोई विश्वास करना ही नही चाहता था कि आप जैसे लेखक भी यहा रहते है।"

कुछ रुककर उमापति बोले, "लेकिन सर, गुण्डा पक्का था! एक फेफडा तो झाझर हो गया था, फिर भी चोरी करता घूमता था। पुलिस से कितनी बार मार खायी होगी, पर अकल नही आयी। अरे अभी ही तो रविठाकुर के जनम दिन पर (तारीख मुझे याद ही नही रहती, न जाने बैसाख की कौन सी तारीख है) महाकाली विद्यालय की एक लडकी के गले से हार छीनने को

कोशिश की। एक बार सोचकर देखिए, कैसा अमानुष है। एक लडकी रविठाकुर का गीत गाने को स्कूल जा रही है, उसे भी नही छोडा। इस कोडारबागान की बदनामी की बात सोचकर तो शरम से हमारा सिर झुक जाता है।"

सधे हाथो से उस्तरा चलाते-चलाते उमापतिबाबू बोले, "सिर्फ चोरी, डकैती ही तो नही, सभी दोष थे। पर आप जसे आदमी के सामने वह सब मै मुँह पर भी नही ला सकूगा।"

मेरा शरीर तब जाने कैसा अवश सा हो पडा था। मैने कुछ भी नही पूछा। पर कुछ पूछने की राह देखे बगैर ही उमापतिबाबू बोले, "आखिरी बार तो चोरी करके जुए के अड्ड म जा छुपा था। पर पुलिस की आँखो मे धूल झोकना क्या इतना आसान है? उन्होने जाकर मकान पर घेरा डालकर निकाल लिया छेनो को। और क्या कहूँ, मेरी दूकान पर भी अक्सर ही आ धमकता था। दाढी बनवाता, बाल कटवाता। ऊपर से हुकुम चलाता—सिर दबाओ, स्नो लगाओ, बालो पर लाइमजूस लगाओ। एक घण्टे तक खटाकर चला जाता, पर एक दमडी भी नही थमाता। इस गुण्डो के मुहल्लो मे दूकान चला रहा हूँ इसलिए—और कोई जगह होती, तो दिखा देता उसे।"

मेरे चेहरे पर फिर एक बार साबुन लगाते-लगाते उमापतिबाबू बोले, "धरम की चक्की हवा भी चला देती है सर! रोग और पुलिस ने इसे एक साथ पकडा।"

बात करते जाने पर भी उनका हाथ नही रुक रहा था। मेरे चेहरे पर डेटॉल लगाते-लगाते बोले, "आप तो विवेकानन्द स्कूल मे पढे हैं—ना?"

मैने कहा, "हाँ।"

"इसी को कहते हैं प्रकृति की बहक। छेनो भैया भी तो इसी स्कूल मे पढा था। एक ही पेड पर आम भो फला और आमडा

भी।"

फिर वोले, "जनाव, मुहल्ले की वदनामी होती थी। हर रात सिपाही आकर छेना की खबर ले जाता था। हुकुम था, वह रात को घर से न निकल सके। ऊपर से हर हफ्ते थाने म हाजिरी देने जाना होता था।

'पर जनाव, रात को सिपाही जैसे ही लौटता, वैसे ही यह निकलकर चोरी कर आता।"

उमापतिवाबू ने बताया, "फिर टी० वी० का राग ले पट गया। पर तव भी छेनो की क्या ही मसखरी थी।

'गैस के खम्भो पर ठन् ठन लाठी ठोकता हुआ सिपाही आता। चीखकर पूछता, 'छेनुआ तुम घर मे है ?'

"छेनो दम साध चुपचाप लेटा रहता। तव सिपाहीजी गुस्से म चिल्लाते, 'छेनुआ, तुम क्या कर रहा ह ?'

"छेना तव वोलता, 'इधर ही तो है सिपाईजी। आपका मामा के साथ खाना बनाता है'।"

उमापतिवावू वोले, "ज़रा हिम्मत तो देखिए। पुलिस के साथ मसखरी। पुलिसवाले के मामा को लेकर दिल्लगी। आखिरी दिनो मे जरूर यह हँसी मसखरी सूख गयी थी। तव मुह से ढर ढेर खून आने लगा था। कितने ही निरीह लोगो का इसने सवनाश किया है।

"आखिर-आखिर मे तो जनाव, सिपाही के पुकारने पर भी छेनो जवाव नही द पाता था। आज सुवह भी जवाव न मिलने पर सिपाही ने सोचा, छेनुआ शायद फिर चोरी करन निकल गया है। घर मे घुसकर देखा, वदज़ात मरा पडा है।"

उमापतिवावू ने अव एक छोटा सा शीशा मेरे चेहरे के आगे करते हुए कहा, "इन कमीनो की वात छोडिए। अपना मुह अच्छी तरह से देख लीजिए।"

उस प्रसिद्ध मासिकपत्र के प्रतिनिधि यथासमय मेरे पास आये थे। इण्टरव्यू के बाद मेरी कुछ तस्वीरें भी ली थी उन लोगो ने। उठते समय मेरे पढ़ने के कमरे की दीवारो पर टग चार चित्रो पर उनकी नजर पड गयी। ये थे—रवीन्द्रनाथ, शरत्चन्द्र, तोल्सतॉय और डिकेंस।

विशेष प्रतिनिधि ने कहा, "एक प्रश्न पूछना भूल गया—साहित्यकार के रूप मे आप किसके ऋणी हैं? पर उत्तर देने की जरूरत नही—इन चारो की तस्वीर देखकर ही मुझे जवाब मिल गया है।"

मैंने उन्हे टोकने की कोशिश की थी, पर मेरे गले से आवाज ही नहीं निकली। शायद उसी समय मुझे चक्कर आ गये थे। जब होश आया, पत्र के प्रतिनिधि जा चुके थे।